● सीधी, सिंगरौली,मऊगंज, रीवा एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित ● website-https://vindhyatiger.in ● epaper-https://epaper.vindhyatiger.in ● वर्ष : 37, अंक 184, पृष्ठ : 08, सीधी, बुधवार , 13 अगस्त 2025 - मूल्य : 2.00 रुपया मात्र

दैनिक समाचार पत्र

विन्ध्य टाइगर

हक की बात, बुलंदी के साथ

माफिया-दंगाई कौन है, जनता जानती है : शिवपाल 5

विराट-कोहली ने गलत प्रारूप से सन्यास लिया :चौपड़ा 6

उद्योगों की मांग अनुसार कौशल विकास पाठ्यक्रम डिजाइन करें : राज्यपाल

संभाग स्तर पर स्थापित होंगे क्रिस्प संस्था के केन्द्र : मुख्यमंत्री

भोपाल। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि क्रिस्प प्रदेश के अलग-अलग क्षेत्रों के उद्योगों में रोजगार की मांग का आकलन कर उसके अनुसार कौशल विकास के कार्यक्रम डिजाइन करे। स्थानीय उद्योगों की मांग के अनुरूप स्थानीय विद्यार्थियों का कौशल विकास करें, जिससे उन्हें अपने क्षेत्र में ही रोज़गार प्राप्त हो सकें।

राज्यपाल श्री पटेल कुशाभाऊ ठाकरे सभागार में सेंटर फॉर रिसर्च एण्ड इंडस्ट्रियल स्टॉफ़ परफॉर्मेंस (क्रिस्प) के 29वें स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने क्रिस्प के 29 वें स्थापना दिवस के अवसर पर उपस्थितजनों को बधाई दी। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का क्रिस्प स्थापना दिवस बधाई वीडियो संदेश प्रदर्शित किया गया। उच्च शिक्षा, आयुष और तकनीकी शिक्षा मंत्री श्री इन्दर सिंह परमार भी उपस्थित रहे।

राज्यपाल श्री पटेल ने कार्यक्रम में सक्षम योजना के तहत महिला प्रशिक्षार्थियों और प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना के तहत प्रशिक्षण प्राप्त प्रशिक्षणार्थियों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए। उन्होंने प्रशिक्षणार्थियों द्वारा तैयार की गई प्रदर्शनी का अवलोकन कर सराहना भी की। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि संस्थान ने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना के तहत कौशल विकास के कार्यक्रमों से युवाओं को आत्मनिर्भरता की नई राह दिखाई है। यह प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के आत्मनिर्भर और विकसित भारत के निर्माण के संकल्प की दिशा में सराहनीय प्रयास है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि आज प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में हमारा देश, कौशल भारत और कुशल भारत के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है। उनकी विजनरी लीडरशिप में भारत आर्थिक महाशक्ति बन रहा है। भारत अब विश्व का तीसरा बड़ा स्टार्ट-अप ईको सिस्टम वाला देश है। प्रदेश सरकार भी युवाओं के कौशल विकास के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार के कार्यक्रमों ने विशेष कर बेटियों को भी आगे बढ़ने के अवसर दिए हैं। इसी का सुखद परिणाम है कि अब आई.आई.टी., एन.आई.टी., ट्रिपल आई.टी. जैसे संस्थानों के दाखिलों में बेटियों की भागीदारी बढ़ने लगी है।

राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि भारत में रोज़गार अवसरों को बढ़ाने के लिए फोरलेन मॉडल कारगर भूमिका निभा सकता है। इसमें विकेंद्रीकरण, स्वदेशी, उद्यमिता और सहकारिता शामिल हैं। ऐसा देखा गया है जब देश में सहकारिता आधारित उद्योग सक्रिय होते हैं तो देश में सामाजिक समरसता को भी गतिशीलता मिलती है। राज्यपाल श्री पटेल ने कहा कि आज भी भारत के युवाओं को सर्वाधिक रोज़गार देने वाला क्षेत्र कृषि है। लगभग 35 प्रतिशत युवा कृषि पर ही निर्भर है। भारत में लगभग 11 करोड़ लोगों ने लघु और कुटीर उद्योगों के माध्यम से स्वरोजगार को अपनाया है, जो रोज़गार के लगभग 20त्न से अधिक है। उन्होंने कहा कि संस्थान, प्रशिक्षण प्रयासों में स्किल डेवलपमेंट के साथ स्किल अपडेशन के नए कार्यक्रमों का आयोजन करें। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने क्रिस्प के 29वें स्थापना दिवस कार्यक्रम के लिए जारी वीडियो संदेश में कहा कि सेंटर फॉर रिसर्च एंड इंडस्ट्रियल स्टाफ परफॉर्मेंस (क्रिस्प) के केन्द्रों का विस्तार संभाग स्तर तक किया जाएगा। प्रदेश में औद्योगिक और निवेश गतिविधियों के विस्तार के परिणाम स्वरूप कुशल श्रमिकों की मांग लगातार बढ़ रही है।

अमेरिकी टैरिफ से न डरें, नए बाजार तलाशेंगे : शिवराज

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने मंगलवार को किसानों को आश्वस्त किया कि अमेरिका की तरफ से भारतीय कृषि उत्पादों पर बढ़ाए गए शुल्क से घबराने की जरूरत नहीं है। उन्होंने कहा कि भारत अपने विशाल घरेलू बाजार के साथ-साथ नए अंतरराष्ट्रीय बाजार भी तलाश करेगा, ताकि किसानों की उपज को उचित मूल्य मिल सके।

दिल्ली के पूसा कॉम्प्लेक्स में किसान नेताओं को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री ने कहा, किसान भाइयों, चिंता मत करो। थोड़ी कठिनाई जरूर आएगी, लेकिन हम देख लेंगे। भारत जैसे बड़े देश में ही सारी उपज खप सकती है। उन्होंने अमेरिका और यूरोप की जनसंख्या का उदाहरण देते हुए कहा कि अमेरिका की आबादी मात्र 30 करोड़ और यूरोप की 50 करोड़ है, जबकि भारत की 140 करोड़ की आबादी हमारी सबसे बड़ी ताकत है, कमजोरी नहीं।

मुख्यमंत्री ने केंद्रीय गृह मंत्री से नई दिल्ली में की सौजन्य भेंट

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने मंगलवार को संसद भवन, नई दिल्ली में केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह से सौजन्य भेंट की। इस दौरान मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने केंद्रीय मंत्री श्री शाह को प्रदेश में नए आपराधिक कानून लागू करने और सहकारिता के क्षेत्र में किए गए नवाचारों से अवगत कराया। मुख्यमंत्री ने बताया कि राज्य सरकार का प्रयास है कि प्रदेश दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में देश की राजधानी बने। उन्होंने कहा कि दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में देश में प्रदेश की हिस्सेदारी, जो अभी 9 प्रतिशत है, उसको बढ़ाकर 25त्न करने का लक्ष्य रखा गया है। नए कानून लागू करने में मध्य प्रदेश अग्रणी राज्य बन गया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में चल रहे नवाचारों के माध्यम से सुशासन के क्षेत्र में कीर्तिमान स्थापित किए जाएंगे। उन्होंने केंद्रीय गृह और सहकारिता मंत्री श्री शाह से मिल रहे मार्गदर्शन और सहयोग के लिये आभार माना।

महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये देगी भाजपा-जदयू

लाड़ली बहना की तर्ज पर होगा योजना का नाम

नई दिल्ली। महिलाओं को नकद आर्थिक सहायता देने की योजना भाजपा के लिए वरदान साबित हुई है। इस तरह की योजनाओं की सहायता से भाजपा ने मध्य प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र, हरियाणा और दिल्ली सहित कई राज्यों में सरकार बनाने में सफलता हासिल की है। अब यही स्कीम बिहार में भी आजमाने की तैयारी है। भाजपा-जेडीयू सरकार जल्द ही बिहार में महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये देने की घोषणा कर सकती है। बिहार विधानसभा चुनाव की अधिसूचना जारी होने से पहले महिलाओं के खाते में योजना की

पहली किस्त पहुंचाकर बिहार सरकार महिलाओं को पूरी तरह अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश कर सकती है। इस योजना का नाम क्या हो सकता है, इस पर अभी विचार-विमर्श हो रहा है। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ही इस योजना के नाम पर अंतिम मुहर लगाएंगे। कांग्रेस पहले ही बिहार में चुनाव जीतने पर माई बहिन मान योजना के अंतर्गत महिलाओं को हर महीने 2500 रुपये देने की घोषणा कर चुकी है। बिहार में 3.50 करोड़ महिला मतदाता हैं। पुरुषों की तुलना में महिलाएं अधिक बढ़ चढ़कर वोट करती हैं। शराब बंदी योजना लागू करने के बाद महिलाएं पूरी तरह से नीतीश कुमार के साथ एकजुट होकर खड़ी हो गई हैं। इसके अलावा पंचायतों में 50 फीसदी का महिला आरक्षण देकर, छात्राओं को साइकिल देकर और जीविका कैंटीन के सहारे महिलाओं के सेल्फ हेल्प ग्रुप बनाकर उनका आर्थिक सशक्तीकरण करके नीतीश कुमार ने महिलाओं को अपने साथ कर लिया है।

मोदी सरकार की सौगात, पुराने लखनऊ में भी चलेगी मेट्रो ट्रेन

लखनऊ। केंद्र की मोदी सरकार ने लखनऊ शहर को बड़ी सौगात दी है। अब पुराने लखनऊ में भी मेट्रो ट्रेन चलेगी। केंद्र सरकार ने कैबिनेट बैठक में 5,801 करोड़ रुपये की लागत से बनने वाले लखनऊ मेट्रो के फेज वन बी परियोजना को मंजूरी दे दी है। पुराने लखनऊ का मेट्रो रूट 11 किलोमीटर लंबा होगा और और इस रूट में अमीनाबाद ,चौक , यहियागंज, पांडेयगंज, केजीएमयू, इमामबाड़ा और रूमी गेट स्टेशन होंगे।

भारत-सिंगापुर के संबंध होंगे मजबूत

दोनों देशों के मंत्रियों की बैठक में होंगे 10 समझौते

नई दिल्ली। भारत और सिंगापुर के संबंध अब और मजबूत होंगे। इस सप्ताह दोनों देशों के मंत्री द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए अहम बैठक करेंगे। इसमें बेहतर तकनीक, संपर्क, कौशल और डिजिटलीकरण समेत तमाम क्षेत्रों में 10 समझौतों पर मुहर लगेगी। नई दिल्ली में 13 अगस्त को होने वाली भारत-सिंगापुर मंत्रिस्तरीय गोलमेज (आईएसएमआर) की तीसरी बैठक में दोनों देशों के मंत्री अहम चर्चा करेंगे। बैठक के दौरान भारत से सिंगापुर तक सौर ऊर्जा पहुंचाने के लिए समुद्र के नीचे केबल बिछाने का प्रस्ताव पास हो सकता है। इसके अलावा भारत से सिंगापुर को हरित अमोनिया और हरित हाइड्रोजन का निर्यात के प्रस्ताव को भी पारित किया जा सकता है।

यह बैठक सिंगापुर के प्रधानमंत्री लॉरेंस वोंग की अगले महीने संभावित भारत यात्रा से पहले हो रही है। बैठक में विदेश मंत्री एस जयशंकर, वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री अश्विनी वैष्णव सिंगापुर के छह मंत्रियों के साथ आईएसएमआर ढांचे के तहत वार्ता करेंगे। सूत्र बताते हैं कि बैठक में दोनों पक्ष पानी के नीचे बिछाई गई केबल के माध्यम से भारत से सिंगापुर तक सौर ऊर्जा के निर्यात की संभावना पर विचार कर रहे हैं। इसका उपयोग डाटा कनेक्टिविटी के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि अंडमान ट्रेंच को देखते हुए केबल बिछाने में कुछ चुनौतियां हैं। इस प्रस्ताव के तहत दोनों पक्षों ने गुजरात के गिफ्ट सिटी में वित्तीय डाटा नियामक सैंडबॉक्स बनाया है। आईएसएमआर में दोनों पक्षों विमानन, अर्धचालक और उन्नत विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में कौशल विकास पर चर्चा कर सकते हैं। दोनों देशों की योजना का उद्देश्य प्रति वर्ष लगभग 1,00,000 भारतीयों को कौशल विकास प्रशिक्षण प्रदान करना है।

बिना अनुमति सेल्फी लेने पर भड़कीं जया बच्चन

नई दिल्ली। संसद भवन परिसर में एक बार फिर समाजवादी पार्टी की सांसद जया बच्चन उस वक्त भड़क गईं जब एक व्यक्ति ने बिना उनकी अनुमति के उनके साथ सेल्फी लेने की कोशिश की। इस दौरान जया बच्चन ने शख्स को फटकार लगाई और डांटते हुए धक्का देकर दूर कर दिया। बता दें कि यह पहली घटना नहीं है, जब सपा सांसद किसी शख्स पर भड़कीं हों। इस दौरान जया बच्चन के साथ शिवसेना यूबीटी सांसद प्रियंका चतुर्वेदी और राष्ट्रीय जनता दल की सांसद मीसा भारती भी मौजूद थीं। जया बच्चन की तरफ से फटकार लगाए जाने के बाद शख्स वहां से थोड़ा पीछे हट गया, वहीं इस मौके पर आरजेडी सांसद मीसा भारती ने भी उसके व्यवहार को लेकर नाराज दिखीं।

ओवैसी ने आसिम मुनीर को सुनाई खरी-खोटी

नई दिल्ली। एआईएमआईएम अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने मंगलवार को पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर की अमेरिका की धरती से भारत के खिलाफ ताजा परमाणु धमकी की निंदा की। उन्होंने कहा कि मोदी सरकार को इस पर राजनीतिक प्रतिक्रिया देनी चाहिए। औवेसी ने संसद के बाहर पत्रकारों से बात करते हुए और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर मामले को लेकर तल्ख प्रतिक्रिया दी। पाकिस्तान के सेना प्रमुख असीम मुनीर की परमाणु धमकी पर एआईएमआईएम सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने कहा, पाकिस्तान के सेना प्रमुख के शब्द और उनकी धमकियां निंदनीय हैं। दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि यह अमेरिका की ओर से हो रहा है, जो भारत का रणनीतिक साझेदार है। वह एक सड़कछाप आदमी की तरह बोल रहे हैं। हमें यह भी समझने की जरूरत है कि पाकिस्तानी सेना और उनके डीप स्टेट से लगातार खतरे को देखते हुए हमें अपना रक्षा बजट बढ़ाना होगा, ताकि हम तैयार रह सकें।

चुनाव आयोग ने पश्चिम बंगाल के मुख्य सचिव को किया तलब

13 अगस्त तक दिल्ली पहुंचने का आदेश

नई दिल्ली। पश्चिम बंगाल में अगले साल विधानसभा के चुनाव होने है। इसके लिए राज्यभर की राजनीति में सियासी गर्माहट तेज है। हालांकि इस गर्माहट का बड़ा कारण चुनाव आयोग और बंगाल सरकार के बीच जारी तनातनी भी है। वहीं इस तनातनी ने तूल तब पकड़ ली जब मंगलवार को चुनाव आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव मनोज पंत को मतदाता सूची संशोधन में कथित अनियमितताओं के आरोपी अधिकारियों को न हटाने के फैसले पर स्पष्टीकरण देने के लिए दिल्ली तलब किया।

बता दें कि मामले में इससे पहले पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा चुनाव आयोग को लिखे गए पत्र में कहा गया था कि मतदाता सूची संशोधन में कथित अनियमितताओं के आरोपी अधिकारियों को अभी निलंबित करने का उनका कोई इरादा नहीं है।

मामले में मंगलवार को चुनाव आयोग ने राज्य के मुख्य सचिव मनोज पंत को 13 अगस्त शाम 5 बजे तक दिल्ली स्थित निर्वाचन सदन में व्यक्तिगत रूप से पेश होने का आदेश दिया है। देखा जाए तो यह कदम उस पत्र के बाद उठाया गया है, जिसमें राज्य सरकार ने चुनाव आयोग को बताया था कि वह अभी उन अधिकारियों को निलंबित नहीं करेगी जिन पर मतदाता सूची में गड़बड़ी के आरोप हैं। इसको लेकर आयोग ने पहले पांच अधिकारियों की पहचान कर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने और निलंबन की सिफारिश की थी।

दिल्ली-एनसीआर में 10-15 साल पुराने वाहनों को फिलहाल राहत

सुप्रीम कोर्ट ने कहा- सख्ती न करें

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने मंगलवार को दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एनसीआर) में डीजल के 10 साल पुराने और पेट्रोल के 15 साल पुराने वाहनों के मालिकों को फिलहाल बड़ी राहत दी है। शीर्ष कोर्ट ने कहा कि ऐसे वाहनों के मालिकों पर फिलहाल कोई सख्त कार्रवाई नहीं की जाएगी। चीफ जस्टिस (सीजेआई) बी.आर.गवई, जस्टिस के. विनोद चंद्रन और जस्टिस एन.वी. अंजारिया की बेंच ने यह आदेश दिया। यह फैसला तब आया, जब दिल्ली सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल (एसजी) तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट से आग्रह किया कि ऐसे वाहनों के मालिकों पर जबरदस्ती कोई कार्रवाई न की जाए। शीर्ष कोर्ट ने कहा, नोटिस जारी किया जाए। चार हफ्तों में जवाब मांग गया है। इस बीच, हम निर्देश देते हैं कि डीजल के 10 साल पुराने और पेट्रोल के 15 साल पुराने वाहनों के मालिकों के खिलाफ कोई सख्ती न की जाए।

खुदरा महंगाई 2017 के बाद सबसे कम, जुलाई में सीपीआई मुद्रास्फीति दर खिसककर 1.55 फीसदी पर पहुंची

नई दिल्ली। जुलाई में खुदरा महंगाई दर घटकर 1.55 प्रतिशत पर आ गई। यह जून 2017 के बाद सबसे कम है। सरकार की ओर से जारी आंकड़ों में इसकी पुष्टि हुई है। सरकार ने मंगलवार को खुदरा महंगाई के आंकड़े जारी किए। जुलाई में खुदरा मुद्रास्फीति घटकर आठ साल के निचले स्तर 1.55 प्रतिशत पर आ गई। इसका मुख्य कारण सब्जियों और अनाजों सहित खाद्य वस्तुओं की कीमतों में नरमी है। सरकार ने मंगलवार को खुदरा महंगाई से जुड़े आंकड़े जारी किए। उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) आधारित मुद्रास्फीति जून में 2.1 प्रतिशत और जुलाई 2024 में 3.6 प्रतिशत थी।

प्रदेश के 11 जिलों में आज भारी बारिश का अलर्ट

भोपाल। मध्य प्रदेश के जिले में बारिश का दौर चल रहा है। मंगलवार को प्रदेश के करीब 11 जिलों में भारी बारिश का अलर्ट जारी किया गया। इन जिलों में 24 घंटे के भीतर साढ़े चार इंच तक बारिश होने का अनुमान है। मौसम विभाग के अनुसार 13 अगस्त से बंगाल की खाड़ी से लो प्रेशर एरिया एक्टिव हो रहा है। जिसका असर भोपाल, इंदौर और उज्जैन संभाग में भी दिखाई देगा।

मौसम विभाग ने अगले 24 घंटे के दौरान छतरपुर, सतना, पन्ना, रीवा, मैहर, दमोह, कटनी, जबलपुर, सिवनी, मंडला और बालाघाट में भारी बारिश होने की संभावना जताई है। 13 अगस्त को दक्षिणी हिस्से के जिलों में बारिश के आसार हैं। वहीं, 14 अगस्त को भोपाल, नर्मदापुरम, उज्जैन, इंदौर और जबलपुर संभाग के जिलों में तेज बारिश होने का अनुमान है। सोमवार को कहीं तेज तो कहीं हल्की बारिश का दौर जारी रहा। छतरपुर जिले के नौगांव में 2.3 इंच बारिश हो गई। दतिया, ग्वालियर, पचमढ़ी, दमोह, खजुराहो, सतना, सिवनी समेत कई जिलों में हल्की बारिश दर्ज की गई।

मौसम विभाग की सीनियर वैज्ञानिक डॉ. दिव्या ई. सुरेंद्रन ने बताया कि एक ट्रफ और दो साइक्लोनिक सर्कुलेशन सिस्टम की एक्टिविटी है। इस वजह से प्रदेश में बारिश हो रही है। 13 अगस्त से एक लो प्रेशर एरिया भी एक्टिव हो रहा है।

लोकसभा में भारतीय पत्तन विधेयक पारित

विशेषज्ञ समिति ने कहा- देश में मलेरिया के टीके की जरूरत नहीं

नई दिल्ली। लोकसभा में सोमवार को भारतीय पत्तन विधेयक, 2025 पारित कर दिया गया। यह विधेयक ऐसे समय में पारित हुआ, जब विपक्ष बिहार में मतदाता सूची से जुड़े मुद्दे पर हंगामा कर रहा था। विधेयक को निचले सदन में ध्वनि मत से पारित किया गया, जबकि विपक्षी सांसद नारेबाजी करते रहे। विधेयक पारित होने के बाद लोकसभा की कार्यवाही शाम साढ़े चार बजे तक स्थगित कर दी गई।

यह विधेयक भारत के बंदरगाहों से जुड़े कानूनों को एक साथ जोड़ने, बंदरगाह के विकास को सुव्यवस्थित करने, व्यापार करने में आसानी बढ़ाने और देश के समुद्री तटों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करने के मकसद से लाया गया है। इस विधेयक में प्रमुख बंदरगाहों के अलावा अन्य बंदरगाहों के लिए राज्य समुद्री बोर्ड बनाने का प्रावधान है। साथ ही, बंदरगाह क्षेत्र के विकास के लिए समुद्रीय राज्य विकास परिषद बनाने का भी प्रावधान है। विधेयक में यह भी प्रावधान है कि बंदरगाहों पर प्रदूषण, आपदा, आपात स्थिति, सुरक्षा, नेविगेशन और डाटा प्रबंधन को लेकर बेहतर व्यवस्था की जाए। इसके अलावा, भारत की अंतरराष्ट्रीय जिम्मेदारियों का पालन, बंदरगाहों का संरक्षण और बंदरगाहों से जुड़े विवादों के समाधान के लिए विवाद निवारण तंत्र भी बनाने का भी प्रावधान है। एक विशेषज्ञ समिति ने सिफारिश की है कि भारत में मलेरिया के टीके की जरूरत नहीं है। ये टीके उन जगहों के लिए बनाए गए हैं, जहां मलेरिया का संक्रमण मध्यम स्तर से अधिक होता है और बच्चों की मौत का खतरा ज्यादा होती है। सरकार की ओर से मंगलवार को राज्यसभा को यह जानकारी दी गई। केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री अनुप्रिया पटेल ने यह जानकारी एक सवाल के लिखित जवाब में दी। उनसे पूछा गया था कि क्या भारत का पहला मलेरिया टीका आर21/मैट्रिक्स-एम ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय और भारत के सीरम इंस्टीट्यूट ने मिलकर तैयार किया है और क्या इसे भारत में इस्तेमाल की मंजूरी मिल गई है। मंत्री ने कहा, भारत में मलेरिया के टीके के इस्तेमाल को एक विशेषज्ञ समिति गठित की गई थी, जिसने सिफारिश की है कि भारत उन मापदंडों में नहीं आता, जहां इस टीके की जरूरत हो, क्योंकि यह टीका उन क्षेत्रों के लिए बनाया गया है, जहां मलेरिया का संक्रमण ज्यादा होता है और बच्चों की मौत का खतरा रहता है।

फार्मास्युटिकल्स (दवाइयों) और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे क्षेत्रों में भारत से अमेरिका भेजे जाने वाले सामानों पर अब तक कोई अतिरिक्त शुल्क (टैरिफ) नहीं लगाया गया है। भारत से अमेरिका को निर्यात किए जाने वाले कुछ उत्पादों पर 25 फीसदी जवाबी टैरिफ सात अगस्त से लागू हुआ है।

वाणिज्य और उद्योग राज्य मंत्री जितिन प्रसाद ने एक सवाल के लिखित जवाब में यह जानकारी दी। मंत्री जितिन प्रसाद ने बताया कि भारत के कुल माल निर्यात के करीब 55 फीसदी मूल्य वाले उत्पाद इस जवाबी टैरिफ के दायरे में आ सकते हैं। इसके अलावा, 27 अगस्त से कुछ अन्य उत्पादों पर 25 फीसदी अतिरिक्त टैरिफ लगाया जाएगा।

गोंड़ बहेरा उज्जैनी ईस्ट भूमिगत खदान की पर्यावरण स्वीकृति के लिए हुई सफल लोक सुनवाई

स्थानीय ग्रामीणों ने दोनों हाथ उठाकर परियोजना के पक्ष में दिया खुलकर समर्थन

सिंगरौली। जिले के बरगवां तहसील अन्तर्गत प्रस्तावित गोंड़बहेरा उज्जैनी ईस्ट कोयला खदान के लिए आज दिन मंगलवार को मझौली गांव में पर्यावरणीय मंजूरी के लिए आयोजित लोक सुनवाई सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम में भूमिगत खदान से प्रभावित होनेवाले सभी चार गांवों के लगभग 2000 स्थानीय ग्रामीण उपस्थित थे, जिन्होंने प्रोजेक्ट का खुलकर समर्थन किया। जिला के संयुक्त कलेक्टर संजीव कुमार पाण्डेय एवं म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, सिंगरौली के क्षेत्रीय अधिकारी संजीव मेहरा की उपस्थिति में जनसुनवाई सम्पन्न हुई।

इस दौरान सरकार के प्रतिनिधियों के द्वारा स्थानीय जनता की समस्याओं और सुझावों को ध्यान से सुना गया। इस प्रोजेक्ट के आसपास के गांवों

के लोगों ने पर्यावरण पर होनेवाली संभावित असरों के साथ-साथ स्थानीय लोगों के सामाजिक और आर्थिक विकास के बारे में अपने विचार रखे। प्रशासन की तरफ से देवसर के एसडीएम अखिलेश सिंह, चितरंगी के सब डिविजनल ऑफिसर ऑफ पुलिस राहुल सैयाम, देवसर की सब डिविजनल ऑफिसर ऑफ पुलिस गायत्री तिवारी, बरगवां के थाना प्रभारी मो. समीर, सरई के थाना प्रभारी जितेन्द्र सिंह भदौरिया एवं कई पुलिस अधिकारी मौजूद रहे। इस परियोजना के चालू होने से भौतिक अवसंरचना सुधार के साथ-साथ सामाजिक गतिविधियों में सुधार, सामाजिक कल्याण के उपायों में जन स्वास्थ्य प्रबंधन, शिक्षा प्रबंधन, पर्यावरण की बेहतरी, बुनियादी ढांचे का विकास, सतत आजीविका, व्यावसायिक प्रशिक्षण केंद्र एवं किसान विकास कार्यक्रम जैसे विभिन्न पहलूओं पर विशेष धयान दिया जाएगा।

दुकान में दबंगों ने ताला लगाकर किया कब्जा

सिंगरौली। कोतवाली थाना क्षेत्र के सिद्धिकला गांव निवासी पवन कुमार बैस ने कलेक्टर को आवेदन देते हुये बताया है कि दुकान पर जबरन ताला लगाकर कब्जा किया गया है और बिजली कनेक्शन काट दिया गया है। दबंग व्यक्तियों के विरूद्ध कार्रवाई नही की गई। ऐसे में पीड़ित ने कलेक्टर से फरियाद करते हुये न्याय की गुहार लगाई है।

जनसुनवाई में कलेक्टर को दिये शिकायती पत्र में बताया है कि विगत 15 वर्षो से सिद्धिकला में सरकारी भूमि पर किराये की दुकान संचालित कर रहा हूँ। जिससे मेरे परिवार का भरण-पोषण हो रहा है। लेकिन बीते 25 मार्च को पड़ोसी सीतासरण बैस के द्वारा जबरन दुकान में ताला लगाकर बिल्डिंग कर दी गई। इसके साथ ही बिजली का कनेक्शन काट दिया गया है। दुकान के अंदर एटीएम कार्ड, क्रेडिट कार्ड, बैंक पासबुक सहित जरूरी दस्तावेज रखा हुआ है, लेकिन जबरन नेताओं का संरक्षण पाकर दुकान का ताला नही खोल रहा है और परेशान किया जा रहा है।

मासूम बेटा के हत्या के आरोपी मॉ-पिता को आजीवन कारावास

सिंगरौली। सरई थाना क्षेत्र के निवास ग्राम के एक दम्पत्ति को तृतीय अपर सत्र न्यायाधीश देवसर विजय कुमार सोनकर के द्वारा आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई है। साथ ही आरोपियों पर पॉच-पॉच हजार रूपये का अर्थदण्ड भी लगाया गया है। परिवादी की ओर से अपर लोक अभियोजक मारकण्डेय मणि त्रिपाठी ने पैरवी किया था। अपर लोक अभियोजक ने बताया कि 28 मार्च 2019 को थाना सरई में मृतक अबोध बालक अभि साहू 5 माह की मॉ फरियादी एवं राधा देवी पति रविकुमार साहू उम्र 18 वर्ष ने अपने पति के साथ निवास पुलिस चौकी पहुंच सूचना दर्ज कराई थी कि मैं करीब शाम 4 बजे घर के सामने राई पीट रही थी। पति घर के अंदर में सो रहे थे और बेटा अभि दूसरे कमरे में चारपाई पर सो रहा था। इसी दौरान राधा ने बताया कि अचानक चक्कर आने से मैं बेहोस हो गई और जब होश आया तो देखा कि बच्चा चारपाई पर नही है। तलाश करने के बाद कुआं में बच्चे को तैरते हुये देखा गया, हल्ला गुहार करने पर पति दौड़कर आया और कुएं से बाहर निकालकर निवास अस्पताल ले गये, जहां चिकित्सको ने अभि को मृत घोषित कर दिया। सूचना पर पुलिस मर्ग कायम करते हुये जांच पड़ताल शुरू दी और पुलिस ने इस बिन्दु पर विवेचना करने लगी कि 5 महीने का अबोध बालक न तो करवट ले सकता है और न ही चल फिर सकता है। ऐसे में खुद से कुएं में गिरने का सवाल ही नही उठता है। साथ ही सेम्पल भी जांच के लिए भेजा गया था। पुलिस ने इसी आधार पर मामले की विवेचना आगे बढ़ाई। जहां चौकाने वाले तथ्य सामने आने लगे। पुलिस को विवेचना के दौरान जानकारी मिली कि पति-पत्नी में अनबन था और आरोप था कि अभि रवि का बेटा नही है, किसी और का है। जहां सुनियोजित तरीके से मृतक अबोध बालक अभि को उसी के मॉ-बाप राधा एवं रवि ने हत्या कर कुएं में फेंक दिया और उस घटना को दूसरी तरफ मोड़ दिया था, ताकि किसी की शक हत्या पर ना जाये। पुलिस ने 7 जून 2021 को न्यायालय में अभियोग पत्र प्रस्तुत किया। जहां न्यायालय के द्वारा साक्ष्य प्रारभ किये गये। पुलिस के गहन विवेचना एवं साक्ष्यों के आधा पर अपर सत्र न्यायाधीश देवसर के द्वारा आरोपी पति-पत्नी राधा एवं रवि साहू को अबोध बालक के हत्या के आरोप में आजीवन कारावास एवं पॉच-पॉच एवं ढाई-ढाई हजार रूपये का अर्थदण्ड का सजा सुनाया गया।

पिपरी पंचायत की जांच कराने कलेक्टर से की गई मांग

सिंगरौली। जनपद पंचायत बैढ़न के ग्राम पंचायत के पिपरी में वर्ष 2020 से लेकर 2025 तक हुये निर्माण कार्यों की जांच कराने कलेक्टर से की गई। ग्राम पंचायत पिपरी के समस्त पंच एवं उप सरपंच ने कलेक्टर को जन सुनवाई में आवेदन देते हुये कहा कि वर्ष 2020 से लेकर 2025 तक जो निर्माण हुआ है, उसमें सरपंच एवं सचिव के साथ रोजगार सहायक से जानकारी मांगी गई तो कोई जानकारी नही दी गई। इनके कार्य से आमजनता संतुष्ट नही है। ग्राम सभा की बैठक आज दिनांक तक नही हुई है और पंचायत में किसी भी प्रकार के कार्य की जानकारी जनता तक नही पहुंचाई जाती, इसके अलावा जनपद पंचायत के फण्ड से शासकीय हाई स्कूल में बाउण्ड्री गेट व पंचायत भवन शौचालय में कोई भी आतरिक कार्य नही हुआ एवं दिखावा किया गया है, जिसकी विधिवत जांच कराई जाये।

बैरा सिटी ट्रांसपोर्ट के आधा सैकड़ा चालको ने विधायक व अध्यक्ष को घेरा

विधायक ने तत्काल सुपरवाईजर को लंबित भुगतान करने को कहा, हड़ताल स्थगित

सिंगरौली। गजराबहरा में कोल परिवहन करने वाले बैरा सिटी ट्रांसपोर्ट के आधा सैकड़ा चालको ने आज बकाया वेतन भुगतान को लेकर हड़ताल शुरू कर दिये। इस बीच तिरंगा यात्रा कार्यक्रम में शामिल होने जा रहे बीजेपी जिलाध्यक्ष सुन्दर शाह, विधायक देवसर राजेन्द्र मेश्राम को चालको ने गजराबहरा में घेर लिया। विधायक राजेन्द्र मेश्राम ने बैरा सिटी के चालको से जानकारी देते हुये तत्काल उक्त ट्रांसपोर्ट के सुपरवाईजर से बातचीत की और विधायक ने कड़े निर्देश देते हुये कहा कि तत्काल वाहन चालको के लंबित भुगतान कर अवगत कराया। विधायक इस पहल के बाद हड़ताल में गये वाहन चालक वापस आते हुये कामकाज शुरू कर दिये। विधायक ने कहा कि उक्त वाहन चालको की समस्याओं का त्वरित समाधान कराना हमारी प्राथमिकता रही।

पटवारी पर 25 व तहसीलदार पर 50 हजार रिश्वत लेने का आरोप

जन सुनवाई में कलेक्टर से पीड़ित पक्ष ने किया लिखित शिकायत, कलेक्टर ने एसडीएम को दिया जांच के निर्देश

सिंगरौली

जिले के बरगवां थाना क्षेत्र के तहसील दुधमनिया कसर निवासी एक पीड़ित किसान ने कलेक्टर के जनसुनवाई में पहुंच कर फरियाद करते हुये कहा कि पटवारी ने 25 हजार रूपये और तहसीलदार ने 50 हजार रूपये रिश्वत लेने का सनसनीखेज आरोप लगाते हुये राजस्व महकमे में हड़कंप मचा दिया है। वही कलेक्टर ने एसडीएम को जांच करने के लिए निर्देशित किया।

कसर निवासी सकुंतला नाई पिता बंशीलाल नाई ने कलेक्टर को दिये आवेदन में बताया है कि मेरी आराजी खसरा क्रमांक 56/1 ग्राम रामगढ़ बस्ताली की जमीन का पटवारी 25 हजार रूपये तथा 50 हजार रूपये तहसीलदार ने रिश्वत लिया है। पीड़िता ने अपने आवेदन में बताया है कि रिश्वत लेने के बाद भी जमीन को दर्ज नही किया गया, अब पैसा वापस मांग करने पर पैसा नही दे रहे हैं। पीड़िता ने कलेक्टर से पौसा वापस कराये जाने की मांग की है। वही थाना बरगवां के ही जोवगढ़ निवासी जगदीश प्रसाद मिश्रा ने कलेक्टर को दिये आवेदन पत्र में बताया है कि मेरे भाई राधाकृष्ण मिश्रा, बलराम मिश्रा व उनकी पत्नी प्रभा मिश्रा के द्वारा हमारे ऊपर भूत-प्रेत का आरोप लगाते हैं और आये दिन गाली-गलौज करते हैं और घर से भगाने की धमकी देते रहते हैं। दोनों भाई नशेड़ी हैं, कभी भी हमारे ऊपर जानलेवा हमला कर सकते हैं। वही इनका साथी कृष्णाराम गुर्जर शराब के नशे में इन लोगों का साथ देता है और धमकी देता है कि थाना कोट में बंध करवा देंगे। हमारे साथ अमानवीय व्यवहार किया जा रहा है।

भवरखोंह में हुआ घटिया पुलिया निर्माण, कलेक्टर से फरियाद

कलेक्टर की जनसुनवाई में जनपद पंचायत बैढ़न के भवरखोंह निवासी राजकुमार बसोर, महेन्द्र बसोर, पप्पू बसोर, गुजरतिया बसोर सहित तकरीबन एक दर्जन ग्रामीण पहुंचे थे। जहां कलेक्टर को आवेदन देते हुये कहा कि भवरखोंह के हटका बसोर बस्ती में सरपंच पति द्वारा विधायक निधी से पुलिया का निर्माण कराया गया था। जहां न तो लागत का बोर्ड लगा है और न ही किस मद से काम हुआ है, उसका लगा है। पुलिया निर्माण रात में जेसीबी मशीन लगाकर खुदाई कराई गई। जिस स्थान पर पुलिया का निर्माण होना चाहिए, वहां पुलिया का निर्माण कार्य नही कराया गया। निर्माण कार्य में सिमेंट की मात्रा बहुत कम और भस्सी का उपयोग किया गया। पुलिया पट्टे की जमीन पर बनाया गया है। जबकि वहां न कोई नाला और न ही रोड है। ऐसे निर्माण कार्य कि जांच कराई जाये।

मटिया मार्ग की कच्ची सड़क कीचड़ में सराबोर

देवसर जनपद पंचायत क्षेत्र के ग्राम पंचायत गन्नई का मामला

सिंगरौली। देवसर जनपद पंचायत क्षेत्र के ग्राम पंचायत गन्नई अंतर्गत आंगनवाड़ी केन्द्र क्रामंक 6 मटिया कच्ची सड़क मार्ग कीचड़ में जहां तब्दील है, वही बरिया नाला पुल के अभाव में स्कूली बच्चे भी नाले के पानी को पार कर जाने के लिए मजबूर हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम पंचायत के सरपंच व सचिव के उदासीनता का खामियाजा ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है।

जानकारी के अनुसार ग्राम पंचायत गन्नई के मटिया टोला के दलदल सड़क मार्ग रोजाना सैकड़ों लोगों का आना-जाना है। वही नाले में पुलिया न बनने से स्कूली बच्चों को बड़े मुश्किल से पानी होकर आना जाना पड़ रहा है। यह समस्या आज से नही वर्षो से है। आरोप है कि ग्राम पंचायत के सरपंच के उदासीनता के चलते सड़क का न तो मुरमीकरण हो सका है और न ही डब्ल्यूबीएम का कार्य कराया गया है। इस बारिश के सीजन में ग्रामीणों का आना-जाना काफी मुश्किल है। वाहनों से चल नही सकते और पैदल चलने पर कीचड़ में सराबोर हो जाते हैं। स्थानीय रहवासियों ने इस ओर देवसर विधायक एवं कलेक्टर का ध्यान आकृष्ट कराया है।

आरसीएसएस दफ्तर को लेकर दो गुटों में मारपीट

जयंत पुलिस ने किया हस्तक्षेप, दफ्तर में जड़ा ताला

सिंगरौली। आरसीएसएस दफ्तर को लेकर इंटक से निष्काशित वीरेन्द्र सिंह बिष्ट के गुट मौजूदा महामंत्री से उलझ गये। वे संगठन के केन्द्रीय कार्यालय पर कब्जा करने गये थे। मामला मारपीट में तब्दील होने के बाद मौके पर पुलिस पहुंच दफ्तर में ताला जड़ दिया। जानकारी के मुताबिक बीते दिन कल सोमवार की आरसीएसएस सिंगरौली के महामंत्री पुष्पराज सिंह अपने अन्य

पदाधिकारियों के साथ केन्द्रीय कार्यालय सिंगरौली में बैठ कर संगठन को सशक्त बनाने के साथ अन्य बिन्दुओं पर चर्चा-विमर्श कर रहे थे। इसी दौरान संगठन से निष्काशित वीरेन्द्र सिंह बिष्ट अपने कुछ चहेतो के साथ उक्त संगठन के केन्द्रीय कार्यालय में पहुंच कब्जा करने का कोशिश करने लगा। जहां मौके पर मौजूद इंटक के सदस्यों ने विरोध किया तो मामला मारपीट में तब्दील हो गया। अंततः पुलिस पहुंची और दोनों पक्षों को थाने ले गई। मामला अभी गरमाया हुआ है। चर्चा है कि संगठन के निष्काशित वीरेन्द्र सिंह बिष्ट ने योजनाबद्ध तरीके से दफ्तर में कब्जा करने के लिए कोशिश कर रहे थे।

विद्यालय भवन में पानी का अभाव, कलेक्टर से हुई मांग

सिंगरौली। विकास खण्ड बैढ़न के ग्राम पंचायत क्षेत्र जोगियानी के बसौड़ा शासकीय स्कूल जरकट पूर्व टोला बसौड़ा के स्कूल में पानी का अभाव है। जिससे विद्यालय के बच्चों को पीने के पानी के लिए काफी परेशान होना पड़ता है। इस गंभीर समस्या को लेकर कलेक्टर से पानी व्यवस्था उपलब्ध कराये जाने की मांग की गई है। मांग में कहा है कि विद्यालय में स्कूल के बच्चो को पानी पीने एवं शौचालय जाने के साथ-साथ रसौइयां को मध्यान्ह भोजन बनाने के लिए पानी की काफी परेशानी हो रही है। विद्यालय में हैंडपंप तो है, लेकिन उसमें पानी नही आता है। जिसके चलते आधा किलोमीटर दूर से पानी लाना पड़ रहा है। ऐसी गंभीर परिस्थिति में स्कूली बच्चों को पानी के लिए काफी परेशान हाल होना पड़ रहा है। कलेक्टर से मांग की गई है कि पानी की व्यवस्था कराई जाये।

हर घर तिरंगा अभियान अंतर्गत विधानसभा सिहावल के मण्डल नौढ़िया एवं जियावन में निकाली गई तिरंगा यात्रा

सिंगरौली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के निर्देशानुसार स्वतंत्रता दिवस के पावन अवसर पर भाजपा के राष्ट्रीय व प्रदेश संगठन के मंशानुरूप आयोजित तिरंगा यात्रा राष्ट्र भक्ति एकता और गर्व का संदेश जन-जन तक पहुंचाने के संकल्प के साथ सिहावल विधायक विश्वामित्र पाठक के मुख्य आतिथ्य में एवं भाजपा जिला महामंत्री राजकुमार द्विवेदी की अगुवाई में मंडल नौढ़िया एवं जियावन में तिरंगा यात्रा निकाली

गई । तिरंगा यात्रा में बड़ी संख्या में राष्ट्रभक्तों ने शामिल हो कर हाथों में तिरंगा लेकर राष्ट्रप्रेमी जयकारों से वातावरण को गुंजायमान करते रहे। इस अवसर पर मुख्य रूप से प्रणव पाठक अध्यक्ष जनपद पंचायत देवसर, रमेश द्विवेदी मंडल अध्यक्ष नौढ़िया, रमापति साहू मंडल अध्यक्ष जियावन, शिवम शुक्ला प्रदेश प्रवक्ता, कमलेन्द्र चतुर्वेदी, संतोष द्विवेदी, सुरेशकान्त द्विवेदी, रवि प्रजापति, भगवान दास गुप्ता, रंगलाल साहू, रावेंद्र द्विवेदी सरपंच धनहा, कालीचरण चतुर्वेदी, रामप्रकाश बैस सरपंच ईटार, रावेंद्र तिवारी, शिवेश द्विवेदी, सरोज चतुर्वेदी, नंदलाल सिंह, अंजनी बैस, लल्लू यादव, प्रभात चतुर्वेदी, प्रेमकुमार चतुर्वेदी, विकास गुप्ता सहित अन्य मौजूद रहे।

सरकार की मंशा लाड़ली बहना आत्मनिर्भर एवं सशक्त हों : विश्वामित्र

सिंगरौली। सिहावल विधानसभा क्षेत्र अंतर्गत मंगल भवन देवसर में लाडली बहना सम्मेलन सह रक्षाबंधन कार्यक्रम विधायक सिहावल विश्वामित्र पाठक के मुख्य आतिथ्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम में लाडली बहनों ने मुख्य अतिथि को तिलक लगा कर रक्षासूत्र बांधा गया। मुख्य अतिथि ने बहनों की उन्नति और विकास तथा रक्षा का विश्वास देते हुए सभी लाडली बहनों को उपहार दिया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक सिहावल विश्वामित्र पाठक ने अपने उद्बोधन में लाडली बहनों का स्वागत एवं उनकी खुशहाली की कामना करते हुए कहा कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने आप लोगों के लिए आवास योजना, आयुष्मान योजना, आजीविका मिशन से अनेकों योजनाएं बनाई हैं, अभी रक्षाबंधन के पूर्व प्रदेश के मुख्यमंत्री ने प्रत्येक लाडली बहन को 250 रुपए उपहार स्वरूप दिया है। आगे लाडली बहनों को मिलने वाली राशि में भी बढ़ोत्तरी होगी। मुख्य स्थिति ने आगे कहा कि योजना के पहले छोटी-छोटी जरूरतों के लिए आप लोगों को परेशान होना पड़ता था, अब योजना के तहत एक निश्चित राशि नियत तारीख को आपके खाते में आ जाती है, जिससे आप अपनी जरूरतें पूरी करती हैं। साथ ही परिवार में आपका मान सम्मान भी बढ़ा है। इस अवसर पर राजमणि प्रजापति सरपंच, आरपी सिंह सीडीपीओ, अरुण द्विवेदी एसडीओ आरईएस, संतोष कोल एसडीओ, शशिकांत तिवारी, पीओ राजेंद्र द्विवेदी उदयभान पाठक स्वच्छता समन्वयक, रावेंद्र द्विवेदी, अधिकारी-कर्मचारी, गणमान्यजन सहित लाड़ली बहना मौजूद रहीं।

मतदान केन्द्रो के युक्ति-युक्तकरण के संबंध में मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक आज

सिंगरौली। निर्वाचन आयोग के निर्देशानुसार मतदान केन्द्र में मतदाताओं की संख्या 1500 से घटाकर 1200 करने के लिए निर्देशित किया गया है। जिसके संबंध में निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारी विधानसभा क्षेत्र 79-चितरंगी, 80-सिंगरौली, 81-देवसर से मतदान केन्द्रों के युक्तियुक्तकरण का प्रस्ताव तैयार कराया गया है। मतदान केन्द्रों के युक्तियुक्तकरण के प्रस्ताव के संबंध में कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी चन्द्रशेखर शुक्ला के अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में 13 अगस्त को दोपहर 2 बजे मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों का बैठक निर्धारित की गई। अपर कलेक्टर एवं उपजिला निर्वाचन अधिकारी ने सभी मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के प्रतिनिधियों को बैठक में मौजूद होने का अपील की।

कलेक्टर तथा अधिकारी-कर्मचारी साईकिल से पहुंचे कार्यालय

राज्य मंत्री, विधायक व अध्यक्ष सहित कलेक्टर, एसपी साईकिल रैली में हुयें शामिल

विधायक , सीडा अध्यक्ष एवं ननि अध्यक्ष ने पुष्प वर्षा कर किया स्वागत

जनसुनवाई में साईकिल से आए हुए आवेदकों का कलेक्टर ने किया स्वागत

विशाल तिरंगा साइकिल रैली को राज्यमंत्री ने हरी झंडी दिखा कर किया रवाना

सिंगरौली। पर्यावरण संरक्षण ईंधन की बचत और आम जन को स्वास्थ रक्षा का संदेश देने के उद्देश्य से एवं रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद के इस अनोखी पहल पर आज दिन मंगलवार को कलेक्टर चंद्रशेखर शुक्ला, जिला पंचायत सीईओ गजेंद्र सिंह नागेश, एसडीएम सृजन वर्मा सहित अन्य अधिकारी-कर्मचारी साईकिल से कार्यालय पहुंचे।

राजमाता चूनकुमारी स्टेडियम में सभी अधिकारी-कर्मचारी एकत्रित होकर कलेक्टर के नेतृत्व में साईकिल चलाते हुए कलेक्ट्रेट पहुंचे और ससाहित जनसुनवाई में शामिल हुए । कलेक्ट्रेट प्रांगण में सिंगरौली विधायक रामनिवास शाह, सीडा अध्यक्ष दिलीप शाह, ननि अध्यक्ष देवेश पांडेय ने इस पहल के लिए कलेक्टर सहित अधिकारी-कर्मचारियों का फूल बरसा कर स्वागत किया। वहीं जनसुनवाई में साईकिल से आए हुए आवेदकों का कलेक्टर ने स्वयं फूल बरसा कर स्वागत कर उनकी समस्याओं से अवगत होने के पश्चात संबंधित अधिकारियों से निराकरण कराया गया। इस पहल की विशेषता बताते हुए कलेक्टर ने कहा कि इस पहल के माध्यम से एक ओर जहाँ पर्यावरण और ऊर्जा का संरक्षण होगा, वहीं दूसरी ओर साईकिल चलाने से लोगों के स्वास्थ्य में सुधार होगा।

देशभक्ति के नारों से गुंजायमान हुआ शहर

हाथ में तिरंगा होना गर्व और सम्मान की अनुभूति कराता है : रीती

कलेक्ट्रेट से पूजा पार्क तक निकली भव्य तिरंगा यात्रा

सीधी। प्रदेश के साथ-साथ सीधी जिले में भी हर घर तिरंगा अभियान पूरे उत्साह के साथ चलाया जा रहा है। अभियान के तहत कलेक्ट्रेट कार्यालय से पूजा पार्क तक भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। विधायक सीधी रीती पाठक, कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, पुलिस अधीक्षक डॉ रविन्द्र वर्मा, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अरविन्द श्रीवास्तव, पार्षद पूनम सोनी, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, उप पुलिस अधीक्षक अमन मिश्रा, मुख्य नगर पालिका अधिकारी मिनी अग्रवाल, गणमान्य नागरिकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं सहित शहरवासियों ने पूरे उत्साह के साथ तथा मीडिया के साथियों ने तिरंगा यात्रा में सहभागिता की। इस दौरान पूरा मार्ग देशभक्ति के गीतों तथा नारों से गुंजायमान रहा।

इस अवसर पर संबोधित करते हुए विधायक सीधी श्रीमती पाठक ने कहा कि हाथ में तिरंगा का होना गर्व और सम्मान की अनुभूति कराता है। आज हम स्वतंत्र हवा में सांस ले रहे हैं यह हमारे स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों तथा देश के वीर सैनिकों के त्याग, समर्पण और बलिदान का परिणाम है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्री जी ने इस अभियान के माध्यम से सहभागी बनकर देश के गौरव का यशगान करने का अवसर दिया है। उन्होने सभी से आहवान किया कि इस अभियान में सहभागी बनें तथा 13 अगस्त से 15 अगस्त तक अपने घरों में देश की आन-बान-शान तिरंगे को गर्व से फहरायें। विधायक ने कहा कि सभी देशवासी को देश की रक्षा और सेवा के लिए सदैव तत्पर रहना होगा। हम एकजुट होकर हर चुनौती का सामना करने में सक्षम हैं। विधायक ने शहरवासियों को प्रधानमंत्री जी के हर घर स्वच्छता अभियान में सहभागी बनने की अपील की है। इस अवसर पर कलेक्टर श्री सोमवंशी द्वारा उपस्थितजनों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई।

स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में राज्यमंत्री दिलीप जायसवाल करेंगे ध्वजारोहण

सीधी। प्रदेश के कुटीर एवं ग्रामोद्योग राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्री दिलीप जायसवाल स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त को जिला मुख्यालय में आयोजित मुख्य समारोह के मुख्य अतिथि होंगे। राज्यमंत्री श्री जायसवाल स्थानीय पुलिस परेड ग्राउण्ड में प्रात: 9 बजे ध्वजारोहण करेंगे।

स्वतंत्रता दिवस समारोह के आयोजन के सम्बन्ध में कलेक्टर कार्यालय द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार मुख्य अतिथि द्वारा प्रात: 09 बजे ध्वजारोहण किया जायेगा। तदुपरांत निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार समस्त गतिविधियों का आयोजन किया जाएगा। इस वर्ष मुख्यमंत्री जी के स्वतंत्रता दिवस संदेश का राज्य स्तरीय कार्यक्रम का सजीव प्रसारण किया जावेगा। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां होंगी। उसके पश्चात प्रतिभागियों तथा उत्कृष्ट कार्य हेतु शासकीय सेवकों को मुख्य अतिथि के द्वारा पुरस्कार वितरित किया जायेगा।

जनसुनवाई में कलेक्टर ने सुनी 140 आवेदकों की समस्याएं, निराकरण के दिए निर्देश

राममिलन ट्राई साईकिल मिलने से बेहद खुश दिखे

सीधी। नागरिकों के समस्याओं के त्वरित निराकरण के लिये शासन के निर्देशानुसार प्रत्येक मंगलवार को जिला पंचायत सभागार में सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक जनसुनवाई आयोजित की जाती है। इस बार आयोजित जनसुनवाई में कलेक्टर श्री स्वरोचिष सोमवंशी द्वारा जिले के विभिन्न अंचलों से आए 140 आवेदकों की समस्याओं को ध्यानपूर्वक सुनते हुए संबंधित अधिकारियों से संपर्क कर शिकायत की वस्तुस्थिति की जानकारी प्राप्त की गई तथा उसके निराकरण के लिए निर्देश दिए गए। अनिराकृत आवेदनों के लिये समय-सीमा निर्धारित कर अधिकारियों को समय-सीमा में निराकरण करने के निर्देश दिए गए हैं। जनसुनवाई में ग्राम तिलमडाडी से आए दिव्यांग राममिलन विश्वकर्मा ने कभी नहीं सोचा था कि उनकी समस्या का त्वरित निराकरण संभव हो सकेगा और उन्हें सहजता से इसका लाभ प्राप्त होगा। राममिलन ने बताया कि पैर से विकलांग के कारण वे चलने में असक्षम है। उन्हें कहीं भी आने-जाने के लिए सहारे की आवश्यकता पड़ती है। वह अपना काम स्वयं नहीं कर पाते हैं। यदि ट्राई सायकल प्राप्त हो जाये तो वे अपना कार्य किसी के सहारे के बिना भी स्वयं कर सकेंगे और कही भी आने-जाने में कोई परेशानी नहीं होगी। उनकी शारीरिक स्थिति को देखते हुए कलेक्टर के निर्देश पर राममिलन को ट्राई साईकिल प्रदान की गई। जनसुनवाई में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा सहित सभी विभागों के जिला अधिकारी उपस्थित रहे। आज आयोजित जनसुनवाई में समस्त उपखण्ड अधिकारी, तहसीलदार और मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत भी वीडियो कांफ्रेंसिंग के माध्यम से जिला स्तरीय जनसुनवाई से जुड़े रहे।

सुमंगल साइकिल दिवस पर कलेक्टर सहित अधिकारी-कर्मचारी साइकिल से पहुंचे कार्यालय

सीधी। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद द्वारा पर्यावरण संरक्षण और स्वास्थ्य रक्षा के उद्देश्य से संभाग के सभी जिलों के अधिकारियों को प्रत्येक मंगलवार को स्वैच्छिक रूप से साइकिल से कार्यालय पहुंचने की अपील की गई है। कमिश्नर की अपील के परिपालन में सीधी जिले में भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने सुमंगल साइकिल दिवस मनाते हुए कार्यालय जाने के लिए साइकिल और अन्य वैकल्पिक साधनों का उपयोग किया।

सुमंगल साइकिल दिवस पर कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत अंशुमन राज, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, जिला शिक्षा अधिकारी पवन कुमार सिंह सहित विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी साइकिल से कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे। जिले के कई अधिकारियों और कर्मचारियों ने कार्यालय जाने के लिए साइकिल और ई रिक्शा का उपयोग किया। साथ ही उपखण्ड स्तर पर भी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पर्यावरण संरक्षण की इस मुहिम में सहभागिता की।

सांदीपनि विद्यालय में तिरंगा यात्रा आयोजित

सीधी। शासकीय सांदीपनि कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सीधी में भारत सरकार के हर घर तिरंगा 2025 कार्यक्रम अंतर्गत विद्यालय के समस्त विद्यार्थियों एनसीसी, एनएसएस, रेडक्रॉस एवं स्काउट-गाइड द्वारा विद्यालय प्रांगण में तिरंगा यात्रा बड़े उत्साह के साथ निकाली गई। विद्यार्थियों द्वारा देश प्रेम से ओत-प्रोत बुलंद नारे लगाए गए। इस अवसर पर विद्यालय प्राचार्य आरती पाण्डेय, प्रवीण मिश्रा, रामसुशील यादव, वीरेंद्र तिवारी, विजय शर्मा, प्रवेश पांडेय, ज्वाला प्रसाद पटेल, संजय पांडेय, मुकेश सिंह, आशीष पांडेय एवं समस्त शिक्षक बच्चे उपस्थित रहे।

जिला सैनिक कल्याण कार्यालय में सैनिक सम्मेलन का सफल आयोजन

सीधी। ग्रुप कैप्टन सिद्धार्थ श्रीवास्तव (से.नि.) जिला सैनिक कल्याण अधिकारी सीधी (म.प्र.) द्वारा जिला सैनिक कल्याण कार्यालय सीधी के सम्मेलन कक्ष में सीधी जिला के भूतपूर्व सैनिकों/सैनिक विधवाओ, वीर नारियों तथा भूतपूर्व सैनिको के परिजनो के कल्याण हेतु सैनिक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस सम्मेलन में कुल 63 भूतपूर्व सैनिक एवं सैनिक विधवाएँ सम्मिलित हुये। सैनिक सम्मेलन में मुकेश शिवहरे, मजिस्ट्रेट एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सीधी तथा मनीष कौशिक जिला विधिक सेवा अधिकारी की उपस्थिति में नालसा वीर परिवार सहायता योजना 2025 के अंतर्गत सेवारत सैनिकों, भूतपूर्व सैनिको/ सैनिक विधवाओ, वीर नारियो को कानूनी मदद हेतु सीधी जिले में में नालसा विधिक सेवा केंद्र क्रियान्वित किया गया।

सैनिक सम्मेलन में सैनिक कल्याण से जुड़े हुये विभिन्न मुद्दों एवं समस्याओं तथा उनके शीघ्र समाधान हेतु किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा हुई एवं संवाद हुआ। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने भूतपूर्व सैनिकों/सैनिक विधवाओं/वीर नारियों एवं पूर्व सैनिकों के आश्रितों द्वारा उठाई गई समस्याओं का उचित निराकरण एवं आवश्यक कार्यवाही हेतु आश्वासन दिया एवं समुचित आदेश दिये। जिला सैनिक कल्याण अधिकारी ने केंद्रीय सैनिक बोर्ड, भारत सरकार एवं राज्य सैनिक बोर्ड, म.प्र. सरकार द्वारा दी जानी वाली अनुदान सहायता, विभिन्न योजनाओ एवं स्कीम/सुविधाओ के बारे में अवगत कराया तथा सूचित किया कि राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री के आदेश पर म.प्र. सरकार द्वारा अनुदान राशियां और बढ़ाई जा चुकी है। उन्होने सूचित किया कि म.प्र. सरकार ने आदेश दिया है कि समग्र पोर्टल पर पंजीयन एवं ई-केवाईसी अनिवार्य है। मृत्यु अनुदान, छात्र वृत्ति एवं इस कार्यालय में पंजीयन करवाने के लिए ई-केवाईसी अनिवार्य है।

सैनिक सम्मेलन में सभी भूतपूर्व सैनिकों को सूचित किया गया कि उन्हे अपने सभी दस्तावेज़ एवं परिवार का डाटा, जन्म दिनांक नाम इत्यादि रिकार्ड आफिस में अपडेट करना आवश्यक है एवं आधार/पैन के इत्यादि ई-केवाईसी के साथ जमा करना आवश्यक है, अन्यथा अनुदान या पेंशन बाधित हो सकता है। विभिन्न अनुदान राशियों में किए गए बढ़ोत्तरी एवं नवीनतम रेट भी सभी उपस्थित व्यक्तियों को सूचित किया गया एवं संचालनालय सैनिक कल्याण मध्यप्रदेश द्वारा प्रेषित भूतपूर्व सैनिको एवं उनके आश्रितों के लिए उपयोगी जानकारी पुस्तिका भी बांटी गयी एवं सभी के प्रश्नो का समुचित उत्तर दिया गया। उन्होंने बताया कि सशस्त्र सेना झण्डा दिवस फ़ंड के लिए लक्ष्य से बहुत अधिक राशि इकट्ठा करने एवं उत्कृष्ट कार्य हेतु जिलाध्यक्ष सिंगरौली एवं ज़िला सैनिक कल्याण अधिकारी को राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित किया गया है। उन्होने भूतपूर्व सैनिकों एवं उनके परिवारों के मेडिकल सहायता हेतु सीधी ज़िले में ईसीएचएस हेतु हॉस्पिटल एमपनेलमेंट दिसंबर 2025 तक पूरे हो जाने की जानकारी दी।

सहकारी विपणन संघ अमिलिया के प्रबंधक को कारण बताओ सूचना पत्र जारी

सीधी। उपखण्ड अधिकारी सिहावल प्रिया पाठक द्वारा अमिलिया वितरण केंद्र पर हो रही अनियमितता एवं वितरण कुप्रबंधन के दृष्टिगत विपिन कुमार बैगा प्रबंधक म.प्र. राज्य सहकारी विपणन संघ मर्यादित अमिलिया को नोटिस जारी किया जाकर 3 दिवस के भीतर जवाब देने हेतु कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया। विभिन्न सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो के सम्बन्ध में स्थानीय अमले,थाना अमिलिया को प्रेषित शिकायत एवं उप संचालक कृषि द्वारा प्रेषित रिपोर्ट के आधार पर कुछ किसानों द्वारा भण्डारण केंद्र अमिलिया के कैश काउंटर की खिड़की पर बल प्रयोग किया गया जिसके तारतम्य में गोदाम प्रभारी बिपिन बैगा की शिकायत पर पुलिस बल द्वारा उनको हटाया गया है। उप संचालक कृषि द्वारा पूर्व में जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार सभी किसानो से अपील की गई है कि किसान भाई यूरिया के स्थान पर नैनो यूरिया स्पे करें। नैनो यूरिया फसल के लिए अधिक प्रभावी है कम मात्रा में पर्याप्त पोषण देता है और लागत भी घटाता है। उन्होंने सभी किसान भाइयों एवं बहनों से अपील की है कि उर्वरक उपलब्धता एवं वितरण व्यवस्थाओं को लेकर प्रशासन प्रतिबद्ध है इसलिए कानून व्यवस्था के दृष्टिगत वितरण केंद्रो पर शांति एवं धैर्य का परिचय देने का आग्रह है। उप संचालक कृषि से प्राप्त जानकारी के अनुसार उर्वरक आपूर्ति के प्रयास जारी है,कृषि विभाग जिले में पर्याप्त उर्वरक उपलब्ध करने के लिये हर संभव कदम उठा रहा है। दिनांक 11.08.2025 को भी अमिलिया डबल लांक केन्द्र से लगातार यूरिया एवं फास्फेटिक उर्वरक 20:20:0:13 वितरण किया गया। साथ ही अनुविभागीय कृषि अधिकारी एवं वरिष्ठ कृषि विकास अधिकारी सिहावल संयुक्त रूप से निरीक्षण कर सुनिश्चित किया गया कि कोई अव्यवस्था न हो एवं उर्वरक वितरण का कार्य सुचारू रूप से हो। अनुविभागीय कृषि अधिकारी द्वारा बताया गया कि यूरिया वरिगवां रेक प्वाइट से 600 मै.टन यूरिया प्राप्त हो जायेगा, जो डबललांक केन्द्र एवं समितियों में किसानों के लिये उपलब्ध रहेगा।

कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक ने पुलिस परेड ग्राउंड का किया निरीक्षण

सीधी। स्वतंत्रता दिवस समारोह के गरिमामय आयोजन के संबंध में कलेक्टर श्री स्वरोचिष सोमवंशी एवं पुलिस अधीक्षक डॉ रविन्द्र वर्मा द्वारा पुलिस परेड ग्राउंड का निरीक्षण किया गया। उन्होंने समारोह स्थल की साफ-सफाई समतलीकरण, पार्किंग व्यवस्था, सुरक्षा व्यवस्था, बैठक व्यवस्था, विद्युत व्यवस्था आदि के विषय में सभी सम्बन्धित अधिकारियों से जानकारी प्राप्त की तथा निर्देशित किया है कि सभी संबंधित अधिकारी दिए गये दायित्वों का पूरी गम्भीरता से पालन करना सुनिश्चित करें।

इस अवसर पर मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री अंशुमन राज, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री अरविन्द श्रीवास्तव, उपखण्ड अधिकारी गोपद बनास नीलेश शर्मा, उप पुलिस अधीक्षक श्री अमन मिश्रा, मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्रीमती मिनी अग्रवाल सहित संबंधित अधिकारी कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस में तिरंगा यात्रा का आयोजन

सीधी। प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस संजय गांधी स्मृति शासकीय स्वशासी स्नातकोत्तर महाविद्यालय सीधी में आयुक्त उच्च शिक्षा मध्य प्रदेश शासन भोपाल के निर्देशानुसारघर घर तिरंगा हर घर स्वच्छताष् अभियान के तहत दिनांक 12 8.2025 को महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. राम नारायण स्वर्णकार के निर्देशन में तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। रैली में महाविद्यालय परिसर से समस्त छात्र-छात्राएं, एनसीसी कैडेट्स, एन.एस.एस. स्वयंसेवक, क्रीड़ा विभाग के खिलाड़ी सहित महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापक, अतिथि विद्वान एवं तृतीय, चतुर्थ श्रेणी के कर्मचारियों के साथ यात्रा कलेक्टर कार्यालय चौक तक राष्ट्रभक्ति नारों के साथ हाथों में तिरंगा लिए हुए भ्रमण करते हुए पुन: महाविद्यालय परिसर में समाप्त हुई। प्राचार्य ने छात्र-छात्राओं को समझाते हुए कहा कि इस रैली का उद्देश्य लोगों में राष्ट्रभक्ति की भावना का जागरण है, साथ ही हर घर तिरंगा अभियान को जन-जन तक पहुंचाना है। राष्ट्र भावना अपने अंदर संजोने की बात कही, साथ ही राष्ट्रभक्ति गीत सभी ने मिलकर गाया। रैली में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. प्रभाकर सिंह, डॉ. के.एस. नेताम, डॉ. अरविंद कुमार त्रिपाठी, डॉ. के.बी. सिंह सहित समस्त स्टाफ सम्मिलित हुए। उक्त कार्यक्रम लेफ्टिनेंट उमाकांत साहू (एन.सी.सी. अधिकारी) के संयोजकत्व में संपन्न हुआ, जिस हेतु उन्होंने सभी का आभार जताया।

हर घर तिरंगा अभियान राष्ट्र भक्ति के प्रकटीकरण का महोत्सव : देव कुमार

सीधी। भारतीय जनता पार्टी द्वारा हर घर तिरंगा अभियान स्वतंत्रता दिवस के पावन पर्व के पूर्व आयोजित किया जा रहा है। हर घर तिरंगा अभियान प्रत्येक नागरिक के राष्ट्रभक्ति के प्रकटीकरण का महोत्सव है।

उक्त आशय के विचार हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रम को कुसमी मंडल में संबोधित करते हुए भाजपा जिला अध्यक्ष देव कुमार सिंह चौहान ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। भाजपा जिला अध्यक्ष श्री चौहान ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में आज देश राष्ट्रभक्ति और स्वदेशी के मूल भाव से ओत-प्रोत है। पहले तिरंगा कुछ विशिष्ट लोगों की जागीर हुआ करती थी, किंतु भारतीय जनता पार्टी के

नेतृत्व वाली सरकार और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे को हर व्यक्ति के लिए खोल दिया गया है।

भाजपा जिला अध्यक्ष श्री चौहान ने प्रत्येक नागरिक का आह्वान किया कि वे हर घर तिरंगा अभियान में शामिल होकर अपने घरों और प्रतिष्ठानों में तिरंगा ध्वज शान से फहराए। इसके साथ ही देशभक्ति के गीत गानों के बीच विशाल तिरंगा यात्रा नगर के विभिन्न स्थानों से होते हुए निकली।

इस अवसर पर प्रमुख रूप से कुसमी मंडल अध्यक्ष अखंड प्रताप सिंह, वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ देवेंद्र त्रिपाठी, जिला उपाध्यक्ष संदीप द्विवेदी, जिला महामंत्री विनोद साकेत, भानु प्रताप सिंह, डॉक्टर यू के श्रीवास्तव, हीराबाई सिंह, जमुनी देवी, मोर्चा अध्यक्ष निशांत मिश्रा, इंद्रप्रकाश गुप्ता, राजकुमार तिवारी, सुरेंद्र वैश्य, राम भरत मिश्रा, राजकरण कुशवाहा, संजीव गुप्ता, राजेंद्र तिवारी, संगीता सिंह, रन्नू साकेत, विक्रमादित्य मिश्रा, जितेंद्र सिंह परिहार, अविनाश मिश्रा, दशमतिया साहू, समय लाल गुप्ता, जगजीवन सिंह, राम सिंह सहित सैकड़ो स्थानीय जन उपस्थित रहे।

पीएम जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट कक्षा 6वीं में ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 13 अगस्त

सीधी। पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय चुरहट के प्राचार्य डॉ डी के त्रिपाठी ने बताया कि सत्र 2026-2027 के लिए कक्षा छठवीं में आनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि 13 अगस्त है और नौवीं तथा ग्यारहवीं के लिए ऑनलाइन आवेदन की तिथि 23 सितंबर 2025 है। कक्षा छठवीं में लड़कियों के ऑनलाइन आवेदन लगभग 42.5 प्रतिशत है जिसे 50 प्रतिशत करवाने और छठवीं, नवीं, ग्यारहवीं में अधिक से अधिक आवेदन भरवाने के लिए प्राचार्य स्वयं जेएनवीएसटी प्रभारी श्री सुधीर सरोज के साथ डीईओ ऑफिस और सीधी तथा सिहावल के विभिन्न विद्यालयों में भ्रमण किया। सरस्वती विद्या मंदिर लौआ के प्राचार्य श्री द्विज कमल मिश्रा और उनके स्टाफ के सहयोग से आठवीं और पांचवीं के छात्रों को अधिक से अधिक आवेदन के लिए प्रोत्साहित किया। शासकीय बालक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय पतुलखी के प्राचार्य श्री इंद्रसेन त्रिपाठी उपप्राचार्य श्री ओमप्रकाश पाठक, विद्वान शिक्षक चितरंजन मिश्रा, बृजेंद्र प्रताप तिवारी, अरुण द्विवेदी के सहयोग से आठवीं, दसवीं के छात्रों को ऑनलाइन आवेदन के लिए जागरूक किया। इस विद्यालय में लगभग 350 विद्यार्थी हैं। विद्यालय प्रशासकों के अलावा डॉ श्रीकमल शर्मा पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल संकाय डॉ हरिसिंह गौर विश्व विद्यालय सागर (विश्व के जानेमाने शिक्षा विद और संरक्षक अशासकीय जगदीश स्मृति सरस्वती विद्या मंदिर लौआ) और कीर्ति रंजन मिश्रा गणमान्य सदस्य ग्राम लौआ के सहयोग से विद्यार्थियों और पालकों को नवोदय विद्यालय में ऑनलाइन आवेदन के लिए प्रोत्साहित और प्रेरित किया।

संपादकीय

गंगा मैया तो खुद दरवाजे पर आ गई हैं

उत्तर प्रदेश में लगातार बारिश से कई नदियां उफन रही हैं। बड़ी संख्या में लोग बेघर हो गए हैं। कृषि भूमि जलमग्न होने से फसलें बर्बाद हो गई हैं। कई गांव डूबे हुए हैं, तो निचले शहरी इलाकों में भी खतरा बढ़ रहा है। दरअसल, राज्य में स्थिति उस समय गंभीर हो गई, जब गंगा, यमुना और शारदा जैसी प्रमुख नदियां खतरे के निशान से ऊपर बहने लगीं।नतीजा खेत-खलिहानों से लेकर मुख्य सड़कों पर पानी बहने लगा। इस समय बड़ी संख्या में लोगों को सुरक्षित जगहों पर शरण लेनी पड़ी है। लोगों के सामने रोजमर्रा की जरूरतों के साथ रोजी-रोटी का संकट भी पैदा हो गया है। ऐसे में लोगों के सामने खड़ी त्रासदी का बस अंदाज लगाया जा सकता है।इसके मद्देनजर राहत कार्य तेज करने और नागरिकों को ढांढ़स बंधाने के बजाय अगर कोई जनप्रतिनिधि ही समस्या को हल्के तौर पर लेने की नसीहत दे तो हैरानी होती है। दरअसल, बाढ़ प्रभावित इलाके का दौरा कर रहे उत्तर प्रदेश सरकार के मत्स्य पालन मंत्री संजय निषाद ने बाढ़ पीड़ितों के प्रति सहानुभूति दिखाने के बजाय जिस तरह की टिप्पणी की, वह न केवल अतार्किक है, बल्कि गैर-जिम्मेदाराना भी है।सवाल है कि अगर जिम्मेदार पदों पर बैठे लोग भी संकट के समय समस्याओं को गंभीरता से नहीं लेंगे, तो बाकी लोगों से भी क्या उम्मीद बचेगी? मंत्री को यह नहीं भूलना चाहिए कि बाढ़ एक आपदा है। इससे प्रभावित लोगों की मजबूरियां वे समझ रहे होते, तो यह कभी नहीं कहते कि मोक्ष की तलाश में लोग दूर-दूर से गंगा में पवित्र स्नान करने आते हैं और यहां गंगा मैया आपके दरवाजे पर हैं। यह एक सच्चाई है कि हर वर्ष बाढ़ आने पर लाखों नागरिकों का जीवन खतरे में पड़ जाता है।जन-जीवन ठहर जाता है। बड़ी संख्या में लोग बेघर और बेरोजगार हो जाते हैं। ऐसे में राहत का मरहम लगाने के बजाय हल्की-फुल्की बात करना असंवेदशीलता ही मानी जाएगी। मामले के तूल पकड़ने के बाद अपनी टिप्पणी को लेकर मंत्री की जो भी दलील हो, लेकिन एक त्रासद समस्या के संदर्भ में अगर एक जिम्मेदार पद पर रहते हुए वे इस तरह की संवेदनहीन और हल्की बातें करेंगे तो उनके विवेक पर सवाल उठेगा।

हाल ही में अमेरिका द्वारा भारतीय कृषि उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाने की घोषणा को प्रधानमंत्री मोदी ने न केवल अनुचित और एकतरफा करार दिया, बल्कि यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब वैश्विक मंच पर दबाव में आने वाला नहीं है। देश के अग्रणी कृषि वैज्ञानिक एवं कृषि-क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन के शताब्दी समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किसान हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए ललकारभरे शब्दों में अमेरिकी टैरिफ पर प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि भारत किसानों के हितों से समझौता नहीं करेगा, भारत की बढ़ती वैश्विक ताकत का द्योतक है। ट्रंप प्रशासन द्वारा लगाए गए टैरिफ को भारत ने अनुचित एवं दुर्भावनापूर्ण बताया है। भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों के लिए बाजार खोलने के दबाव कभी नहीं आयेगा क्योंकि भारत के लिये यह एक राजनीतिक रूप से संवेदनशील मुद्दा है। इस समारोह में मोदी ने जो शब्द कहे, वे केवल एक श्रद्धांजलि नहीं, बल्कि नये भारत, सशक्त भारत की एक स्पष्ट नीति का घोषणा पत्र है, भारत की नई कृषि रणनीति, आत्मनिर्भरता की भावना और अमेरिकी टैरिफ की दादागिरी को खुली चुनौती है। भारत अब पीछे हटने वाला नहीं है और दुनिया की कोई भी ताकत उसे नुकसान नहीं पहुंचा सकती।

अमेरिकी दादागिरी पर मोदी की ललकार

(ललित गर्ग)

प्रधानमंत्री मोदी ने अमेरिकी टैरिफ पर पहली बार प्रतिक्रिया दी, और अमेरिका या डॉनल्ड ट्रंप का नाम लिए बगैर कहा कि किसानों, पशुपालकों और मछुआरों के हितों के साथ भारत कभी समझौता नहीं करेगा। भारत ने इससे पहले ट्रंप के 50 प्रतिशत टैरिफ को अनुचित, अन्यायपूर्ण और तर्कहीन बताया था। यह विडम्बनापूर्ण एवं विसंगतिपूर्ण है कि ट्रंप बातें रूस की कर रहे हैं, लेकिन यह समझना आसान है कि उनकी निराशा के मूल में भारत के साथ अटकी कृषि ट्रेड डील भी है। वह चाहते हैं कि भारत अमेरिकी कृषि उत्पादों और डेयरी प्रॉडक्ट्स के लिए अपना बाजार खोले। लेकिन देश की बड़ी आबादी खेती पर आश्रित है और किसान आर्थिक रूप से सशक्त नहीं हैं। इसलिये वे सब्सिडाइज्ड अमेरिकी प्रॉडक्ट्स से होड़ नहीं कर सकते। प्रधानमंत्री मोदी ने अपने भाषण के जरिये भारत का यही पक्ष एवं किसानों की चिन्ता को रखा है। लेकिन ट्रंप इस चिंता को शायद ही समझें, क्योंकि अब ऐसा लग रहा है कि अपनी हर नाकामी का ठीकरा फोड़ने के लिए उन्हें कोई देश चाहिए। अमेरिका में बढ़ती महंगाई और बेरोजगारी का दबाव व यूक्रेन युद्ध न रुकवा पाने की हताशा ट्रंप के फैसलों में बौखलाहट के रूप में झलक रही है। पहले उन्होंने चीन पर दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन जब वहां से 'रेयर अर्थ मिनरल्स' के रूप में झटका लगा, तो भारत और रूस से अपनी बात मनवाना चाहते हैं।

हाल ही में अमेरिका द्वारा भारतीय कृषि उत्पादों पर टैरिफ बढ़ाने की घोषणा को प्रधानमंत्री मोदी ने न केवल अनुचित और एकतरफा करार दिया, बल्कि यह स्पष्ट कर दिया कि भारत अब वैश्विक मंच पर दबाव में आने वाला नहीं है। अमेरिका की यह टैरिफ नीति, डब्ल्यूटीओ के सिद्धांतों के विरुद्ध और विकासशील देशों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार का प्रतीक है। भारत पर विशेषकर चावल, गेहूं, दलहन, और मसालों के निर्यात में टैरिफ लगाना सीधे-सीधे भारतीय किसानों की आय पर प्रहार है। ऐसे समय में जब भारत कृषि निर्यात को बढ़ावा देकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बना रहा है, अमेरिका की यह नीति दादागिरीपूर्ण व्यापारवाद का उदाहरण है। भले ही ट्रंप की टैरिफ पैंतरों ने दुनिया के सामने एक बड़ी चुनौती खड़ी कर दी हो, लेकिन भारत ऐसी चुनौतियों के सामने झुकने वाला नहीं है।

भारत अब केवल अमेरिका या यूरोप पर निर्भर नहीं रहना चाहता। अफ्रीका, खाड़ी देशों, दक्षिण एशिया और पूर्वी एशियाई देशों के साथ द्विपक्षीय कृषि व्यापार समझौते तेजी से किए जा रहे हैं। स्थानीय उत्पादन का प्रोत्साहन, 'मेक इन इंडिया' और 'वोकल फॉर लोकल' के तहत कृषि प्रसंस्करण इकाइयों को बल दिया जा रहा है, जिससे निर्यात योग्य उत्पादों का मूल्यवर्धन हो सके। डिजिटल एग्रीकल्चर मिशन, तकनीक के माध्यम से किसानों को वैश्विक बाजार की जानकारी, टैरिफ डाटा और निर्यात संभावनाओं से जोड़कर किसानों की ताकत को बढ़ाया जा रहा है। भारत टैरिफ के जवाब में टैरिफ की राह पर बढ़ते हुए यदि आवश्यकता पड़ी, तो प्रतिस्पर्धी टैरिफ नीति के तहत अमेरिकी उत्पादों पर शुल्क बढ़ाने से नहीं हिचकिचाएगा। भारत डब्ल्यूटीओ और जी20 आदि मंचों पर आक्रामक कूटनीति का सहारे लेकर अब विकासशील देशों की आवाज बनकर, अमेरिका की एकतरफा नीतियों का जवाब दे रहा है।

देश को धीरे-धीरे समझ आने लगा है कि भारतीय कृषि व डेरी क्षेत्र में अमेरिकी उत्पाद खपाने के लिये ही डोनाल्ड ट्रंप टैरिफ आंतक फैला रहे हैं। यही वजह है कि पहले संयम दिखाने के बाद भारत ने निरंकुश ट्रंप सरकार को चेता दिया है कि भारतीय किसानों व दुग्ध उत्पादकों के हितों की बलि नहीं दी जा सकती। हमारे लिये यह देश की एक बड़ी कृषि व डेरी उद्योग से जुड़ी आबादी के जीवन-यापन का भी प्रश्न है। बहरहाल, यह तय हो गया है कि भारत वाशिंगटन के उन मंसूबों पर पानी फेरने के लिये खड़ा हो गया है, जिनके तहत अमेरिका मक्का, सोयाबीन, सेब, बादाम और इथेनॉल जैसे उत्पादों से कम टैरिफ के साथ भारत के बाजार को पाटना चाहता है। निस्संदेह, भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले तीन प्रमुख क्षेत्रों कृषि, डेरी फार्मिंग और मत्स्य पालन से जुड़े करोड़ों लोगों की अजीविका की रक्षा करने के लिये प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता सराहनीय है।

एम.एस. स्वामीनाथन का नाम आते ही भारतीय कृषि का वह स्वर्णिम अध्याय सामने आता है, जब देश अन्न के लिए विदेशों पर आश्रित था और अकाल एक आम त्रासदी हुआ करती थी। 1960 के दशक में स्वामीनाथन ने नॉर्मन बोरलॉग के साथ मिलकर उच्च उपज वाली किस्मों (एचवाईवी), उर्वरकों और सिंचाई तकनीक का ऐसा संगम किया जिसने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बना दिया। पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश में शुरू हुई हरित क्रांति ने न केवल खाद्यान्न सुरक्षा सुनिश्चित की, बल्कि भारत की कृषि पहचान को वैश्विक पटल पर स्थापित किया। उनकी रिपोर्टें, विशेष रूप से स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशें, आज भी किसानों की आय दोगुनी करने और उन्हें बाजार से न्याय दिलाने की कुंजी मानी जाती हैं। उन्होंने 'किसान केंद्रित कृषि नीति' का विचार दिया, जिसमें किसानों को केवल उत्पादनकर्ता नहीं, बल्कि राष्ट्रनिर्माता माना गया। मोदी इसी नीति को आगे बढ़ाते हुए न केवल किसानों के हितों के साथ रहे हैं, बल्कि भारतीय कृषि को नये भारत का आधार बनाने के लिये संकल्पबद्ध है। यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है कि भारतीय राजनीति में किसान उत्पादक व उपभोक्ता से इतर बड़ा राजनीतिक घटक भी है। ऐसे में जाहिर है कि प्रधानमंत्री मोदी कृषक समुदाय को किसी भी कीमत पर नाराज नहीं करना चाहेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी का जोर अब 'अन्नदाता को ऊर्जादाता' बनाने पर है। इसके लिए कृषि के तीन प्रमुख मोर्चों पर काम हो रहा है- न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) को अधिक न्यायसंगत और पारदर्शी बनाना। कृषि निर्यात को 50 बिलियन डॉलर से ऊपर ले जाना। स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को चरणबद्ध लागू करना, जिससे किसानों को लागत से 50 प्रतिशत अधिक लाभ मिल सके। आज जब हम एम.एस. स्वामीनाथन की वैज्ञानिक दृष्टि को याद करते हैं, तो स्पष्ट होता है कि उनकी सोच सिर्फ उत्पादन बढ़ाने तक सीमित नहीं थी, बल्कि किसान को सशक्त करने, आत्मनिर्भर बनाने और वैश्विक ताकतों के सामने टिके रहने योग्य बनाने की थी। मोदी की यह नई नीति उसी दर्शन की राजनीतिक अभिव्यक्ति है।

सही मायनों में भारतीय कृषि में उन आमूल-चूल परिवर्तनों की आवश्यकता है जो न केवल किसान की आय बढ़ाएं बल्कि कृषि उत्पादों को विश्व बाजार की चुनौतियों से मुकाबला करने में भी सक्षम बनायें। एक सौ चालीस करोड़ आबादी वाला देश भारत दुनिया में सबसे ज्यादा जनसंख्या वाला देश है। इस आबादी की खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना भी देश की प्राथमिकता होनी चाहिए। ऐसे में हरित क्रांति के जनक एम.एस. स्वामीनाथन को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम हर हालात में मेहनतकश अन्नदाता को पूरे दिल से समर्थन दें। भारत अब 'झुककर व्यापार' नहीं करेगा, बल्कि 'सम्मान के साथ साझेदारी' करेगा। अमेरिका जैसे देशों को यह समझना होगा कि भारतीय किसान अब केवल हल चलाने वाला नहीं, बल्कि वैश्विक बाजार का खिलाड़ी है। और जब उसके पीछे स्वामीनाथन की विरासत और मोदी की नेतृत्वशक्ति हो, तो कोई भी टैरिफ, कोई भी दबाव, भारत की कृषि शक्ति को झुका नहीं सकता। लेखक, पत्रकार, स्तंभकार है। (इस लेख में लेखक के अपने विचार हैं।)

भारत की नई बुलंद तस्वीर- 'झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए!'

(कमलेश पांडे)

भारत के साथ अपने मनमाफिक डील करने में नाकाम रहे अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने भारत की इकॉनमी को ही 'डेड' बताया था। इसलिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उनकी इसी निकृष्ट मानसिकता का दबंग अंदाज में जवाब देते हुए कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था को दुनिया की सबसे दबंग और गतिशील अर्थव्यवस्था करार दिया।

दुनिया के आर्थिक और सैन्य मंच पर तेजी से कद्दावर बन चुके गुटनिरपेक्ष देश भारत ने रूस को साधकर नम्बर वन अमेरिका और नम्बर टू चीन को रणनीतिक मुश्किल में डालते हुए भींगी बिल्ली बना दिया है। इससे समकालीन विश्व के जी-7, नाटो, जी--20, ब्रिक्स और एससीओ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों में ग्लोबल साउथ की पूछ-परख बढ़ गई है, क्योंकि इनका अगुवा अब भारत बन चुका है।

जानकार बताते हैं कि अमेरिकी दांवपेंचों और चीनी पैंतरों से आजिज आ चुके इन ग्लोबल साउथ के देशों को भारत की सदाशयी नीतियों से जो नीतिगत राहत और वैश्विक सहयोग मिला है, वह इनकी प्राथमिक जरूरत भी है। चूंकि मौजूदा अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य में भारत सबसे तेज़ इकॉनमी बन चुका है, मजबूत सैन्य ताकत के रूप में छा चुका है, इसलिए भारत की मुखालफत दुनियावी थानेदारों को भी भारी पड़ सकती है।

यह ठीक है कि सीजफायर और टैरिफ को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप के दावों-आरोपों का भारत ने अभी तक जो भी जवाब दिया, उसमें भाषा विनम्र और सांकेतिक रखी गई। खासकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तरफ से। लेकिन रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने गत दिनों जो ठोक-पीटकर जोशीला राजपूती बयान दिया है, इसके कूटनीतिक और राजनीतिक मायने में बिल्कुल अलग और अहम हैं। ऐसा इसलिए कि ट्रंप का नाम भी उन्होंने नहीं लिया, लेकिन इस बार जवाब ज्यादा सख्त था।

रक्षा मंत्री सिंह के तल्खी भरे बयान यह स्पष्ट संकेत मिलता है कि अब भारत अपने राष्ट्रीय, मित्रगत और पड़ोसी हितों से कोई समझौता नही करेगा और जो इस रास्ते में अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेगा, या वैसी ताकतों को शह देगा, उससे सख्ती पूर्वक ही निपटा जाएगा। इस बार सीजफायर वाली हड़बड़ाहट भी नहीं दिखाई जाएगी। इसलिए अब कोई भी बातचीत बराबरी के स्तर पर ही होनी चाहिए। वो भी अमेरिका-चीन जैसे देशों के साथ अनिवार्य तौर पर। लिहाजा, केंद्रीय मंत्री संजय सेठ ने ठीक ही कहा है कि नया भारत शेर की तरह दहाड़ता है। शक्तिशाली नेताओं की आंखों में देखकर बात करता है।

उल्लेखनीय है कि भारत के साथ अपने मनमाफिक डील करने में नाकाम रहे अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने भारत की इकॉनमी को ही 'डेड' बताया था। इसलिए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने उनकी इसी निकृष्ट मानसिकता का दबंग अंदाज में जवाब देते हुए कहा कि भारत की अर्थव्यवस्था को दुनिया की सबसे दबंग और गतिशील अर्थव्यवस्था करार दिया। जबकि 'सबके बॉस तो हम है' का भाव रखने वाले कुछ देशों को भारत का तेजी से विकास रास नहीं आ रहा है। समझा जाता है कि भारत से होने वाले आयात पर अमेरिका के 50 प्रतिशत टैक्स लगाए जाने के बाद उनका यह बयान सामने आया है।

रक्षा मंत्री ने आगे कहा कि ऐसी कोशिश की जा रही है कि हमारी चीजें बाहर महंगी हो जाएं। फिर भी कोई ताकत दुनिया की बड़ी शक्ति बनने से भारत को नहीं रोक सकती है। तेजी से बढ़ने वाली अर्थव्यवस्था अगर किसी देश की है तो वह हमारे भारत की है। अब भारत 24000 करोड़ का रक्षा उत्पाद दुनिया को निर्यात कर रहा है। अब हमने भी ठान लिया है कि आतंकियों को उनके धर्म देखकर नहीं, बल्कि उनका कर्म देखकर मारेंगे। जो हमें छेड़ेगा, उसे छोड़ेंगे नहीं।

यह महज संयोग नहीं कि रविवार को ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी देश की अर्थव्यवस्था पर बात की और भारत की अर्थव्यवस्था के तेज रफ्तार के बारे में संकेत देते हुए साफ कहा कि दुनिया की बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में भारत सबसे तेज गति से आगे बढ़ रहा है। पीएम मोदी ने कहा कि भारत दुनिया की तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर तेजी से बढ़ रहा है। यह गति सुधार, प्रदर्शन और परिवर्तन की भावना से हासिल की गई है। पिछले 11 वर्षों में भारत की अर्थव्यवस्था विश्व स्तर पर 10वें स्थान से बढ़कर पहले शीर्ष पांच में पहुंच गई है और अब तेजी से शीर्ष चार से शीर्ष तीन अर्थव्यवस्थाओं में से एक बनने की ओर अग्रसर है।

बता दें कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के भारतीय अर्थव्यवस्था पर निशाना साधने के कुछ दिन बाद पीएम की यह प्रतिक्रिया सामने आई है। पीएम ने यहां तक कहा कि 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता के पीछे भारतीय टेक्नॉलजी और मेक इन इंडिया का हाथ था। उसने कुछ ही घण्टों में पाकिस्तान को घुटनों पर ला दिया। गौरतलब है कि रिजर्व बैंक ने पिछले हफ्ते ही भारत की जीडीपी ग्रोथ का 2025-26 के लिए अनुमान 6.5 प्रतिशत पर बनाए रखा, जबकि दुनिया की बाकी इकॉनमी की ग्रोथ के लिए यह अनुमान तकरीबन 3 फीसदी ही है।

वहीं, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) के डेटा बताते हैं कि 2024 में भारत ने ग्लोबल जीडीपी ग्रोथ में लगभग 17 प्रतिशत का योगदान दिया और अगले 5 साल में यह आंकड़ा 20 प्रतिशत तक पहुंच सकता है। इस तरह से कोरोना महामारी के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था ने सबसे शानदार रिकवरी की और दुनियावी युद्धों व वैश्विक उथल-पुथल के बीच भी वह बढ़त बनाए हुए है।

दूसरी ओर अंतरराष्ट्रीय विकसित अर्थव्यवस्था की हकीकत यह है कि खुद अमेरिका की अर्थव्यवस्था इस समय संकट के दौर में गुजर रही है। वहां पर ट्रंप की अव्यवहारिक नीतियों के चलते महंगाई दर बढ़ने का डर है, जिससे आर्थिक विकास दर पर बुरा असर होगा। ऐसा अमेरिकी अर्थशास्त्रियों का भी मानना है। समझा जाता है कि ट्रंप की टैरिफ पॉलिसी के कारण अगर अमेरिका में मंदी के हालात बनते हैं, तो इसका असर दूसरे मुल्कों पर भी होगा।

इस बात में कोई दो राय नहीं कि ट्रेड और टैरिफ पर ट्रंप का सख्त रुख किसी के लिए भी सही नहीं है। अब तो इसे टैरिफ टेरर या टैरिफ फतवा तक करार दिया जाने लगा है।आखिरकार इस बढ़े टैक्स की कीमत अमेरिकियों को ही चुकानी पड़ेगी। ऐसे में बेहतर है कि समाधान बातचीत से निकाला जाए। लेकिन, वह बातचीत एकतरफा और अपनी मर्जी थोपने वाली नहीं हो सकती। इसलिए अपनी ग्रोथ को बनाए रखने के लिए भारत की एनर्जी संबंधी जरूरतें अमेरिका से बिल्कुल अलग है। इसी तरह, विशाल किसान व पशुपालक आबादी को लेकर भी भारत की कुछ स्वाभाविक चिताएं हैं। लिहाजा किसी भी समझौते में इन पहलुओं को नजरअंदाज नहीं किया जाना चाहिए।

वहीं, केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने कहा, झुकती है दुनिया, झुकाने वाला चाहिए। उनका संकेत पीएम मोदी, एचएम शाह और डीएम सिंह के सख्ती भरे फैसलों व बयानों की तरफ था, जिन्होंने रविवार को धूम मचा दिया। केंद्रीय मंत्री गडकरी ने नागपुर में ठीक ही कहा कि आज दुनिया में जो देश दादागिरी कर रहे हैं, वे ऐसा इसलिए कर पा रहे हैं क्योंकि वे आर्थिक रूप से मजबूत हैं और उनके पास उन्नत तकनीक है। फिर भी उन्होंने चुटकी भरे अंदाज में कहा कि, दुनिया झुकती है बस झुकाने वाला चाहिए।

वर्ग पहेली 5821

1	2	3		4	5	■	6
7			■	8		9	
10			■		■	11	
■		■	12		13	■	■
14	■	15	■	16		17	■
18	19		20	■	21		
22		■	23	24	■		■
25					■	26	

संकेत: बाएं से दाएं

1. इस प्रसिद्ध हास्य कवि की जन्म तारीख व निधन होने की तारीख एक ही है जन्म 18 सितंबर व निधन 18 सितंबर (6)
7. राजीव, पुरानी फिल्मों के गीतकार (3)
8. भगवान श्रीगणेश के नामों में से एक (4)
10. गीत, तराना (3)
11. ह्दय, मन, अंतःकरण (2)
12. परस्पर निर्वाह करना, बुहारना (3)
16. शोधलेख, शोधपत्र, शोधरचना (3)
18. यह सुप्रसिद्ध कवि कालिदास की एक प्रसिद्ध दूत काव्य है (4)
21. शब्द, वाणी, बोली (3)
22. पुराणानुसार पांचवां लोक जहां मनुष्य रहते है, सर्वसाधारण (2)
23. यह कृष्ण-भक्ति शाखा की प्रमुख कवयित्री है (2)
25. दीवार में छेद करके या सेंध लगाके चोरी करने वाला (5)
26. श्रीराम के भाई भरत के ज्येष्ठ पुत्र का नाम जिन्होंने गांधार में तक्षशिला नगरी स्थापित की थी (2)

संकेत: ऊपर से नीचे

1. विवाह के पूर्व कुमारी अवस्था में उत्पन्न हुआ पुत्र (3)
2. असर पैदा करने वाला, प्रभाव करने वाला (4)
3. पाचन क्रिया, पाचन शक्ति (3)
4. सूर्य का सारथी होने के कारण अरूण का एक नाम (5)
5. टांका मारना, सिलाई करना, वक्षस्थल (2)
6. समस्त, कुल, सब (3)
9. अगर, जो (2)
13. महाराष्ट्र का यह शहर गोदावरी नदी के समीप स्थित है, पंचवटी वन इसके समीप है (3)
14. दक्षिण अमेरिका में बहने वाली विश्व की सबसे बड़ी नदी (4)
15. पिता के पिता को यह कहा जाता है (2)
17. हिफाजत से रखा हुआ, सुरक्षित(4)
19. गड़गड़ाहट, गर्जन, मेघनाद (3)
20. शिष्टता, विवेक, सभ्यीकरण (3)
24. जंघा, जांघ (2)

वर्ग पहेली 5820 का हल

म	ले	शि	या	■	शा	य	द
हे	■	का	ता	■	द	क्ष	■
श	ह	र	या	र	■	■	वा
भू	ल	■	त	ह	की	का	त
प	क	ना	■	म	ल	य	ज
ति	■	म	■	दि	■	र	■
■	■	व	की	ल	■	■	मू
पु	का	र	ना	■	ने	पा	ल

प्रकृति में इंसानी दखल का नतीजा

(नृपेंद्र अभिषेक नृप)

उत्तराखंड के धरौली में बादल फटने के कारण जान-माल का भारी नुकसान हुआ है। दिल दहलाने वाली इस आपदा ने साफ बता दिया है कि अंधाधुंध दोहन से प्रकृति का रौद्र रूप सामने आता है, जो तबाही लाता है। इसने आगाह किया है कि हमें अनियोजित और अंधाधुंध विकास से अब बचना ही होगा। हिमाचल हो या उत्तराखंड, नदियों के डूब क्षेत्र में होटल और रिजॉर्ट्स का निर्माण व व्यावसायीकरण से भारी तबाही देखने को मिलती रही है। ऐसे में, जरूरत यही है कि पहाड़ों में बड़े पैमाने पर हो रहे निर्माण-कार्यों पर रोक लगनी चाहिए। इस आपदा से पहाड़ी राज्य की सरकारों को जरूर सबक लेना चाहिए। इसी तरह, मौसम विभाग को भी अधिक सक्रियता दिखानी होगी और समय रहते बादल फटने जैसी घटनाओं की जानकारी संबंधित विभागों से साझा करनी होगी। यानी, हमें दोनों मोर्चों पर काम करना होगा। एक तरफ, बेहिसाब निर्माण-कार्यों पर रोक लगानी होगी, दूसरी तरफ आपदा प्रबंधन का तंत्र दुरुस्त करना होगा, तभी हम ऐसी आपदाओं में इंसानी जान बचा सकेंगे।

सरकारी रिपोर्टें वर्षों से चेतावनी देती रही हैं कि पहाड़ों पर अत्यधिक खुदाई, अवैज्ञानिक निर्माण और नदी-नालों के प्राकृतिक मार्गों में अवरोध पैदा करने से आपदाओं को निमंत्रण मिलता है। किंतु विकास के नाम पर लापरवाही का आलम यह है कि संवेदनशील भूस्खलन क्षेत्रों में भी बहुमंजिला इमारतों, होटलों और सड़कों का निर्माण अनियंत्रित रूप से जारी है। जब धरती की सतह बार-बार खोदी जाती है, पहाड़ों का सीना काटा जाता है, तब बारिश की हर बूंद उस नाजुक धरातल को चीरते हुए बह निकलती है। इससे मिट्टी की पकड़ ढीली पड़ती है और आपदा का आकार कई गुना बढ़ जाता है। पर्यावरणविद भी मानते हैं कि पहाड़ों में हो रहे भूस्खलन का दायरा लगातार बढ़ रहा है, फिर भी प्रशासनिक स्तर पर संवेदनशील क्षेत्रों में कंक्रीट-निर्माण को रोकने की कोई ठोस व्यवस्था नहीं की गई है। नदियों के किनारे बसे गांवों और कस्बों में जल संचयन व प्रवाह के वैज्ञानिक तरीकों को अपनाने के बजाय कंक्रीट की दीवारें खड़ी कर दी जाती हैं। यह प्रवृत्ति न केवल भूगर्भीय संतुलन को बिगाड़ती है, बल्कि नदियों की प्राकृतिक धारा को भी अवरुद्ध कर देती है। ऐसे में, जब वर्षा होती है, जल-निकासी का मार्ग अवरुद्ध होने के कारण बाढ़ की विभीषिका सामने आती है। इसलिए हमें पहाड़ी भूगोल के अनुकूल टिकाऊ विकास मॉडल अपनाना होगा। तभी ऐसी आपदाओं से हम बच सकेंगे।

आज का राशिफल

मेष

आज दिन मिलाजुला रहेगा और नौकरी करने वाले लोग अपने काम में ज्यादा व्यस्त रहेंगे। ऐसे में आसपास के लोग आपकी सराहना भी करेंगे। वहीं, सरकारी नौकरी की तैयारी करने वालों को कोई शुभ समाचार सुनने को मिल सकता है। व्यापार के मामले में दिन की शुरुआत थोड़ी धीमी होगी, लेकिन शाम के समय आपके रुके हुए काम बन सकते हैं।

वृष

आज दिन शुभ और सुकून भरा रहने वाला है। राजनीति के क्षेत्र से जुड़े लोगों को अपने प्रयासों का सकारात्मक परिणाम प्राप्त हो सकता है और सफलता भी मिलेगी। शासन और सत्ता से मेलजोल होने के कारण आपको अच्छा मुनाफा हो सकता है। आपकी प्रतिष्ठा और पद में वृद्धि होने के संकेत मिल रहे हैं, जिससे मन प्रसन्न रहेगा।

मिथुन

आज किसी भी प्रकार की यात्रा के समय सावधान रहने की जरूरत है, अन्यथा कोई मूल्यवान वस्तु खो या चोरी हो सकती है। ऐसे में यात्रा को इस समय टालना बेहतर रहेगा। विद्यार्थियों को शिक्षा या किसी प्रतियोगिता में सफलता प्राप्त हो सकती है। इसी के चलते मन भी प्रसन्न रहेगा।

कर्क

आज कारोबार के मामले में आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। चन्द्रमा नवम भाव में होने से आपको उत्तम संपत्ति प्राप्त हो सकती है, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। साथ ही, समाज में मान-सम्मान बढ़ेगा और कार्यक्षेत्र में उन्नति मिलेगी। संतान की ओर से भी आपको कोई अच्छी खबर सुनने को मिल सकती है।

सिंह

आज नौकरी में आमदनी के नए स्रोत बन सकते हैं। आपकी मधुर वाणी और व्यवहार कार्यक्षेत्र में सम्मान दिलाएगी। वहीं, विद्यार्थियों को शिक्षा या किसी प्रतियोगिता में विशेष सफलता प्राप्त हो सकती है। लेकिन ज्यादा देर बाहर रहने से आपको शारीरिक थकान और नेत्र से जुड़ी समस्या हो सकती है।

कन्या

आज दिन उत्तम रहने वाला है और भाग्य का भी आपको पूरा साथ मिलेगा। व्यापार और कारोबार के मामले में आपके द्वारा किए गए प्रयासों से अब बड़ी सफलता प्राप्त हो सकती है, जिससे मन प्रसन्न रहेगा। अगर किसी कानूनी विवाद में फंसे हैं तो उसमें भी आपको जीत हासिल हो सकती है।

तुला

आज आपके चारों ओर सुखद वातावरण बना रहेगा, जिससे मन भा प्रसन्न रहेगा। आर्थिक मामलों में चल रही समस्याएं अब दूर हो सकती हैं। वहीं, अगर पैसों की लेन-देन में कोई बाधा आ रही थी, तो वह भी अब दूर होगी। धन प्राप्ति के भी शुभ संकेत मिल रहे हैं, जिससे सुकून महसूस होगा।

वृश्चिक

आज आपको सावधान रहने की जरूरत है। साथ ही, स्वास्थ्य पर भी विशेष ध्यान देना होगा। कोई भी समस्या होने पर डॉक्टर के पास जरूर जाएं। व्यापार के मामले में कोई भी फैसला सोच-समझकर लेना बेहतर होगा, अन्यथा नुकसान उठाना पड़ सकता है।

धनु

आज रोजगार और व्यापार के मामले में दिन अच्छा रहने वाला है। कार्यक्षेत्र में विरोधी आपके काम की प्रशंसा करेंगे। शासन व सत्ता पक्ष से जान पहचान या मित्रता होने से भी आपको लाभ प्राप्त हो सकता है। आर्थिक मामलों में भी दिन शुभ रहेगा और किसी मामले में आपको ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

मकर

आज आर्थिक मामलों में दिन अनुकूल रहने वाला है और आपको बड़ी सफलता प्राप्त हो सकती है। कार्यस्थल पर अधीनस्थ कर्मचारियों का सम्मान और सहयोग प्राप्त होगा। ऐसे में आपके कई काम आसानी से पूर्ण हो जाएंगे। निजी जीवन में किए गए नए प्रयास भी अब सकारात्मक परिणाम देंगे और शाम के समय घर पर मेहमान दस्तक दे सकते हैं।

कुंभ

आज दिन कुछ परेशानियों और बाधाओं से भरा रह सकता है। व्यापार के मामले में कुछ कार्यों में आपको समस्या का सामना करना पड़ सकता है। कार्यस्थल पर आपको विरोधियों से भी सावधान रहना होगा और इस समय कोई भी जोखिम भरा फैसला लेने से बचें। अन्यथा नुकसान हो सकता है।

मीन

आज कामकाज के सिलसिले में किसी यात्रा पर जाते समय आपको सावधानी बरतनी होगी। ऐसा न करने से कोई मूल्यवान वस्तु चोरी या खो हो सकती है। कार्यक्षेत्र में कोई भी निर्णय जल्दबाजी में लेने से बचें और आर्थिक मामलों में भी सतर्क रहें। अगर जीवनसाथी के साथ लंबे समय से किसी बात को लेकर मनमुटाव चल रहा था तो वह अब दूर हो सकता है।

पुरी जगन्नाथ मंदिर के महाप्रसाद की पवित्रता से समझौता नहीं

सरकार ने किया ऑनलाइन बिक्री का प्रस्ताव खारिज

पुरी , एजेंसी। राज्य सरकार ने सोमवार को कहा कि पुरी जगन्नाथ मंदिर के महाप्रसाद की ऑनलाइन बिक्री शुरू करने या उसका समर्थन करने की उसकी कोई योजना नहीं है और न ही वह डिजिटल फूड प्लेटफ़ॉर्म की ऐसी किसी पहल का समर्थन करती है।

कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा, महाप्रसाद का गहरा धार्मिक महत्व है और इसे सर्वोच्च सम्मान के साथ रखा जाना चाहिए। यह पारंपरिक रूप से केवल मंदिर परिसर में ही बेचा जाता है, और अगर इसे ऑनलाइन बेचा गया तो इसकी पवित्रता से समझौता हो सकता है। उनका यह बयान एक ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म द्वारा महाप्रसाद बेचने के प्रयास के बाद सोशल मीडिया पर आई प्रतिक्रियाओं के जवाब में आया है।

सरकार ऐसी किसी भी पहल का समर्थन या प्रचार नहीं करती

उन्होंने कहा, ''हमें डर है कि अगर 'महाप्रसाद' को इस तरीके से श्रद्धालुओं तक पहुंचाया गया तो इसकी शुद्धता कायम रह पाएगी या नहीं।'' हरिचंदन ने कहा कि सरकार ऐसी किसी भी पहल का समर्थन या प्रचार नहीं करती है। उन्होंने कहा, ''न तो हमारे पास ऐसा कोई प्रस्ताव है और न ही हम किसी को 'महाप्रसाद' को ऑनलाइन बेचने के लिए प्रोत्साहित करेंगे।'' कानून मंत्री ने श्रद्धालुओं से अपील की कि वे 'महाप्रसाद' ग्रहण करने के लिए पुरी जगन्नाथ मंदिर आएं। उन्होंने कहा कि 'महाप्रसाद' के लिए संशोधित दर जल्द लागू की जाएगी। मंत्री का यह बयान मीडिया की उन खबरों के बाद आया है जिनमें भगवान जगन्नाथ के 'महाप्रसाद' की बिना अनुमति ऑनलाइन बिक्री का आरोप लगाया गया है।

'महाप्रसाद' की ऑनलाइन बिक्री के प्रस्ताव को नामंजूर किया

ओडिशा के कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन ने कहा कि राज्य सरकार ने पुरी जगन्नाथ मंदिर के 'महाप्रसाद' की ऑनलाइन बिक्री के कुछ संगठनों के प्रस्ताव को नामंजूर कर दिया है। हरिचंदन ने यहां सोमवार को संवाददाताओं से कहा कि कुछ संगठनों ने हाल में श्री जगन्नाथ मंदिर प्रशासन (एसजेटीए) से पुरी मंदिर के 'महाप्रसाद' और 'सूखा प्रसाद' को ऑनलाइन मंचों के माध्यम से श्रद्धालुओं तक पहुंचाने का अनुरोध किया था। उन्होंने कहा, ''दुनियाभर के श्रद्धालुओं को प्रसाद उपलब्ध कराना एक अच्छा विचार था, लेकिन सरकार और एसजेटीए ने प्रसाद की शुद्धता को बनाए रखने के लिए इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया है।''

संक्षिप्त समाचार

माफिया-दंगाई कौन है,जनता जानती है: शिवपाल यादव

लखनउ, एजेंसी। गुंडे, माफिया और दंगाई-सबके सब सैफई परिवार के भाई, डिप्टी सीएम केशव मौर्या के इस बयान सपा प्रमुख अखिलेश यादव के चाचा व समाजवादी पार्टी के महासचिव शिवपाल यादव ने पलटवार किया है। केशव पर हमला बोलते हुए शिवपाल यादव ने कहा है कि गुंडे, माफ़िया और दंगाई कौन हैं, यह यूपी की जनता भली-भांति जानती है। मंगलवार सुबह शिवपाल यादव ने सोशल मीडिया एक्स पर पोस्ट कर लिखा कि केशव जी, गुंडे, माफ़िया और दंगाई कौन हैं, यूपी की जनता सब जानती है। शिवपाल यादव यही नहीं रुके। उन्होंने कि बुलडोज़र से कानून का गला घोंटने वाले, किसानों पर लाठियां बरसाने वाले, किसानों की ज़मीन पर कब्जा करने वाले, बेरोज़गारी और भ्रष्टाचार के संरक्षक, ये सब आपके आंगन के 'भाई' हैं। शिवपाल यादव ने कहा कि सैफ़ई परिवार ने तो अस्पताल, स्टेडियम, नौकरियां और विश्वविद्यालय दिए। आपके 'परिवार' ने क्या दिया?नफ़रत, महंगाई और जंगलराज! दरअसल, डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्या ने मंगलवार सुबह एक्स पर पोस्ट कर सपा पर हमला बोला। उन्होंने कहा कि गुंडे, माफिया और दंगाई-सबके सब सैफई परिवार के भाई। इस पोस्ट के बाद शिवपाल यादव ने भी जवाब देते हुए हमला बोला।

केशव ने अखिलेश यादव और राहुल पर भी निशाना साधा था : इससे पहले उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने सोमवार को भी कांग्रेस नेता राहुल गांधी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव पर निशाना साधा था। सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर किए पोस्ट में केशव ने कहा कि सत्ता के लंबे वियोग ने राहुल गांधी और अखिलेश यादव की छटपटाहट बढ़ा दी है। और यह 2047 तक ऐसे ही बरकरार रहने वाली है। उन्होंने कहा कि दोनों नेताओं में जनता का कोई भरोसा नहीं है क्योंकि दोनों राजतंत्र के प्रतीक हैं और जनता जनार्दन का मानमर्दन कर लंबे समय तक सत्ता को भोगते रहे हैं। केशव ने लिखा कि जब जनता ने इनकी राजशाही का चोला उतारकर लोकतंत्र के प्रतीक प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी में भरोसा जताया तो इन्होंने लोकतंत्र के विरुद्ध ही मोर्चा खोल दिया है। एक अन्य पोस्ट में उन्होंने कहा कि बुलेट से बैलट पर कब्जा करके राजनीति करने का समाजवादी पार्टी का काला इतिहास रहा है।

रूस-यूक्रेन में शांति बहाल होते ही अमेरिकी टैरिफ से भारत को मिलेगी राहत: थरूर

नई दिल्ली, एजेंसी। अगर रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध थम जाता है तो इससे भारत को काफी फायदा है। थरूर ने कहा कि रूस और यूक्रेन के बीच शांति बहाल होते ही अमेरिका द्वारा लगाए गए टैरिफ से भारत को राहत मिल जाएगी। थरूर ने यह बात विदेश मामलों की संसदीय समिति की बैठक संपन्न होने के बाद कही। कांग्रेस सांसद इस समिति के अध्यक्ष हैं। शशि थरूर ने कहा कि रूस से तेल खरीदने के कारण हमपर (अमेरिका द्वारा) जो 25प्रतिशत टैक्स लगाया गया है वो सिर्फ रूस और यूक्रेन के युद्ध के कारण है। अगर युद्ध नहीं है तो स्वाभाविक रूप से वो नहीं रहेगा। लेकिन इसके अलावा जो 25प्रतिशत टैक्स बढ़ाया गया है, उसे भी कम कराने के लिए चर्चा करनी चाहिए।

ट्रंप और पुतिन की होने वाली है मुलाकात

गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन के जल्द ही मुलाकात होने वाली है। उम्मीद जताई जा रही है कि इस दौरान दोनों देश रूस और यूक्रेन युद्ध को लेकर भी बातचीत करेंगे। अगर सबकुछ ठीक रहा तो ट्रंप और पुतिन युद्धविराम को लेकर ठोस नतीजे पर भी पहुंच सकते हैं। अगर यह युद्ध थमता है तो भारत को फायादा होने की उम्मीद रहेगी। बता दें कि इससे पहले पिछले हफ्ते रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन और भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के बीच टेलीफोन पर बातचीत हुई थी। दोनों नेताओं ने आपसी संबंधों को गहराई देने और रणनीतिक साझेदारी बढ़ाने संबंधी बात की।

जेलेंस्की से भी हुई पीएम मोदी की बात

इसके अलावा यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की के साथ भी पीएम मोदी की टेलीफोनिक वार्ता हुई है। इस दौरान पीएम मोदी ने रूस-यूक्रेन युद्ध के शांतिपूर्ण समाधान की बात कही है। वहीं, यूक्रेनी राष्ट्रपति ने कहा कि भारत रूस से तेल न खरीदे क्योंकि इससे यूक्रेन के खिलाफ युद्ध में रूस को मदद मिल रही है। दोनों नेताओं के बीच यह बातचीत अमेरिका के अलास्का में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप और उनके रूसी समकक्ष व्लादिमीर पुतिन के बीच रूस-यूक्रेन में शांति समझौते को लेकर होने वाली शिखर वार्ता से पहले हुई है।

कैसे मिल सकता है 25 फीसदी का फायदा

अमेरिका के साथ ट्रेड डील पर थरूर ने कहा कि 25 अगस्त को अमेरिका के प्रतिनिधिमंडल को अगले स्तर की वार्ता के लिए आना था। अभी तक उनकी तरफ से इसमें किसी भी तरह के बदलाव के बारे में कुछ नहीं बताया गया है। गौरतलब है कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 25 फीसदी टैरिफ लगाया था। बाद में उन्होंने इस टैरिफ को बढ़ाकर 50 फीसदी कर दिया। ट्रंप का कहना है कि भारत रूस का तेल खरीद रहा है और इससे रूस को आर्थिक मदद मिल रही है। इसके चलते रूस यूक्रेन के खिलाफ लगातार युद्ध जारी रखे हुए है।

राजस्थान बीजेपी में मोर्चा परिवर्तन की सुगबुगाहट

जयपुर, एजेंसी। राजस्थान की राजनीति में इन दिनों नई करवट देखने को मिल रही है। बीजेपी प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ के एक बयान ने सियासी हलकों में हलचल मचा दी है। उन्होंने साफ तौर पर कहा है कि पार्टी कुछ मौजूदा मंत्रियों को सरकार से हटाकर संगठन में लेने की योजना बना रही है, वहीं संगठन के कुछ चेहरों को सरकार में भेजने पर भी मंथन चल रहा है। राठौड़ का यह बयान सामान्य नहीं, बल्कि बहुत कुछ कहता है। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष मदन राठौड़ का कहना है कि हम तो कई मंत्रियों को भी संगठन में लेने की सोच रहे हैं। हमारे यहां से भी कई जा सकते हैं, उधर से भी हम ले सकते हैं, यह कहते हुए राठौड़ ने बीजेपी के भीतर चल रही रणनीति की एक झलक दे दी। उन्होंने आगे कहा, हमारे यहां संगठन सर्वोपरि है। संगठन सत्ता बनाता है, इसलिए सत्ता में जिसकी जरूरत होगी, उसको सत्ता में भेजेंगे। हमारे यहां तो सिपाही हैं। हमारा कार्यकर्ता सिपाही है, कहीं भी भेजो, वहां काम करेगा। राठौड़ के इस बयान के बाद यह साफ हो गया है कि पार्टी में मोर्चा परिवर्तन की तैयारी हो चुकी है। कौन मंत्री रहेगा और कौन नहीं, यह अब परफॉर्मेंस और संगठन की जरूरतों पर तय होगा। सवाल उठ रहा है कि क्या वाकई कुछ मंत्रियों की कुर्सी खतरे में है?

उन्होंने दो टूक कहा कि, क्यों नहीं, सिपाही को किस मोर्चे पर भेजना है, यह तो संगठन तय करेगा। किस मोर्चे पर वह फिट होता है, यह भी संगठन तय करेगा। लेकिन यह सब काम आवश्यकता होने पर करेंगे। कब करेंगे यह आपको बता देंगे। यानी पत्ते खुलेंगे, लेकिन समय आने पर। बीजेपी के भीतरू सूत्र पहले से ही इस बात की ओर इशारा कर रहे थे कि राजस्थान में मंत्रिमंडल फेरबदल और नई राजनीतिक नियुक्तियों की तैयारी चल रही है। अब राठौड़ के बयान ने इन अटकलों को और हवा दे दी है। चर्चा है कि जैसे ही राष्ट्रीय नेतृत्व से हरी झंडी मिलेगी, राजस्थान सरकार में बड़े बदलाव देखने को मिलेंगे। प्रदेश में लंबे समय से नई कार्यकारिणी के गठन की प्रतीक्षा है और मंत्रिमंडल विस्तार की फाइलें भी धूल खा रही हैं। लेकिन अब लगता है कि बीजेपी संगठन अपनी अगली चाल चलने को तैयार है। पार्टी नेतृत्व तय करेगा कि किसे संगठन में मजबूत किया जाए और किसे सत्ता की जिम्मेदारी दी जाए। यह सियासी बदलाव केवल चेहरों की अदला-बदली नहीं होगी, बल्कि इसके पीछे पार्टी का मिशन 2028 भी छिपा हो सकता है।

हिमाचल के पेंशन फंड की वापसी का मामला अटका

केंद्र की दो-टूक, वापसी का प्रावधान नहीं

शिमला, एजेंसी। हिमाचल प्रदेश में पुरानी पेंशन योजना (ओल्ड पेंशन स्कीम, ओपीएस) लागू करने के बाद कर्मचारियों के पेंशन फंड की वापसी का मामला अटक गया है। केंद्र सरकार ने साफ कर दिया है कि मौजूदा कानून में यह फंड राज्यों को लौटाने का कोई प्रावधान नहीं है। इससे राज्य सरकार पर वित्तीय बोझ लगातार बढ़ता जा रहा है। वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में एक सवाल के लिखित जवाब में कहा कि केंद्र के पास ओपीएस बहाल करने का कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

संबंधित नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं : वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में स्पष्ट किया कि पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) अधिनियम, 2013, पीएफआरडीए (राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली के अंतर्गत निकासी और वापसी) विनियम, 2015 और अन्य संबंधित नियमों में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है, जिसके तहत राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (एनपीएस) में अंशधारकों द्वारा जमा की गई कुल राशि को राज्यों को वापस किया जा सके। पीएफआरडीए को भेजी गई रिपोर्ट के अनुसार 31 जुलाई 2025 तक हिमाचल प्रदेश का 11,111.93 करोड़ रुपये एनपीएस में जमा है। राज्य सरकार इसे वापस चाहती है ताकि ओपीएस के तहत पेंशन भुगतान किया जा सके।

पांच राज्यों के भी पैसे फंसे : ओपीएस लागू कर चुके पांच राज्यों राजस्थान, पंजाब, छत्तीसगढ़, झारखंड और हिमाचल ने अपने पेंशन फंड की वापसी के लिए केंद्र को जानकारी दी है। इनमें राजस्थान का सबसे ज्यादा 50,884.11 करोड़, पंजाब का 31,960.43 करोड़, छत्तीसगढ़ का 22,499.80 करोड़, झारखंड का 14,368.67 करोड़ और हिमाचल का 11,111.93 करोड़ रुपये एनपीएस में फंसा है। हिमाचल में कांग्रेस ने 2022 के विधानसभा चुनाव से पहले ओपीएस बहाल करने का वादा किया था। सत्ता में आने के बाद सुखविंदर सिंह सुक्खु सरकार ने पहली ही कैबिनेट बैठक में इस योजना को बहाल करने का फैसला लिया और इसे लागू कर दिया। लेकिन जमा फंड न मिलने से राज्य सरकार को अपने संसाधनों से पेंशन का भुगतान करना पड़ रहा है। ओपीएस लागू होने के बाद राज्य की वित्तीय हालत पर असर पड़ा है। विपक्षी दल इस मुद्दे पर लगातार सरकार की घेराबंदी कर रहा है। हालांकि मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खु कई बार स्पष्ट कर चुके हैं कि उनकी सरकार किसी भी सूरत में ओपीएस बंद नहीं करेगी।

तमिलनाडु की स्टालिन सरकार का बड़ा फैसला! अब घर-घर पहुंचेगा बुजुर्गों-दिव्यांगों का राशन

चेन्नई, एजेंसी। तमिलनाडु सरकार ने बताया कि मुख्यमंत्री एम के स्टालिन मंगलवार को 21 लाख से ज़्यादा लाभार्थियों - वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगों - के घर तक राशन पहुँचाने की योजना का शुभारंभ करेंगे। एक आधिकारिक विज्ञप्ति में बताया गया है कि स्टालिन यहाँ मुख्यमंत्री थायुमानवर योजना का शुभारंभ करेंगे, जिसके तहत चावल और चीनी सहित राशन की सामग्री इच्छित लाभार्थियों के घर तक पहुँचाई जाएगी। इस योजना के तहत 70 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिक और दिव्यांगजन राशन कार्ड धारक लक्षित लाभार्थी हैं। विज्ञप्ति में कहा गया है कि इस योजना से लगभग 20.42 लाख वरिष्ठ नागरिक और 1.27 लाख से अधिक दिव्यांगजन लाभान्वित होंगे। इस पहल के तहत, हर दूसरे शनिवार और रविवार को लाभार्थियों के घर-घर राशन पहुंचाया जाएगा। खाद्य एवं उपभोक्ता संरक्षण विभाग से संबंधित विवरण पहले ही प्राप्त कर लिए गए हैं और संबंधित क्षेत्रीय कर्मचारियों के साथ साझा किए जा चुके हैं। विज्ञप्ति के अनुसार, कर्मचारी पात्र लाभार्थियों तक राशन पहुंचाएंगे। इस पहल के तहत उन्हें एक इलेक्ट्रॉनिक वजन तौलने की मशीन और ई-पीओएस (पॉइंट ऑफ सेल) मशीन भी उपलब्ध कराई जाएगी। विज्ञप्ति में कहा गया है, ''इस जनहितैषी कदम पर सरकार को 30.16 करोड़ रुपये का खर्च आएगा और सरकार का लक्ष्य समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों का कल्याण सुनिश्चित करना है।

इस्तीफा नहीं चाहिए, बाहर करो ; राहुल गांधी के कहने पर निकाले गए कर्नाटक के मंत्री?

बेंगलुरु, एजेंसी। कर्नाटक के सहकारिता मंत्री केएन राजन्ना को सोमवार को मंत्रिमंडल से बर्खास्त कर दिया गया। खास बात है कि राजन्ना को मुख्यमंत्री सिद्धारमैया का करीबी माना जाता था, लेकिन कहा जा रहा है कि वोट चोरी के मुद्दे पर कांग्रेस को ही घेरने के चलते उनके खिलाफ कार्रवाई की गई है। हालांकि, इसे लेकर कांग्रेस या राज्य सरकार ने साफतौर पर कुछ नहीं कहा है। एनडीटीवी की रिपोर्ट में सूत्रों के हवाले से बताया गया कि कांग्रेस सांसद राहुल गांधी चाहते थे कि राजन्ना को निकाल दिया जाए।

विधायक अदिति सिंह ने एमएलए प्रतीक भूषण को बांधी राखी

गोंडा, एजेंसी। यूपी विधानसभा में मानसून सत्र के पहले दिन सदन में जहां जोरदार हंगामा हो रहा था वहीं इस दौरान परिसर में एक दिलचस्प नजारा भी देखने को मिला। रायबरेली की सदर सीट से भाजपा की विधायक अदिति सिंह ने गोंडा से भाजपा के विधायक प्रतीक भूषण सिंह को राखी बांधी जिसके बाद प्रतीक भूषण ने अदिति सिंह के पैर छुए और आशीर्वाद लिया। गिफ्ट के तौर पर प्रतीक भूषण ने उन्हें रायबरेली की हर बहन की रक्षा का वचन दिया। दिवंगत विधायक अखिलेश सिंह की बेटी अदिति सिंह, पूर्व सांसद बृजभूषण सिंह के बेटे प्रतीक भूषण को पहले भी राखी बांधती रही है लेकिन विधानसभा में उन्होंने पहली बार राखी बांधी तो यह तस्वीर सोशल मीडिया में वायरल हो गई। राखी बंधवाने के दौरान का वीडियो भी सामने आया है। यह वीडियो विधायक अदिति सिंह ने खुद भी 'एक्स' पर शेयर किया है।

अदिति सिंह ने एक्स पर शेयर किया वीडियो

बाद में विधायक अदिति सिंह ने विधायक प्रतीक भूषण को राखी बांधने का वीडियो सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर खुद भी शेयर किया है। इस पोस्ट में उन्होंने लिखा-' आज उत्तर प्रदेश विधान सभा के मानसून सत्र के पहले दिन गोंडा से विधायक श्री प्रतीक भूषण सिंह जी की कलाई पर राखी बांधकर रक्षाबंधन मनाया। इस अवसर पर प्रतीक जी ने मेरा चरण स्पर्श कर आशीर्वाद लिया। साथ ही भावपूर्ण संकल्प लिया कि वे गोंडा ही नहीं रायबरेली की भी हर बहन की रक्षा करेंगे। उन्होंने कहा, यह केवल गोंडा और रायबरेली का नहीं बल्कि भाई-बहन के पवित्र रिश्ते का बंधन है। हमारे दोनों जिलों के लोगों को गर्व होना चाहिए कि गोंडा के एक भाई ने रायबरेली की बेटी को अपनी बहन के रूप में माना है।

इसमें प्रतीक भाई-बहन (प्रतीक भूषण और अदिति सिंह) हंसी-मजाक करते भी दिखे। अदिति सिंह ने प्रतीक भूषण की कलाई पर एक के बाद एक दो राखियां बांधीं।

बीच सड़क मॉडल के सामने मास्टरबेट करने वाले को पुलिस ने दबोचा, 14 लाख का है पैकेज

चंडीगढ़, एजेंसी। गुरुग्राम में सरेआम एक मॉडल के सामने मास्टबेट करने वाले आरोपी को गुरुग्राम पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी हरियाणा के करनाल का रहने वाला है। पुलिस ने घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर आरोपी की पहचान की और उसे गिरफ्तारी कर लिया। आरोपी युवक एमटेक पास है। वह गुरुग्राम की एक प्राइवेट कंपनी में सालाना 14 लाख के पैकेज पर नौकरी करता है।

शादीशुदा है आरोपी : पुलिस के मुताबिक, आरोपी शादीशुदा है। उसका एक बच्चा भी है। एक साल से वह गुरुग्राम के सेक्टर-11 में रह रहा था।

मास्क की वजह से था बेखौफ : पुलिस ने बताया कि वारदात करने के बाद अ?भिषेक अपने कमरे पर आया। इसके बाद रोजाना जॉब पर भी जाने लगा। उसे लगा कि उसने मास्क पहन कर वारदात को अंजाम दिया है इसलिए कोई उसे पहचान नहीं पाएगा और उसे पकड़ा नहीं जा सकेगा। लेकिन पुलिस ने सीसीटीवी फुटेज खंगाल कर उसे दबोच लिया।

एक युवती के साथ छेड़छाड़ भी की थी: उसकी गिरफ्तारी के बाद एक और खुलासा हुआ है कि आरोपी ने इससे पहले जेएमडी बिल्डिंग में काम करने वाली युवती के साथ भी छेड़छाड़ की थी। इस मामले में भी पुलिस उसे नामजद करने की तैयारी कर रही है।

मॉडल ने थाने पहुंचकर दर्ज कराए थे बयान : थाना सिविल लाइन के एसएचओ कृष्ण ने बताया कि शिकायत मिलते ही एफआईआर दर्ज कर ली गई थी। मॉडल ने थाने में आकर अपने बयान भी दर्ज करवाएं थे। आरोपी युवक को गिरफ्तार कर लिया गया है।

अति व्यस्त राजीव चौक पर हुई थी घटना: रविवार को गुरुग्राम के अति व्यस्त राजीव चौक पर सुबह 11 बजे यह घटना हुई थी। यहां जयपुर से गुरुग्राम लौटी एक मॉडल कैब का इंतजार कर रही थी। इस दौराम मास्क पहने हुए एक शख्स ने मॉडल के सामने अपनी पैंट की जीप खोली और मास्टरबेट करने लगा। युवती ने आरोपी की अश्लील हरकत को कैमरे में रिकॉर्ड कर लिया।

मॉडल ने वीडियो जारी दी थी घटना की जानकारी : इसके बाद मॉडल ने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी करते हुए इस शर्मनाक घटना के बारे में लोगों को बताया। उसने कहा कि आरोपी मुझे लगातार घूर रहा था लेकिन शुरू में मैंने उसे इग्नोर किया। फिर देखा कि आरोपी मास्टरबेट करने लगा।

पुलिस हेल्पलाइन पर की थी कॉल: मॉडल ने बताया कि शुरू में तो मैंने कुछ रिकॉर्ड नहीं किया, क्योंकि पूरी घटना से वह स्तब्ध हो गई थी। मैंने पुलिस हेल्पलाइन पर भी कॉल किया था, लेकिन किसी ने नहीं उठाया। बाद में गूगल से उन्होंने एक नंबर निकाला और दूसरी तरफ से फोन पर कहा गया कि ऑनलाइन कंप्लेंट नहीं की जा सकती है, आपको थाने आना पड़ेगा।

सिनसिनाटी ओपनः

आर्यना संबालेका ने जीता महिला सिंगल्स खिताब

नई दिल्ली, एजेंसी। दुनिया की नंबर एक टेनिस खिलाड़ी आर्यना सबालेंका ने 3 घंटे 9 मिनट तक चले सिनसिनाटी ओपन के संघर्षपूर्ण फाइनल में ब्रिटेन की एम्मा रादुकानु को हराकर खिताब जीता। रादुकानु एक बार फिर से सबालेंका के खिलाफ लगातार हार के सिलसिले को तोड़ने में नाकामयाब रहीं। पहले सेट में रादुकानु ने शानदार खेल दिखाया और पहले नौ अंक जीतकर जोरदार शुरुआत की। लेकिन जैसे-जैसे मैच आगे बढ़ता गया, उनकी पकड़ कमजोर होती गयी। उनकी सर्विस कमजोर पड़ने लगी। वहीं, सबालेंका ने शुरुआत में पिछड़ने के बाद दमदार वापसी की और टाई-ब्रेक में पहला सेट 7-6 (3) से जीता। दूसरे सेट में एम्मा रादुकानु ने जोरदार वापसी की। उन्होंने सबालेंका को छकाते हुए सेट 4-6 से अपने नाम किया। तीसरा सेट बेहद अहम और निर्णायक था। दोनों की तरफ से उनका सर्वश्रेष्ठ खेल देखने को मिला। रादुकानु ने ताकतवर फोरहैंड और बैकहैंड का इस्तेमाल किया और सबालेंका के आक्रमण को रोकने में भी सफलता पाई। वहीं नंबर वन खिलाड़ी सबालेंका ने भी अपनी क्लास से रादुकानु पर अपनी पकड़ बनाए रखी और सेट टाई ब्रेकर में 7-6 (5) से जीतकर खिताब अपने नाम किया। जीत के बाद सबालेंका ने कहा, मैं इस मुश्किल मैच को जीतकर खुश हूं। रादुकानु पर तीसरे सेट में जीत हासिल करने के लिए मुझे जोखिम भरे शॉट खेलने पड़े। मुझे उसके खिलाफ लड़ने में मजा आ रहा है। वह एक अद्भुत खिलाड़ी है, एक बहुत अच्छी इंसान है, और मैं उसके लिए बहुत खुश हूं। मैं उसे मानसिक और शारीरिक रूप से स्वस्थ देखकर खुश हूं। वह खेल में लगातार सुधार कर रही है। एम्मा रादुकानु बेशक यह मैच नहीं जीत सकी, लेकिन उन्होंने अपने खेल से प्रभावित किया। फाइनल हारने के बाद रादुकानु ने कहा, वह किसी खास वजह से नंबर 1 हैं। मैंने विंबलडन की तुलना में उन पर ज्यादा दबाव डाला। यह मेरे लिए संतोषजनक था। मैं हमेशा से सोचती थी कि घास मेरे लिए ज्यादा उपयुक्त है। अब भी यही मानती हूं। इसलिए हार्ड कोर्ट पर उन पर दबाव डालने पर मुझे बहुत गर्व है।

रोहित-विराट के टेस्ट क्रिकेट छोड़ने पर पूर्व क्रिकेटर का बड़ा बयान

उन्होंने गलत प्रारूप से संन्यास लिया

नई दिल्ली, एजेंसी। रोहित शर्मा और विराट कोहली जैसे दिग्गज खिलाड़ियों के जल्द ही वनडे से संन्यास लेने की मीडिया रिपोर्टों के बीच पूर्व भारतीय क्रिकेटर आकाश चोपड़ा ने कहा कि भारतीय दिग्गजों ने गलत प्रारूप से संन्यास लिया और वर्तमान समय में वनडे क्रिकेट के अभाव के कारण उन्हें टेस्ट क्रिकेट की बजाय 50 ओवर के प्रारूप को छोड़ना चाहिए था। कप्तान शुभमन गिल द्वारा भारत को 2-2 से शानदार ड्रॉ दिलाने के कुछ दिनों बाद ऐसी खबरें आने लगीं कि रोहित और विराट वनडे भी छोड़ सकते हैं। दोनों ही 2027 में दक्षिण अफ्रीका और नामीबिया में होने वाले आईसीसी क्रिकेट विश्व कप की योजना में नहीं हैं, जब तक कि दोनों अपनी मैच फिटनेस और फॉर्म साबित करने के लिए घरेलू 50 ओवर का क्रिकेट नहीं खेलते। दोनों क्रिकेटरों ने मई में भारत के इंग्लैंड दौरे से पहले टेस्ट क्रिकेट से संन्यास की घोषणा कर दी थी।

अपने यूट्यूब चैनल पर बात करते हुए चोपड़ा ने कहा, सच्चाई यह है कि उन्होंने गलत फॉर्मेट को अलविदा कह दिया है। उन्होंने टी20 विश्व कप जीतने के बाद टी20 छोड़ दिया था, लेकिन अगर वे टेस्ट खेलना जारी रखते और वनडे को अलविदा कह देते तो कहानी कुछ और होती। चैंपियंस ट्रॉफी से पहले 12 महीनों में भारत ने सिर्फ 6 वनडे खेले थे।

उन्होंने आगे कहा, हो सकता है कि आप साल में सिर्फ छह टेस्ट खेलें, लेकिन अगर ये सिर्फ छह टेस्ट भी हैं, तो ये 30 दिन का क्रिकेट है। अगर सिर्फ छह वनडे खेले जाते हैं, तो ये एक समयावधि में सिर्फ छह दिन का क्रिकेट होगा। आपके आखिरी IPL मैच से लेकर अगले वनडे मैच तक 100 दिन से ज्यादा का समय लगेगा। आप बिल्कुल नहीं खेल रहे हैं। आप बिल्कुल भी अभ्यास नहीं कर रहे हैं।

चोपड़ा ने यह भी बताया कि इन दिनों वनडे सीरीज के बीच का अंतराल भी बेहद बड़ा है और सिर्फ कुछ वनडे मैचों से फॉर्म, फिटनेस, डाइट के प्रति प्रतिबद्धता आदि को बनाए रखना मुश्किल होगा। मौजूदा कमेंटेटर ने कहा, तीन मैचों की एक सीरीज सात से आठ दिनों में खत्म हो जाती है। फिर अगली सीरीज तीन महीने बाद होगी। अंतराल बहुत बड़ा है और आप बीच में प्रथम श्रेणी क्रिकेट नहीं खेलेंगे।

0 पर आउट हो गए 10 बल्लेबाज, इस टीम ने सिर्फ 2 गेंदों में जीता टी-20 मैच

2 गेंदों में जीता टी-20 मैच

नई दिल्ली, एजेंसी। टी20 मैच तो आपने बहुत देखे होंगे. इस फॉर्मेट में कई बड़े रिकॉर्डों को टूटते और बनते देखा होगा. टीमों को छोटे स्कोर पर ढहते होगा. लेकिन, यकीन मानिए हम जिसके बारे में बताने जा रहे हैं, वैसा ना तो पहले कभी देखा और ना ही सुना होगा. ये अपने आप में हुई एक अनोखी घटना है. और, ये मेंस क्रिकेट में नहीं बल्कि महिला टी20 मैच के दौरान हुआ है, जहा एक टीम के 10 बल्लेबाजों का तो खाता भी नहीं खुला, मतलब वो जीरो पर आउट हो गए. टारगेट इतना छोटा रहा कि विरोधी टीम ने मुकाबला सिर्फ 2 गेंदों में ही जीत लिया. अब सवाल है कि ये मैच खेला कहां गया?

राजस्थान क्रिकेट एसोसिएशन प्रदेश की सीनियर महिला टीम के संभावितों के सेलेक्शन के लिए जयपुर और उदयपुर जिला केंद्र पर राज्य स्तरीय सीनियर महिला टी20 टूर्नामेंट करा रहा है. ये मुकाबला उसी टूर्नामेंट में सीकर और सिरोही जिले की टीमों के बीच खेला गया. क्रिकेट को अनिश्चिताओं का खेल कहते हैं और जयपुर में हुए मुकाबले में ऐसी ही एक अनिश्चितता ने सिरोही की टीम को घेर लिया. किसी ने नहीं सोचा था कि सिरोही की टीम का हाल इतना बुरा होगा.

10 बल्लेबाजों ने बनाए जीरो, 2 गेंदों में टारगेट हुआ चेज

मुकाबले में पहले बल्लेबाजी करने उतरी सिरोही की टीम की बल्लेबाजी की हालत 'तू चल, मैं आया' वाली रही. एक के बाद एक ताश के पत्तों की तरह विकेट ढह रहे थे. इस बीच स्कोर बोर्ड पर रन लगने की बात ना ही करें तो बेहतर. क्योंकि, वो तो 9वें नंबर के बल्लेबाज के क्रीज पर आने के बाद ही संभव हो सका. उसने ही 2 रन जोड़े और बाकी के 2 रन एक्स्ट्रा से आ गए. बाकी के 10 बल्लेबाजों के नाम के आगे तो बस जीरो ही लिखे रहे. कुल मिलाकर सिरोही की टीम सिर्फ 4 रन बनाकर ऑल आउट हो गई. जवाब में 5 रन के लक्ष्य का पीछा करने उतरी सीकर की टीम के लिए इस काम से तो आसान कुछ हो ही नहीं सकता था. उन्होंने बस 2 गेंदें खेलकर अपना टारगेट हासिल कर लिया. और, इस तरह सिरोही की टीम को महिला टी20मैच में सीकर के हाथों 10 विकेट से हार का सामना करना पड़ा.

जापानी बॉक्सिंग में काला सप्ताह, दो दिन में 2 मुक्केबाजों की मौत, JBC ने 12 राउंड मुकाबलों पर लगाई रोक

नई दिल्ली, एजेंसी। जापानी बॉक्सिंग की दुनिया इन दिनों गहरे सदमे में है। महज कुछ दिनों के भीतर, एक ही इवेंट में हिस्सा लेने वाले दो पेशेवर मुक्केबाजों की मौत ने खेल जगत को हिला दिया है। 28 साल के शिगेतोशी कोतारी और हिरोमासा उराकावा ने 2 अगस्त को टोक्यो के कोराकुएन हॉल में अलग-अलग मुकाबलों में हिस्सा लिया। मुकाबले के दौरान दोनों को ही गंभीर चोटें लगीं, जिसके चलते उन्हें जान गंवानी पड़ी। शिगेतोशी कोतारी की यामातो हाटा के साथ मुकाबले के दौरान लगी चोटों के कारण पिछले शुक्रवार (8 अगस्त 2025) को मृत्यु हो गई। शिगेतोशी कोतारी की मौत के अगले दिन हिरोमासा उराकावा की शनिवार (9 अगस्त 2025) को मृत्यु हो गई। फेदरवेट वर्ग के 8वें राउंड में हिरोमासा उराकावा और योगी सैतो के बीच नॉकआउट मुकाबला हुआ था।

मुकाबले में हिरोमासा हार गए और उन्हें गंभीर चोटें आईं। बाद में 9 अगस्त को उनकी मृत्यु हो गई। कोतारी और उराकावा दोनों की सबड्यूरल हेमेटोमा के लिए सर्जरी हुई थी। यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें किसी चोट के कारण खोपड़ी और मस्तिष्क के बीच खून जम जाता है। लगातार हो रही मौतों ने जापान बॉक्सिंग कमीशन को झकझोर दिया है।

100 करोड़ की मानहानि का मामला: धोनी को बड़ी सफलता, हाईकोर्ट ने सुनवाई का आदेश दिया

नई दिल्ली, एजेंसी। मद्रास हाईकोर्ट ने पूर्व भारतीय कप्तान महेंद्र सिंह धोनी द्वारा दो प्रमुख मीडिया चैनलों और एक पत्रकार के खिलाफ 2013 के आईपीएल सट्टेबाजी कांड में उनका नाम घसीटने के आरोप में दायर 100 करोड़ रुपए के मानहानि के मामले में सुनवाई का आदेश दिया है। एमएस धोनी इस मामले में अपना बयान दर्ज कराने के लिए तैयार हैं। न्यायमूर्ति सीवी कार्तिकेयन ने एक एडवोकेट कमिश्नर नियुक्त किया है जो धोनी की ओर से सबूत दर्ज करेगा। दो बार के विश्व कप विजेता कप्तान इस पूछताछ के लिए व्यक्तिगत रूप से उपस्थित नहीं होंगे क्योंकि एक सेलिब्रिटी होने के कारण उनकी उपस्थिति से अव्यवस्था पैदा हो सकती है।

धोनी ने 2014 में प्रतिवादियों से 100 करोड़ रुपए के हर्जाने की मांग करते हुए यह मामला दायर किया था। 44 वर्षीय धोनी का आरोप है कि आईपीएल सट्टेबाजी कांड पर एक टेलीविजन बहस के दौरान उनके खिलाफ अपमानजनक टिप्पणियां की गईं। एक रिपोर्ट के अनुसार वरिष्ठ वकील पीआर रमन ने धोनी की ओर से एक हलफनामा पेश किया जिसमें मुकदमे की शुरुआत की मांग की गई थी।

यह मुकदमा एक दशक से लंबित है, क्योंकि संबंधित पक्ष वर्षों से राहत की मांग कर रहे हैं। हलफनामे में लिखा है, उपरोक्त अनुरोध किसी भी अनुचित देरी (एक दशक से अधिक समय से उच्च न्यायालय में लंबित मुकदमे के निपटारे में) से बचने और मुकदमे के निष्पक्ष, न्यायसंगत और शीघ्र निर्णय का समर्थन करने के इरादे से किया गया है। मैं घोषणा करता/करती हूं कि मैं एडवोकेट कमिश्नर के साथ अपना पूरा सहयोग करूंगा/करूंगी और मुकदमे तथा साक्ष्य दर्ज करने के संबंध में इस माननीय न्यायालय द्वारा जारी सभी निर्देशों का पालन करूंगा/करूंगी।

चेसः गुकेश ने ओपेरिन-लिएम को हराया, सेंट लुई रैपिड एवं ब्लिट्ज के पहले दिन के बाद संयुक्त तीसरे स्थान पर

सेंट लुई (अमेरिका), एजेंसी। गुकेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उन्हें पहले दौर के एक कड़े मुकाबले में अरोनियन से हार का सामना करना पड़ा। लेकिन इसके बाद उन्होंने शानदार वापसी की। मौजूदा विश्व चैम्पियन डी गुकेश ने अमेरिका के लेवोन अरोनियन से पहले दौर में मिली हार के बाद वापसी करते हुए ग्रिगोरी ओपेरिन और लिएम ले क्वांग पर जीत दर्ज की और ग्रैंड शतरंज टूर के तहत खेले जा रहे सेंट लुई रैपिड एवं ब्लिट्ज शतरंज टूर्नामेंट के पहले दिन संयुक्त तीसरे स्थान पर रहे।

गुकेश की शुरुआत अच्छी नहीं रही और उन्हें पहले दौर के एक कड़े मुकाबले में अरोनियन से हार का सामना करना पड़ा। लेकिन इसके बाद उन्होंने शानदार वापसी की और सोमवार को खेली गई अन्य बाजियों में ओपेरिन और लिएम को हराकर संभावित छह में से चार अंक हासिल किए।लास वेगास में हाल ही में संपन्न फ्रीस्टाइल शतरंज टूर्नामेंट में जीत दर्ज करने वाले अमेरिकी ग्रैंडमास्टर अरोनियन ने उज्बेकिस्तान के नोडिरबेक अब्दुसत्तोरोव और फ्रांस के मैक्सिम वाचियर-लाग्रेव को हराकर अपना परफेक्ट स्कोर बनाए रखा। अरोनियन छह अंकों के साथ शीर्ष पर हैं, जबकि उनके हमवतन फैबियानो कारुआना दो जीत और एक ड्रॉ के बाद पांच अंकों के साथ दूसरे स्थान पर हैं। गुकेश एक अन्य अमेरिकी वेस्ली सो के साथ संयुक्त रूप से तीसरे, जबकि वाचियर-लाग्रेव और लीनियर डोमिन्गुएज पेरेज तीन-तीन अंकों के साथ संयुक्त रूप से पांचवें स्थान पर हैं।

लिएम और ओपेरिन दो-दो अंक के साथ दूसरे स्थान पर हैं। नोडिरबेक के खाते में एक अंक है, जबकि सैम शैंकलैंड अपने सभी मैच हारने के बाद अंतिम स्थान पर हैं। गुकेश को पहले दौर में कैरो कान के डिफेंस गेम के कारण पैदा हुई जटिलताओं के कारण हार का सामना करना पड़ा।

भारतीय खिलाड़ी ने दूसरे दौर में सफेद मोहरों से खेलते हुए ओपेरिन को शह और मात देने के लिए अपनी रानी की बलि दे दी और आसानी से जीत हासिल की। दिन के आखिरी मुकाबले में लिएम के खिलाफ काले मोहरों से खेल रहे गुकेश को फिर से मुश्किलों का सामना करना पड़ा। लेकिन भारतीय खिलाड़ी ने दबाव बनाए रखा और आखिर में वह जीत हासिल करने में सफल रहे।

Doping:

एथलीट गगनदीप को डोपिंग मामले में मिली तीन साल की सजा

नई दिल्ली, एजेंसी। सेना का प्रतिनिधित्व करने वाले गगनदीप ने 12 फरवरी को उत्तराखंड राष्ट्रीय खेलों में पुरुषों की चक्का फेंक में 55.01 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता था। राष्ट्रीय खेलों में चक्का फेंक के स्वर्ण पदक विजेता गगनदीप सिंह सहित कई खिलाड़ियों को राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) द्वारा तीन साल का प्रतिबंध लगाया गया है। इन खिलाड़ियों ने डोपिंग का आरोप लगने के 20 दिनों के अंदर अपना अपराध स्वीकार कर लिया था, जिसके कारण उनकी सजा चार साल के बजाय तीन साल कर दी गई। सेना का प्रतिनिधित्व करने वाले गगनदीप ने 12 फरवरी को उत्तराखंड राष्ट्रीय खेलों में पुरुषों की चक्का फेंक में 55.01 मीटर के सर्वश्रेष्ठ थ्रो के साथ स्वर्ण पदक जीता था।

इसके बाद वह डोपिंग जांच में पॉजिटिव पाये गये। उनके नमूने में 'टेस्टोस्टेरोन मेटाबोलाइट्स' की पुष्टि होने के बाद उन्हें अस्थायी रूप से निलंबित कर दिया गया। इस 30 साल के खिलाड़ी की प्रतिबंध अवधि की शुरुआत 19 फरवरी 2025 से होगी। खिलाड़ी के पहले अपराध के लिए अधिकतम प्रतिबंध की अवधि चार साल है.

स्टेफी ग्राफः फैंस में ऐसी दीवानगी किसी और महिला टेनिस खिलाड़ी के लिए नहीं दिखी

नई दिल्ली, एजेंसी। टेनिस दुनिया के सर्वाधिक लोकप्रिय और रोमांचक खेलों में से एक है। इस खेल को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रियता दिलाने में जिन खिलाड़ियों की अहम भूमिका रही है, उनमें एक बड़ा नाम स्टेफी ग्राफ का है। चार साल की उम्र में टेनिस शुरू करने वाली ग्राफ ने सिर्फ 13 साल की उम्र में अंतरराष्ट्रीय कोर्ट में कदम रख दिया था। 17 साल लंबे अपने करियर के दौरान वह दुनिया की सर्वाधिक प्रभावशाली खिलाड़ियों में रहीं और टेनिस के प्रशंसकों के दिलों में अपने जोरदार खेल की बदौलत अमिट छाप छोड़ी।

14 जून 1969 को जर्मनी के मैनहेम में जन्मीं स्टेफी ग्राफ का करियर 1982 से लेकर 1999 तक था। 1982 से 1990 तक वह वेस्ट जर्मनी और 1990 से 1999 तक जर्मनी की तरफ से खेलीं। 17 साल के करियर में 377 सप्ताह तक लगातार वह दुनिया की नंबर एक खिलाड़ी रहीं। आठ बार उन्होंने कैलेंडर ईयर की समाप्ति नंबर वन रैंक के साथ की। ग्राफ दुनिया की एकमात्र टेनिस खिलाड़ी हैं जिन्होंने सभी चार मेजर ग्रैंड स्लैम (यूएस ओपन, ऑस्ट्रेलियन ओपन, फ्रेंच ओपन, विंबलडन) कम से कम चार बार जीते हैं। ग्राफ कोर्ट पर अपनी इंटेंसिटी, गति और पावरफुल फोरहैंड के लिए जानी जाती थीं।

ग्राफ ने महिला एकल में कुल 22 ग्रैंड स्लैम जीते हैं। 13 अगस्त 1999 को जब उन्होंने टेनिस कोर्ट को अलविदा कहा था, उस समय वह इस खेल की दूसरी सर्वाधिक सफल खिलाड़ी थीं। उनसे आगे मार्गरेट कोर्ट थीं, जिनके नाम सर्वाधिक 24 ग्रैंड स्लैम पुरस्कार जीतने का रिकॉर्ड था। सेरेना विलियम्स ने 2017 में 23वां ग्रैंड स्लैम जीतकर ग्राफ को पीछे छोड़ दिया था। ग्राफ ने करियर में कुल 107 खिताब जीते। अमेरिका की एसोसिएट प्रेस ने ग्राफ को 20वीं सदी का महानतम खिलाड़ी घोषित किया था।

क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने 8 साल के प्यार के बाद जॉर्जिना रोड्रिग्ज से की सगाई

● करोड़ों में है अंगूठी की कीमत

नई दिल्ली, एजेंसी। दिग्गज फुटबॉलर क्रिस्टियानो रोनाल्डो ने आखिरकार लंबे समय (करीब 8 साल) से अपनी गर्लफ्रेंड जॉर्जिना रोड्रिग्ज से सगाई कर ली। जॉर्जिना रोड्रिग्ज ने इंस्टाग्राम पर तस्वीर पोस्ट कर इसकी पुष्टि की। तस्वीर में वह अपनी अंगुली में अंगूठी पहने हुए हैं। जॉर्जिना रोड्रिग्ज ने तस्वीर के कैप्शन में लिखा, 'हां मैंने की। अभी और मेरे पूरे जीवन में भी।'

जॉर्जिना ने इंस्टाग्राम पर की सगाई की पुष्टि

जॉर्जिना रोड्रिग्ज ने इंस्टाग्राम पर जो तस्वीर शेयर की है उसमें क्रिस्टियानो रोनाल्डो भी दिख रहे हैं। जॉर्जिना ने रोनाल्डो को टैग भी किया है। रोनाल्डो ने खुद अब तक इंटरनेट पर कुछ भी पोस्ट नहीं किया है। चूंकि रोनाल्डो और जॉर्जिना लंबे समय से साथ हैं और अब अपने रिश्ते में एक नया कदम उठा रहे हैं। ऐसे में यह देखना दिलचस्प होगा कि यह जोड़ा कब शादी के बंधन में बंधता है।

विशेषज्ञ लगा रहे अंगूठी की कीमत का अनुमान

जैसे ही सगाई की अंगूठी की तस्वीर सोशल मीडिया पर सामने आई, विभिन्न विशेषज्ञों ने इसकी कीमत का आकलन करना शुरू कर दिया। अंगूठी 5 सेंटीमीटर से ज्यादा लंबी लग रही थी, जिसमें बीच में एक प्रमुख अंडाकार हीरा और दो छोटे रत्न जड़े थे। आभूषण विशेषज्ञों ने अंगूठी की कीमत का अनुमान लगाना शुरू कर दिया है।

ब्रियोनी रेमंड के अनुसार, मुख्य अंडाकार हीरा 25 से 30 कैरेट के बीच हो सकता है, जबकि अन्य विशेषज्ञों का मानना है कि यह कम से कम 15 कैरेट का होना चाहिए। जौहरी फ्रैंक डार्लिंग के संस्थापक केगन फिशर के अनुसार, दोनों तरफ के हीरे लगभग 1 कैरेट के लग रहे हैं।

16.8 से 42 करोड़ तक हो सकती है अंगूठी की कीमत

हीरे की गुणवत्ता और आकार से पता चलता है कि यह बिल्कुल प्रीमियम है और पेशेवर मूल्यांकन 2 से 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर (लगभग 16.8 करोड़ से 42 करोड़ रुपये) के बीच है। लॉरेल डायमंड्स की लॉरा टेलर का सुझाव है कि अंगूठी की न्यूनतम कीमत 2 मिलियन अमेरिकी डॉलर होगी, जबकि रेयर कैरेट के सीईओ अजय आनंद ने अंगूठी की कीमत 5 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक आंकी है।

5 बच्चों के पिता हैं रोनाल्डो

क्रिस्टियानो रोनाल्डो के जॉर्जिना रोड्रिग्ज से तीन बच्चे भी हैं। जॉर्जिना ने 12 नवंबर 2017 को बेटी अलाना मार्टिना को जन्म दिया। इसके बाद 18 अप्रैल 2022 को उन्होंने बेटी बेला एस्मेराल्डा और बेटे एंजेल को जन्म दिया, लेकिन दुर्भाग्य से जन्म के कुछ समय बाद ही एंजेल की मौत हो गई। क्रिस्टियानो रोनाल्डो 3 और बच्चों (क्रिस्टियानो जूनियर, माटओ और ईवा) के पिता हैं।

क्रिस्टियानो जूनियर की मां की पहचान हमेशा गुप्त रखी गई है, जबकि जुड़वां बच्चे माटेओ और ईवा सरोगेसी के जरिए पैदा हुए थे। जॉर्जिना ने काफी समय पहले एक पत्रिका दिए साक्षात्कार में बताया था कि सभी बच्चों को उन्होंने जन्म नहीं दिया, लेकिन वह उन्हें अपने बच्चे ही मानती हैं और वे बच्चे उन्हें मां कहते हैं।

कौन हैं जॉर्जिना रोड्रिग्ज?

जॉर्जिना एक सोशल मीडिया हस्ती, मॉडल और उद्यमी हैं। 31 साल की जॉर्जिना का जन्म अर्जेंटीना में हुआ और बाद में उनका पालन-पोषण स्पेन में हुआ। रोनाल्डो ने 2017 में उनके साथ अपने रिश्ते की पुष्टि की थी। दोनों पहली बार सार्वजनिक रूप से ज्यूरिख में फीफा फुटबॉल अवार्ड्स में साथ नजर आए थे। जॉर्जिना रोनाल्डो के साथ मैनचेस्टर यूनाइटेड, रियल मैड्रिड और जुवेंटस के लिए खेलते हुए यात्रा करती थीं।

भगवान विश्वकर्मा मंदिर और राम जानकी मंदिर में चोरी करने वाले पुलिस की गिरफ्त से बाहर

विश्वकर्मा समाज के लोगों ने पुलिस अधीक्षक को सौंपा ज्ञापन

पन्ना। शहर में चोरी की वारदातें लगातार बढ़ रही हैं शहर के सीसीटीवी कैमरे सुप्त अवस्था में पड़े हुए हैं, चोरों की हौसले लगातार बुलंद हो रहे हैं, पन्ना शहर में आए दिन चोरी की वारदातें बढ़ती जा रही हैं।

पन्ना शहर में स्थित खेजड़ा मंदिर के ऊपर पिछले पांच अगस्त की रात को अज्ञात चोरों द्वारा भगवान श्री विश्वकर्मा जी मंदिर एवं राम जानकी मंदिर दोनों मंदिरों के एक साथ ताले तोड़कर भगवान विश्वकर्मा जी के कीमती अस्त्र-शास्त्र अज्ञात चोर धड़ल्ले से दोनों मंदिरों का ताला तोड़कर फरार हो गए। चोरों का सुराग अभी तक नहीं लग पा रहा है जिस कारण समाज के लोगों में आक्रोश व्याप्त है मामले को

लेकर समाज के लोगों ने एकत्र होकर पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सोपा है।

विश्वकर्मा समाज के लोगों ने पुलिस अधीक्षक से मांग की गई कि जो भगवान विश्वकर्मा जी के अमूल्य और कीमती अस्त्र-शास्त्र जिसमें भगवान विश्वकर्मा जी के हाथों में लिए हुए कलश, कटोरा , हथोड़ा, ज्वाला खप्पर ,त्रिशूल , भाला, चिमटा एवं ढाल सभी ठोस धातु के बने हुए और मंदिर में रखा हुआ पीतल का घंटा झालर इत्यादि सामान चोरी कर लिया गया था, उक्त सामान की चोरी करने वाले चोरों को जल्द से जल्द गिरफ्तार किया जाए, और भगवान के अस्त्र-शस्त्र वापस किए जाएं।

अगर जल्द से जल्द चोरों की गिरफ्तारी नहीं होती तो समाज को एकत्र होकर आंदोलन के लिए विवश होना पड़ेगा। ज्ञापन देने वालों में प्रमुख रूप से मुकेश कुमार विश्वकर्मा अध्यक्ष श्री विश्वकर्मा सेवा संस्थान, श्री गोविंद विश्वकर्मा सचिव विश्वकर्मा सेवा संस्थान , लाल जी विश्वकर्मा कोषाध्यक्ष, मनीष विश्वकर्मा ,धीरज विश्वकर्मा ,सोहन विश्वकर्मा, अशोक विश्वकर्मा ,मुकेश विश्वकर्मा ,ओम प्रकाश विश्वकर्मा ,मनीष विश्वकर्मा (सेल टैक्स),विजय विश्वकर्मा ,नरेंद्र विश्वकर्मा इत्यादि लोग सम्मिलित रहे।

तलैया में डूबे युवक् का मिला शव, एसडीआरएफ की टीम ने किया बरामद

पन्ना। पन्ना जिले के गुनौर थाना अंतर्गत हरद्वाही के तालाब में काजलिया विसर्जन करते हुए एक युवक जनक लाल प्रजापति डूब गया था जिसको निकालने का प्रयास स्थानीय लोगों द्वारा किया लेकिन उसका कुछ पता नहीं चला घटना की जानकारी गुनौर थाना पुलिस तथा एसडीआरएफ की टीम को दी गई एसडीआरएफ की टीम द्वारा तालाब में अपने उपकरणों के माध्यम से शव को ढूंढा गया जो दूसरे दिन बरामद हुआ हैउक्त टीम सतपाल जैन के नेतृत्व में लगातार कार्य करती है तथा उन्हें सफलता मिली एसडीआरएफ की टीम द्वारा शव को गुनौर थाना पुलिस के सुपुर्द किया थाना पुलिस द्वारा शव का पोस्टमार्टम कराकर शव परिजनों को सौंप दिया।

आदिवासी बस्ती मजरा ककराइया में नहीं है सड़क मार्ग

ग्राम के लोग परेशान, विधायक के आश्वासन के बाद नहीं बनी सड़क, सौंपा ज्ञापन

पन्ना। पन्ना तहसील अंतर्गत ग्राम पंचायत इटवा खास के मजरा ककराइया में आजादी के 75 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं लेकिन आज दिनांक तक सड़क मार्ग का निर्माण नहीं किया जा सका जिससे बरसात के समय में लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ता है बीमार होने एवं डिलीवरी होने के दौरान चारपाई पर मरीज को बृजपुर तक लाना पड़ता है। उसके साथी बच्चे स्कूल नहीं पहुंच पाते हैं क्योंकि कीचड़ से सुना हुआ रास्ता है ग्रामीणों ने महिला बच्चों के साथ पन्ना पहुंचकर कलेक्टर के नाम दिए गए ज्ञापन में बताया कि हम लोगों द्वारा लगातार सड़क निर्माण कराए जाने की मांग की है लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है चुनाव के समय पूर्व मंत्री तथा विधायक बृजेंद्र प्रताप सिंह भी गांव में आए

थे तथा उन्होंने सड़क निर्माण कराए जाने का श्वसन दिया था लेकिन वह भी सड़क निर्माण कराने का कार्य भूल गए उन्होंने बताया कि दिनांक 4 अगस्त को छोटे लाल आदिवासी की पत्नी पूनम गोंडा को डिलीवरी होनी थी चारपाई पर लाद कर ब्रिज पुर ले जाया गया रास्ते में पानी गिरने के चलते पूनम की तबीयत अभी तक खराब है ग्राम वासियों ने तत्काल सड़क निर्माण कार्य कराए जाने की मांग की है ज्ञापन देने वालों में हरिराम गोंड भोला गोंड मनीराम रमेश सुरेश जग्गू तथा भारी संख्या में बच्चे एवं महिलाएं उपस्थित रहे।

भगवती मानव कल्याण संगठन ने पकड़ी भारी मात्रा में अवैध शराब

पिकअप वाहन सहित एक सौ उन्नीस पेटी अवैध शराब रेपुरा पुलिस के किया हवाले

तिरंगा यात्रा की जगह घर-घर पहुंचाई जा रही अवैध शराब

पन्ना। पन्ना जिले में पूरे जिले का एक ही। शराब ठेकेदार होने के चलते जिला मुख्यालय से लेकर जिले भर में गांव-गांव ठेकेदार के लोगों द्वारा अवैध शराब पहुंचाई जा रही है तथा युवा पीढ़ी को नशे की गिरफ्त में धकेला जा रहा है लगातार उक्त मामले को लेकर लोगों द्वारा पुलिस एवं आबकारी विभाग को अवगत कराया जा रहा

है छुटपुट कार्यवाहियां होती हैं लेकिन ठेकेदार इतना पावरफुल है कि अवैध शराब पर कोई प्रतिबंध नहीं लग रहा है इसी प्रकार का मामला रैपुरा थाना अंतर्गत का सामने आया है जहां पर भगवती मानव कल्याण संगठन के सदस्यों द्वारा एक पिक अप भर अवैध शराब 119 पेटी पकड़ी गई जिसका परमिट अमानगंज से बघवार कला के लिए बनाया गया था लेकिन उक्त पिकअप द्वारा गांव-गांव अवैध शराब विक्रय की जा रही थी किराना दुकानों तथा चिन्हित स्थानों पर दी जा रही थी जिसको पड़कर संगठन द्वारा रैपुरा पुलिस को बुलाकर सुपुर्द किया गया तथा संबंधित ठेकेदार पर कार्रवाई की मांग की गई है ज्ञात होगी एक दिन पूर्व अजयगढ़ क्षेत्र में भी अवैध शराब बेचते हुए ठेकेदार के आदमी पकड़े गए थे।

कलेक्टर ने नर्सिंग ऑफीसर सुनीता सनौडिया को बच्चा वार्ड के प्रभार से हटाया

असंचयी प्रभाव से तीन वेतनवृद्धि भी रोकी

प्रियंका सिंह महदेले एवं शिवानी केवट की भी रूकेगी एक-एक वेतनवृद्धि

जिला चिकित्सालय के बच्चा वार्ड में लापरवाही पर हुई कार्रवाई

पन्ना। कलेक्टर सुरेश कुमार ने गत 16 जुलाई को जिला चिकित्सालय पन्ना के बच्चा वार्ड में भर्ती बच्चे जिशान बेग के उपचार में लापरवाही बरतने पर लापरवाह नर्सिंग ऑफीसर के विरूद्ध कड़ी कार्रवाई की है, जिसके तहत वृहद स्तर पर नर्सिंग आफीसर सुनीता सनौडिया की लापरवाही पाए जाने पर इनको बच्चा वार्ड के प्रभार से पृथक करने के साथ ही आगामी तीन वेतनवृद्धि भी असंचयी प्रभाव से रोकी गई है, जबकि इस प्रकरण में लापरवाही पर नर्सिंग ऑफीसर प्रियंका सिंह महदेले और शिवानी केवट की भी एक-एक वेतनवृद्धि रोकने की कार्यवाही की गई है। जिला कलेक्टर ने समाचार पत्रों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से यह मामला संज्ञान में आने पर संबंधित के विरूद्ध जांच कर अनुशासनात्मक कार्यवाही के निर्देश दिए थे। सिविल सर्जन सह मुख्य अस्पताल अधीक्षक द्वारा इस मामले की जांच के लिए चार सदस्यीय जांच समिति का गठन किया गया था।

जांच समिति द्वारा प्रस्तुत प्रतिवेदन में उल्लेख है कि बच्चा वार्ड प्रभारी सुनीता सनौडिया द्वारा वार्ड में स्थापित स्टोर में समय-समय पर उपलब्ध दवाईयों का अवलोकन नहीं किया जाता। 16 जुलाई को भी स्टोर से भर्ती बच्चे को दवाईयां निकालते समय समाप्ति तिथि का अवलोकन नहीं किया गया। इससे नर्सिंग ऑफीसर को प्राथमिक जांच के दौरान ही प्रथम दृष्टया दोषी पाया गया। इसके अतिरिक्त 23 जुलाई को कारण बताओ नोटिस जारी कर नर्सिंग ऑफीसर से जवाब चाहा गया, लेकिन समाधानकारक जवाब प्रस्तुत नहीं किया गया और प्रतिवाद उत्तर व जांच समिति द्वारा पूछे गए प्रश्न में भी भिन्नता पाई गई, जबकि नर्सिंग ऑफीसर का दायित्व था कि बच्चा वार्ड में भर्ती बच्चों को उपचारित करने के लिए दवाईयों और बोतलों का स्वयं अवलोकन कर प्रदान किया जाना था।

जिला कलेक्टर द्वारा उक्त लापरवाही के दृष्टिगत संबंधित के विरूद्ध मध्यप्रदेश सिविल सेवा (वर्गीकरण, नियंत्रण तथा अपील) नियम 1966 के नियम 10(5) के तहत क्रमशः 01.07.2026, 01.07.2027 एवं 01.07.2028 की तीन वार्षिक वेतनवृद्धि असंचयी प्रभाव से रोकने के दण्ड से दण्डित किया गया है। इसी क्रम में दायित्वों के निर्वहन में असफल रहने पर नर्सिंग ऑफीसर प्रियंका सिंह महदेले तथा शिवानी केवट की 01.07.2026 की वार्षिक वेतनवृद्धि असंचयी प्रभाव से रोकने की कार्यवाही भी की गई है।

कमिश्नर ने शासकीय सेवकों को मिलने वाले स्वत्वों का भुगतान समय-सीमा में करने के दिए निर्देश

पन्ना। कमिश्नर सागर संभाग अनिल सुचारी ने संभाग के समस्त कलेक्टर, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं सभी आहरण-संवितरण अधिकारियों को सर्वोच्च प्राथमिकता के साथ निर्देशित करते हुए कहा है कि विभिन्न विभागों के सेवानिवृत्त अधिकारी-कर्मचारियों के स्वत्वों का भुगतान समय-सीमा में करें। उन्होंने निर्देश देते हुए कहा कि अधिकारियों व कर्मचारियों को प्रतिमाह समय पर वेतन भुगतान के साथ-साथ उनके लंबित वेतन भत्तों, वेतनवृद्धियां, वेतन निर्धारण, सेवा सत्यापन, सेवा पुस्तिका एवं जीपीएफ व डीपीएफ पासबुक की द्वितीय प्रति प्रदाय करना, चिकित्सा प्रतिपूर्ति देयकों, अर्जित अवकाश नकदीकरण, समूह बीमा योजना, ग्रेच्युटी, जीपीएफ, डीपीएफ, एनपीएस का अंतिम भुगतान, लंबित पेंशन प्रकरण की जानकारी, लंबितीकरण के निराकरण हेतु समुचित कार्यवाही कर कार्यवाही का प्रतिवेदन कार्यालय में पाक्षिक रूप से भिजवाएं।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत निकाली गई तिरंगा साइकिल रैली

सतना। राज्य शासन के निर्देशानुसार सतना जिले में 2 अगस्त से 15 अगस्त तक हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता, स्वतंत्रता का उत्सव-स्वच्छता के संग अभियान चलाया जा रहा है। कमिश्नर रीवा संभाग बीएस जामोद की पहल पर पर्यावरण संरक्षण का संदेश देने संभाग के सभी जिलों में प्रत्येक मंगलवार को साइकिल डे मनाया जाता है। इस दिन सभी शासकीय अधिकारी-कर्मचारी पेट्रोल और डीजल चलित वाहन का उपयोग नहीं करते हुए साइकिल द्वारा घर से कार्यालय आना-जाना करते हैं। दूसरे मंगलवार को हर घर तिरंगा अभियान के तहत पुलिस परेड ग्राउंड से कलेक्टर सतना डॉ. सतीश कुमार

एस और पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता के नेतृत्व में तिरंगा साइकिल यात्रा निकाली गई। कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक सहित सभी अधिकारी अपने-अपने घर से साइकिल पर तिरंगा झंडा लगाकर पुलिस परेड ग्राउंड पहुंचे और तिरंगा साइकिल रैली में शामिल हुए। कलेक्टर ने हरी झण्डी दिखाकर तिरंगा साइकिल रैली को पुलिस परेड ग्राउण्ड से रवाना किया और स्वयं भी रैली में शामिल हुए। तिरंगा साइकिल रैली कोठी तिराहा, सिविल लाइन चौक, राजेन्द्र नगर, जवाहर नगर होते हुए कलेक्ट्रेट पहुंची। रैली के समापन पर कलेक्ट्रेट परिसर में उपस्थित अधिकारी-कर्मचारियों तथा सभी प्रतिभागियों को कलेक्टर द्वारा स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। साइकिल डे के अवसर पर अधिकारी-कर्मचारी साइकिल चलाते हुए रैली के साथ कलेक्ट्रेट परिसर स्थित अपने दफ्तर पहुंचे। साइकिल तिरंगा रैली में नगर निगम आयुक्त शेर सिंह मीना, सहायक कलेक्टर अनिकेत शांडिल्य, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक शिवेश सिंह बघेल, एसडीएम राहुल सिलाडिया, डिप्टी कलेक्टर बीके मिश्रा, तहसीलदार सौरभ मिश्रा, जिला आबकारी अधिकारी नवीनचन्द्र पाण्डेय, आरटीओ संजय श्रीवास्तव, खेल अधिकारी एसपी तिवारी सहित अधिकारी-कर्मचारी तथा बडी संख्या में छात्र-छात्रायें शामिल हुए।

नगर परिषद रामपुर बघेलान में तिरंगा यात्रा आयोजित

सतना। राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले में द्वारा हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता-स्वतंत्रता का उत्सव, स्वच्छता के संग विशेष अभियान चलाया जा रहा है। मंगलवार को नगर परिषद रामपुर बघेलान के शासकीय कन्या हायर सेकेंड्री स्कूल से चलकर रामपुर बस स्टैंड में संपन्न हुई। हर घर तिरंगा हर घर स्वच्छता के नारों से सम्पूर्ण नगरवासियों के बीच स्वच्छता का संदेश दिया गया। तिरंगा यात्रा में एसडीएम आरएन खरे, मुख्य नगर पालिका अधिकारी अरुण कुमार श्रीवास्तव, नगर परिषद उपाध्यक्ष रामकुमार आदिवासी, पूर्व उपाध्यक्ष कमलेश कचेर, पार्षद शिवांक त्रिपाठी, अब्दुल इसहाक खा, नीलेंद्र सिंह, सुदर्शन आदिवासी, सुखलाल बंसल, इंजी. विश्वजीत कुशवाहा, कन्या विद्यालय के प्राचार्य संदीप वर्मा, स्वच्छता प्रभारी इजराइल सौदागर, आकाशदीप सेन, रामविश्वास कुशवाहा, सुरेंद्र सिंह सहित कन्या विद्यालय की छात्रायें, आचार्य शिक्षिका तथा नगर परिषद रामपुर बघेलान के कर्मचारी शामिल हुए।

पंचायत उन्नति सूचकांक में अव्वल 10 ग्राम पंचायतें पुरूस्कृत

कलेक्टर और जिला पंचायत अध्यक्ष ने किया पुस्तिका का विमोचन

सतना। पीएआई 1.0 पंचायत उन्नति सूचकांक में अव्वल रही सतना और मैहर जिले की अग्रिम 10 ग्राम पंचायतों को मंगलवार को जिला पंचायत सतना के सभागार में आयोजित कार्यक्रम में समारोह पूर्वक नकद पुरूस्कार और प्रशस्ति पत्र से पुरूस्कृत किया गया। जिला पंचायत अध्यक्ष श्री रामखेलावन कोल और कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पंचायत उन्नति सूचकांक पुस्तिका का विमोचन भी किया गया। इस अवसर पर जिला पंचायत की उपाध्यक्ष सुस्मिता सिंह, संचार संकर्म समिति के सभापति ज्ञानेन्द्र सिंह, जिला पंचायत सदस्य जयंती तिवारी, रमाकांत पयासी, सीईओ जिला पंचायत संजना जैन सहित जिला पंचायत के अधिकारी एवं ग्राम पंचायतों के सचिव-सरपंच उपस्थित रहे। जिला पंचायत की सीईओ संजना जैन ने आयोजन की जानकारी में बताया कि पंचायत उन्नति सूचकांक में कुल 151 सूचकांकों पर बेहतर काम करने वाली ग्राम पंचायतों को पुरूस्कृत किया जाता है। इनमें 9 सूचकांक विभिन्न शासकीय विभागों से संबंधित है। सतना और मैहर जिले की ग्राम पंचायतें अच्छा काम कर रही है। ग्राम पंचायतों को स्वास्थ्य, महिला बाल विकास के क्षेत्र में और प्रयास करने तथा सर्विस डिलीवरी सुधारने की दिशा में और प्रयास करने की जरूरत है।

मैहर जिले में निकाली गई तिरंगा रैली यात्रा

मैहर। राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले में द्वारा हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता-स्वतंत्रता का उत्सव, स्वच्छता के संग विशेष अभियान चलाया जा रहा है। मैहर जिले में भारतीय सेना गौरव एवं पराक्रम दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। मंगलवार को मैहर जिले में तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा रैली यात्रा मैहर जिले के घंटाघर से होते हुए अग्रसेन तिराहे में संपन्न हुई। तिरंगा रैली यात्रा में विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी, कलेक्टर रानी बाटड, अपर कलेक्टर शैलेन्द्र सिंह, पूर्व मंत्री रामखेलावन पटेल, एसडीएम विकास सिंह, विकास तिवारी, संतोष सोनी सहित स्कूली छात्र-छात्राओं एवं जनप्रतिनिधि, नगरवासी शामिल रहे। तिरंगा रैली यात्रा रामनगर में नवागत एसडीएम एसपी मिश्रा के नेतृत्व में निकाली गई।

इसी प्रकार मैहर जिले के ग्राम बेरमा में हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत तिरंगा यात्रा निकाली गई। तिरंगा रैली यात्रा का शुभारंभ ग्राम महेदर होते हुए शहीद संपत साहू स्मारक में समापन किया गया। इस अवसर पर मैहर विधायक श्रीकांत चतुर्वेदी ने शहीद स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित कर कार्यकर्ताओं एवं ग्रामवासियों को संबोधित किया। तिरंगा रैली के कार्यक्रम में राष्ट्रभक्ति और एकता का संदेश दिया गया। तिरंगा यात्रा में दिनेश कुशवाहा, यात्रा प्रभारी जिला पंचायत सदस्य जयंती तिवारी, मंडल पदाधिकारी और बूथ कार्यकर्ता तथा बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण जन शामिल हुए।

देशभक्ति के गीतों से गुंजायमान तिरंगा साइकिल यात्रा की रही धूम

हर घर तिरंगा अभियान स्वतंत्रता के वीरों का नमन है : कमिश्नर

सतना। रीवा में हर घर तिरंगा अभियान जोर-शोर से चलाया जा रहा है। अभियान के तहत शहर के प्रमुख मार्गों से तिरंगा साइकिल यात्रा निकाली गई। रिमझिम फुहारों के बीच पूरे उत्साह के साथ अधिकारियों, खिलाड़ियों तथा विद्यार्थियों ने रैली में भाग लिया। रैली के दौरान पूरा मार्ग देशभक्ति के गीतों से गुंजायमान रहा। रैली का नेतृत्व रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने किया। रैली का शुभारंभ स्पोर्ट्स काम्पलेक्स से हुआ। इस अवसर पर कमिश्नर श्री जामोद ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान स्वतंत्रता संग्राम के वीरों का नमन है। हमने बड़ी कुर्बानियाँ देकर आजादी पाई है। देश को स्वतंत्र कराने में हजारों वीरों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। तिरंगा हाथ में लेकर और भारतमाता की जय तथा वंदे मातरम कहते हुए वीरों ने देश के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर दिए। हम सब स्वतंत्रता दिवस तक हर घर तिरंगा अभियान में सहभागी बनकर देश के गौरव का यशगान करें। अपने घरों में तिरंगा फहराकर गौरव और उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाएं। इसके साथ-साथ अपने घरों और आसपास साफ-सफाई अभियान चलाकर स्वच्छता का संदेश दें। हमारा परिवेश स्वच्छ रहेगा तभी हम सब स्वस्थ रहेंगे। आज की रैली में जो साइकिल सवार शामिल हुए हैं वे सब देशभक्ति का संदेश देने वाले दूत हैं। हर नागरिक हर घर तिरंगा अभियान में सहभागी बनकर देश के गौरव और सम्मान में अपना योगदान दें।

साइकिल रैली स्पोर्ट्स काम्पलेक्स से शुरू होकर मुख्य मार्ग खुटेही होते हुए सिरमौर चौराहा पहुंची। इसके बाद रैली अमहिया, अस्पताल चौराहा तथा प्रकाश चौराहा होते हुए शिल्पी प्लाजा बाजार पहुंची। रिमझिम फुहारों की बीच रैली मानस भवन से होती हुई कालेज चौराहे में विवेकानंद पार्क में समाप्त हुई। पार्क में विवेकानंद जी की प्रतिमा के समक्ष तिरंगे फहराकर सामूहिक रूप से भारतमाता की जय और वंदे मातरम के नारे लगाए गए। रैली के शुभारंभ पर सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। रैली में डीआईजी राजेश सिंह, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने सहभागिता की। रैली में लद्दाख से भारत यात्रा पर निकले साइकलिस्ट सुबोध गंगुर्दे और रीवा के चैंपियन साइकलिस्ट ने भी तिरंगे के साथ शिरकत की। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन संभागीय खेल अधिकारी एमके धौलपुरी ने किया। रैली में संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, प्रभारी संयुक्त संचालक कृषि प्रीति द्विवेदी, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ आरपी सिंह, अधीक्षण यंत्री पीएचई महेन्द्र सिंह, संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन मयंक वर्मा, नगर निगम के अधिकारियों, खिलाड़ियों, विद्यार्थियों तथा आमजनों ने भाग लिया।

स्वतंत्रता दिवस के मुख्य समारोह में कलेक्टर करेंगे ध्वाजारोहण

सतना। स्वतंत्रता दिवस का जिला स्तरीय मुख्य समारोह 15 अगस्त को प्रातः 9 बजे स्थानीय पुलिस परेड ग्राउण्ड सतना में आयोजित किया गया है। मुख्य समारोह में सतना कलेक्टर डॉ. सतीश कुमार एस ध्वाजारोहण कर परेड की सलामी लेंगे। मुख्य समारोह स्वतंत्रता दिवस समारोह के पल-प्रतिपल निर्धारित कार्यक्रमानुसार 15 अगस्त को प्रातः 9 बजे मुख्य अतिथि का आगमन होगा। मुख्य अतिथि प्रातः 9 बजे से 9.05 तक ध्वजारोहण कर सलामी लेंगे। प्रातः 9.05 बजे से 9.25 तक परेड का निरीक्षण मार्च पास्ट, प्रातः 9.25 बजे से 9.55 बजे तक मुख्यमंत्री जी के संदेश के वाचन का सीधा प्रसारण किया जायेगा। प्रातः 9.55 बजे से 10 बजे तक मुख्य अतिथि द्वारा बधाई संदेश का वाचन, प्रातः 10 बजे से 10.30 तक पीटी एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का प्रदर्शन तथा प्रातः 10.30 बजे से पुरूस्कार एवं प्रशस्ति पत्र का वितरण किया जायेगा।

सिटी टाइगर

विन्ध्य टाइगर | सीधी, बुधवार 13 अगस्त 2025 | 8

उप मुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ल ने हर घर तिरंगा अभियान अंतर्गत भोपाल स्थित शासकीय आवास पर तिरंगा फहराया। उन्होंने प्रदेशवासियों से अपील की है कि वे अपने घर, कार्यालय और प्रतिष्ठानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराकर राष्ट्रप्रेम की भावना को और सशक्त करें।

देशभक्ति के गीतों से गुंजायमान तिरंगा साइकिल यात्रा की रही धूम

हर घर तिरंगा अभियान स्वतंत्रता के वीरों का नमन है : कमिश्नर

रीवा। रीवा में हर घर तिरंगा अभियान जोर-शोर से चलाया जा रहा है। अभियान के तहत शहर के प्रमुख मार्गों से तिरंगा साइकिल यात्रा निकाली गई। रिमझिम फुहारों के बीच पूरे उत्साह के साथ अधिकारियों, खिलाड़ियों तथा विद्यार्थियों ने रैली में भाग लिया। रैली के दौरान पूरा मार्ग देशभक्ति के गीतों से गुंजायमान रहा। रैली का नेतृत्व रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद ने किया। रैली का शुभारंभ स्पोर्ट्स काम्पलेक्स से हुआ। इस अवसर पर कमिश्नर श्री जामोद ने कहा कि हर घर तिरंगा अभियान स्वतंत्रता संग्राम के वीरों का नमन है। हमने बड़ी कुर्बानियाँ देकर आजादी पाई है। देश को स्वतंत्र कराने में हजारों वीरों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। तिरंगा हाथ में लेकर और

भारतमाता की जय तथा वंदे मातरम कहते हुए वीरों ने देश के लिए अपने प्राण उत्सर्ग कर दिए। हम सब स्वतंत्रता दिवस तक हर घर तिरंगा अभियान में सहभागी बनकर देश के गौरव का यशगान करें। अपने घरों में तिरंगा फहराकर गौरव और उल्लास के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाएं। इसके साथ-साथ अपने घरों और आसपास साफ-सफाई अभियान चलाकर स्वच्छता का संदेश दें। हमारा परिवेश स्वच्छ रहेगा तभी हम सब स्वस्थ रहेंगे। आज की रैली में जो साइकिल सवार शामिल हुए हैं वे सब देशभक्ति का संदेश देने वाले दूत हैं। हर नागरिक हर घर तिरंगा अभियान में सहभागी बनकर देश के गौरव और सम्मान में अपना योगदान दें।

साइकिल रैली स्पोर्ट्स काम्पलेक्स से शुरू होकर मुख्य मार्ग खुटेही होते हुए सिरमौर चौराहा पहुंची। इसके बाद रैली अमहिया, अस्पताल चौराहा तथा प्रकाश चौराहा होते हुए शिल्पी प्लाजा बाजार पहुंची। रिमझिम फुहारों की बीच रैली मानस भवन से होती हुई कालेज चौराहे में विवेकानंद पार्क में समाप्त हुई। पार्क में विवेकानंद जी की प्रतिमा के समक्ष तिरंगे फहराकर सामूहिक रूप से भारतमाता की जय और वंदे मातरम के नारे लगाए गए। रैली के शुभारंभ पर सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई। रैली में डीआईजी राजेश सिंह, आयुक्त नगर निगम डॉ सौरभ सोनवड़े तथा जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी मेहताब सिंह गुर्जर ने सहभागिता की। रैली में लद्दाख से भारत यात्रा पर निकले साइकलिस्ट सुबोध गंगुर्दे और रीवा के चैंपियन साइकलिस्ट अमन मिश्रा ने भी तिरंगे के साथ शिरकत की। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन संभागीय खेल अधिकारी एमके धौलपुरी ने किया। रैली में संयुक्त संचालक सामाजिक न्याय अनिल दुबे, प्रभारी संयुक्त संचालक कृषि प्रीति द्विवेदी, अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा डॉ आरपी सिंह, अधीक्षण यंत्री पीएचई महेन्द्र सिंह, संयुक्त संचालक नगरीय प्रशासन मयंक वर्मा, नगर निगम के अधिकारियों, खिलाड़ियों, विद्यार्थियों तथा आमजनों ने भाग लिया।

जनसुनवाई में 82 आवेदकों ने दिये आवेदन

संबंधित विभागों को आवश्यक कार्यवाही के दिये गये निर्देश

रीवा। कलेक्ट्रेट में आयोजित जनसुनवाई में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी ने 82 आवेदकों की समस्यायें सुनीं तथा संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही के निर्देश दिये। इस दौरान सहायक कलेक्टर सृष्टि जायसवाल ने भी आवेदकों की समस्यायें सुनीं।

जनसुनवाई में रामनिवास निवासी गोरगांव एवं सुहानी कुशवाहा निवासी रीवा ने नामांतरण करने तथा राजू पटेल एवं रमाकांत मिश्रा खरा निवासी व्योहरा ने नक्शा तरमीम के आवेदन दिये जिन्हें संबंधित तहसीलदार को कार्यवाही करने हेतु प्रेषित किया गया। महसांव के अरूण प्रताप सिंह, श्यामवती दाहिया, चोरहटा निवासी छकौड़ीलाल विश्वकर्मा के रास्ते से अतिक्रमण हटाने के आवेदनों को संबंधित नायब तहसीलदार को कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया। मोतीलाल त्रिपाठी कुठुलिया के संबल योजना का लाभ दिलाने के आवेदन पर श्रम अधिकारी को अनुराग साकेत छात्र के छात्रवृत्ति भुगतान के आवेदन को अतिरिक्त संचालक उच्च शिक्षा को कार्यवाही करने के लिये निर्देशित किया गया। शिवाकांत मिश्रा कमरहर के दूषित पानी को घर के सामने से निकलने को रोके जाने तथा वारिश से मकान की हुई क्षति की राशि का भुगतान कराने के आवेदनों को संबंधित एसडीएम को कार्यवाही के लिये प्रेषित किया गया।

रीवा में कलेक्टर करेंगी स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण

रीवा। जिले भर में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस उमंग और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। जिला स्तरीय भव्य समारोह एसएएफ मैदान रीवा में आयोजित होगा। समारोह की मुख्य अतिथि कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल होंगी। मुख्य अतिथि द्वारा प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण करके परेड की सलामी ली जाएगी। ध्वजारोहण के बाद सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का गायन किया जाएगा। समारोह में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के स्वतंत्रता दिवस संदेश का सजीव प्रसारण दिखाया जाएगा। इसके बाद समारोह में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। समारोह का समापन श्रेष्ठ कार्य करने वालों को पुरस्कार वितरण से होगा। स्वतंत्रता दिवस पर सभी प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओं में विशेष मध्यान्ह भोजन का आयोजन किया जा रह है। जिला, विकासखण्ड तथा ग्राम स्तर पर भी स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित किये जाएंगे। साथ ही हर घर तिरंगा अभियान के तहत आमजनों से अपने घरों में देश के गौरव के प्रति राष्ट्रध्वज फहराने तथा स्वतंत्रता दिवस समारोह में भागीदारी निभाने की अपील की गई है।

सघन जागरूकता अभियान के तहत बाइक रैली को दिखाई गई हरी झण्डी

रीवा। संजय गाँधी परिसर स्थित ओ.पी.डी. के समीप जिला क्षय केन्द्र से सघन जागरूकता अभियान कार्यक्रम का शुभारंभ पूर्व महापौर वीरेन्द्र गुप्ता, डॉ. संजीव शुक्ला मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, डॉ. अनुराग शर्मा जिला क्षय अधिकारी/नोडल अधिकारी एड्स नियंत्रण कार्यकम की उपस्थिति में हुआ। जन जागरूकता बाइक रैली को हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। बाइक रैली शहर के संजय गाँधी अस्पताल चौराहा होते हुये स्वागत भवन, शिल्पी प्लाजा, साई मंदिर, न्यायालय परिसर, कमिश्नर कार्यालय से मार्तण्ड स्कूल, पुराना बस स्टैण्ड, टीआरएस कालेज, सिरमौर चौराहा, से संजय गाँधी कैम्पस में समाप्त हुई। उल्लेखनीय है कि राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार प्रदेश के सभी जिलों में दिनांक 12 अगस्त से 12 अक्टूबर तक सघन जागरूकता अभियान संचालित किया जा रहा है। यह अभियान राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन का महत्वाकांक्षी अभियान है। अभियान का मुख्य उद्देश्य 15 से 49 आयुवर्ग के जनसामान्य में एचआईवी संक्रमण के प्रति जागरूकता बढ़ाना है ताकि वे एचआईवी संक्रमण के कारण, बचाव के तरीके तथा एचआईवी जांच एवं उपचार आदि के संबंध में जागरूक हो सकें तथा एचआईवी, एस.टी.आई जांच एवं उपचार सेवाओं का अधिकाधिक लाभले सकें। इस अभियान में ग्रामीण तथा शहरी बस्ती क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम संचालित किये जायेंगे।

जल निगम चला रहा हर घर तिरंगा, हर घर स्वच्छता अभियान

रीवा

शासन के निर्देशों के अनुरूप जल निगम द्वारा जिले में हर घर तिरंगा अभियान तथा हर घर स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है। इस संबंध में जल निगम के जिला प्रबंधक चित्रांशु ने बताया कि जल निगम के तहत संचालित रीवा बाणसागर समूह नलजल योजना तथा टमस समूह नलजल योजना के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। समूह नलजल योजना में शामिल गांवों में ग्राम पंचायत तथा स्थानीय अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से साइकिल रैली और तिरंगा रैली निकाली जा रही है। रैली में सभी को स्वच्छता की शपथ दिलाई जा रही है। नलजल योजनाओं से जुड़े समूहों के माध्यम से भी कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। स्कूलों तथा आंगनवाड़ी केन्द्रों में आयोजित कार्यक्रमों में भी जल निगम द्वारा सहभागिता निभाई जा रही है।

एचआईवी संक्रमण नियंत्रण संबंधी बैठक आज

रीवा। कलेक्टर श्रीमती प्रतिभा पाल की अध्यक्षता में 13 अगस्त को सुबह 11 बजे एचआईवी नियंत्रण एवं जागरूकता के संबंध में बैठक का आयोजन किया गया है। उल्लेखनीय है कि 12 अगस्त से 12 अक्टूबर तक सघन जागरूकता अभियान संचालित किया जा रहा है। सीएमएचओ डॉ. संजीव शुक्ला ने बताया कि राष्ट्रीय एड्स नियंत्रण संगठन के तत्वाधान में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में जागरूकता कार्यक्रम संचालित किये जायेंगे। संबंधितों से बैठक में उपस्थिति की अपेक्षा की गई है।

कमिश्नर और अन्य अधिकारी सुमंगल साइकिल दिवस पर साइकिल से पहुंचे कार्यालय

रीवा। रीवा संभाग के कमिश्नर बीएस जामोद की पहल पर 12 अगस्त को भी सुमंगल साइकिल दिवस मनाया गया। कमिश्नर श्री जामोद तथा अन्य अधिकारी सुबह तिरंगा साइकिल यात्रा में शामिल हुए। इसके बाद संभाग और जिला स्तर के अधिकारी तथा अधिकांश कर्मचारी साइकिल से कार्यालय पहुंचे। पर्यावरण की सुरक्षा, ईंधन की बचत और शरीर तथा मन को स्वस्थ रखने की इस पहल में अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़चढ़ कर भागीदारी निभाई। सभी संभागीय अधिकारी

सुबह 10.45 बजे कमिश्नर आवास पर एकत्रित होकर साइकिल चलाते हुए संभागीय समीक्षा बैठक में शामिल होने के लिए कमिश्नर कार्यालय पहुंचे। संभाग के सीधी जिले में कलेक्टर स्वरोचिष सोमवंशी, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी अंशुमन राज, एसडीएम गोपद बनास नीलेश शर्मा अन्य अधिकारियों के साथ साइकिल चलाते हुए कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचे। अन्य अधिकारियों-कर्मचारियों ने भी उनका अनुसरण किया। सतना जिले में कलेक्टर सतीश कुमार एस तथा पुलिस अधीक्षक आशुतोष गुप्ता तिरंगा साइकिल रैली में शामिल हुए। कलेक्ट्रेट कार्यालय से पुलिस परेड मैदान तक तिरंगा साइकिल रैली आयोजित की गई। इसमें जिला स्तर के सभी अधिकारी-कर्मचारी और विद्यार्थी भी शामिल रहे। रीवा में अपर कलेक्टर श्रीमती सपना त्रिपाठी तथा सहायक कलेक्टर सृष्टि जायसवाल ने शासकीय वाहन के स्थान पर ई रिक्शा से कार्यालय पहुंची।

गंगेव में निकाली गई विशाल तिरंगा रैली

रीवा। हर घर तिरंगा अभियान के तहत गंगेव में विशाल तिरंगा रैली निकाली गई। रैली का नेतृत्व विधायक मनगवां श्री नरेन्द्र प्रजापति तथा जनपद अध्यक्ष विकास तिवारी ने किया। इस संबंध में एसडीएम मनगवां संजय जैन ने बताया कि रैली देशभक्ति गीतों के साथ नगर के प्रमुख मार्गों से निकाली गई। रैली में 200 फिट का विशाल तिरंगा सबके आकर्षण का केन्द्र रहा। रैली में जनप्रतिनिधियों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों तथा बड़ी संख्या में आमजनों ने भाग लिया।

सीएम राइज स्कूल रघुराजगढ़ में विधिक साक्षरता शिविर सम्पन्न

रीवा। प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री राकेश मोहन प्रधान के मार्गदर्शन में एवं सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण श्री समीर कुमार मिश्र के नेतृत्व में सीएम राइज स्कूल रघुराजगढ में समाज के कमजोर एवं पात्र वर्गों को मुफ्त एवं सक्षम विधि सेवाओं को प्रदान करने तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्कूल कॉलेज के विद्यार्थियों एवं महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु जो आर्थिक या किसी अन्य विषम कारण से न्याय प्राप्त करने से वंचित रहते हैं उनके लिए विधिक

जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर को संबोधित करते हुए न्यायाधीश अंजली पारे ने विद्यार्थियों को पाक्सो एक्ट सहित नशे के दुष्प्रभाव के बारे में बताया एवं जागरूक किया। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव न्यायाधीश समीर मिश्रा द्वारा छात्र छात्राओं एवं ग्रामीण जनों को कानून के विभिन्न विषयों की जानकारी दी गई। जिला विधिक सहायता अधिकारी श्री अभय कुमार मिश्रा द्वारा प्राधिकरण के उद्देश्यों को बताया गया । सरपंच राजकुमार सिंह तिवारी द्वारा निःशुल्क विधिक सहायता योजना के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर प्राचार्य श्री मिश्रा, समाजसेवी महेंद्र दुबे, शैलेंद्र जायसवाल, सुरेश साहू, स्कूल के शिक्षक व विद्यार्थी उपस्थिति रहे।

राज्यमंत्री मऊगंज में स्वतंत्रता दिवस समारोह में करेंगे ध्वजारोहण

मऊगंज में स्वतंत्रता दिवस समारोह के मुख्य अतिथि होंगे जिले के प्रभारी मंत्री

मऊगंज। मऊगंज जिले में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस उमंग और उल्लास के साथ मनाया जाएगा। जिला स्तरीय भव्य समारोह कलेक्ट्रेट परिसर में आयोजित होगा। समारोह के मुख्य अतिथि जिले के प्रभारी मंत्री श्री लखन पटेल राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार पशुपालन एवं डेयरी विकास होंगे। मुख्य अतिथि द्वारा प्रातः 9 बजे ध्वजारोहण करके परेड की सलामी ली जाएगी। ध्वजारोहण के बाद सामूहिक रूप से राष्ट्रगान का गायन किया जाएगा। समारोह में मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के स्वतंत्रता दिवस संदेश का सजीव प्रसारण दिखाया जाएगा। इसके बाद समारोह में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। समारोह का समापन श्रेष्ठ कार्य करने वालों को पुरस्कार वितरण से होगा। इस संबंध में कलेक्टर संजय कुमार जैन ने बताया है कि स्वतंत्रता दिवस पर सभी प्राथमिक तथा माध्यमिक शालाओं में विशेष मध्यान्ह भोजन का आयोजन किया जा रह है। जिला, विकासखण्ड तथा ग्राम स्तर पर भी स्वतंत्रता दिवस समारोह आयोजित किये जाएंगे। कलेक्टर ने हर घर तिरंगा अभियान के तहत आमजनों से अपने घरों में देश के गौरव के प्रति राष्ट्रध्वज फहराने तथा स्वतंत्रता दिवस समारोह में भागीदारी निभाने की अपील की है।

जनसुनवाई में मऊगंज में 32 आवेदन प्राप्त हुए

मऊगंज। प्रत्येक मंगलवार को आयोजित होने वाली जनसुनवाई में मऊगंज में 32 आवेदन प्राप्त हुए। कलेक्ट्रेट में संयुक्त कलेक्टर राजेश मेहता ने जनसुनवाई करते हुए आवेदकों की समस्यायें सुनीं तथा संबंधित विभागों के अधिकारियों को कार्यवाही करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में बुद्धसेन कोल तिवरिगवां एवं ज्वाला प्रसाद पटेल दुवगवां ने इत्तलाबी कराने, रेखा पाण्डेय जमुई ने पीएम आवास का लाभ दिलाने, श्यामलाल कुशवाहा ने सीमांकन कराने, गणेश गिरी घोरहटा ने मकान क्षतिपूर्ति कराने, रोशनी चतुर्वेदी शाहपुर ने निवास प्रमाण पत्र बनाने तथा सुरेन्द्र पटेल कनकेशरा ने खाद्यान्न पर्ची प्रदाय करने का आवेदन प्रस्तुत किया जिन्हें संबंधित अधिकारियों को कार्यवाही करने के लिये प्रेषित किया गया।

ई आफिस में रीवा संभाग प्रदेश में दूसरे स्थान पर पहुंचा

सभी सेवानिवृत्त शासकीय सेवकों के पेंशन प्रकरण 26 अगस्त तक दर्ज करें : कमिश्नर

रीवा। कमिश्नर कार्यालय सभागार में आयोजित बैठक में कमिश्नर बीएस जामोद ने टीएल पत्रों तथा सीएम हेल्पलाइन प्रकरणों के निराकरण की समीक्षा की। बैठक में कमिश्नर ने कहा कि ई आफिस में रीवा संभाग के संभागीय कार्यालयों ने अच्छा कार्य किया है। संभाग अब प्रदेश में दूसरे स्थान पर पहुंच गया है इसके लिए मैं सभी अधिकारियों को बधाई देता हूँ। संभागीय अधिकारी जिला कार्यालयों में भी ई आफिस की व्यवस्था को प्रभावी बनाएं। रीवा संभाग में अब तक 10164 फाइलों और पत्रों का ई आफिस के माध्यम से मूवमेंट और निराकरण हुआ। सभी अधिकारी हर सप्ताह कम से कम 20 फाइलें ई आफिस के माध्यम से भेजना सुनिश्चित करें।

ई आफिस में हर सप्ताह 10 से कम फाइलों का मूवमेंट होने पर दण्डात्मक कार्यवाही की जाएगी।

बैठक में कमिश्नर ने कहा कि अभी दिसम्बर से मार्च तक सेवानिवृत्त अधिकारियों और कर्मचारियों के 34 प्रकरण लंबित हैं। इनका एक सप्ताह में निराकरण करें। कई पेंशन प्रकरण विभागीय जाँच के कारण लंबित हैं। कलेक्टर संबंधित अधिकारियों को विभागीय जाँच पूरी करके प्रकरण का निराकरण करने के निर्देश दें जिससे सेवानिवृत्त कर्मचारी के पेंशन प्रकरण का निराकरण हो सके। सभी अधिकारी 31 जुलाई तक सेवानिवृत्त सभी शासकीय सेवकों के पेंशन प्रकरण 26 अगस्त तक अनिवार्य रूप से पेंशन कार्यालय में उपलब्ध करा दें। कमिश्नर ने कहा कि संभाग के सभी जलाशय लगभग भर गए हैं। अभी वर्षाकाल एक माह से अधिक शेष है। अधिक वर्षा की स्थिति में राजस्व तथा राहत और बचाव में तैनात अधिकारी सचेत रहें। बाढ़ की स्थिति होने पर तत्काल राहत और बचाव करें। बैठक में कमिश्नर ने कहा कि समाधान आनलाइन के एजेण्डा बिन्दुओं तथा 100 दिन से अधिक समय से लंबित सीएम हेल्पलाइन के प्रकरणों का एक सप्ताह में निराकरण करें। राजस्व, खाद्य, महिला एवं बाल विकास, स्वास्थ्य, ऊर्जा, पीएचई तथा नगरीय प्रशासन विभाग प्रकरणों के निराकरण पर विशेष ध्यान दें। एक पेड़ माँ के नाम अभियान में निरंतर पौधे रोपित किए जा रहे हैं। अब तक वन विभाग द्वारा 46 लाख से अधिक पौधे रोपित किए जा चुके हैं। सभी अधिकारी रोपित पौधों की जानकारी पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज करें। हर घर तिरंगा अभियान ने हर अधिकारी और कर्मचारी सहभागिता निभाएं। अपने घरों में तिरंगा फहराकर हर घर तिरंगा अभियान में सहभागी बनें। तिरंगे के साथ सेल्फी लेकर पोर्टल पर अनिवार्य रूप से अपलोड करें। बैठक में कलेक्टर ने अधिकारियों को स्वतंत्रता दिवस समारोह की तैयारियों, सुमंगल साइकिल अभियान, कार्यालयों के रोस्टर निरीक्षण तथा विभागीय योजनाओं के क्रियान्वयन के संबंध में निर्देश दिए।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक एवं मुद्रक राजेन्द्र तिवारी द्वारा एस आर के प्रिंटिंग प्रेस विवि रोड खुटेही रीवा से मुद्रित कर जीडीसी के सामने उत्तरी करौंदिया सीधी से प्रकाशित। संपादक-राजेन्द्र तिवारी, आर.एन.आई नं. 47589/88, डाक पंजीयन : MP/SDL/DN/-30/2015-17, दूरभाष : 09424315633,7389444833